

एस एस एस : इंडिया @ 75
भारतीय मत्स्यपालन में सफलता की 100 उत्कृष्ट कहानियां!



राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड

मत्स्यपालन विभाग
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय
भारत सरकार
राजेंद्रनगर, हैदराबाद-500 052



राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड
मत्स्यपालन विभाग
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय
भारत सरकार
स्तम्भ संख्या-235, पी.वी.एन.आर. एक्सप्रेस वे, डाक-एस.वी.पी.एन.पी.ए., हैदराबाद- 500 052

<http://nfdb.gov.in>

© 2022 राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद

हिन्दी अनुवाद: वी.संतोषी दीपिका और विष्णु भगवान
निष्पादन और डिज़ाइन: परियोजना प्रबंधन कंसल्टेंसी- ई.वाई.





डॉ. सी. सुवर्णा भा.व.से.
मुख्य कार्यपालक

Dr. C. Suvarna, IFS
Chief Executive



राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड
National Fisheries Development Board

मत्स्य पालन विभाग
Department of Fisheries

(मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय, भारत सरकार)

(Ministry of Fisheries, Animal Husbandry and Dairying, Govt. of India)

स्तम्भ संख्या - 235, पी.वी.एन.आर. एक्सप्रेस वे, डाक - एस.वी.पी. एन.पी.ए, हैदराबाद - 500 052

Pillar No. 235, PVNR Expressway, SVP NPA Post, Hyderabad-500 052

फोन/Phone No. 040-24015553, फैक्स/Fax No. 040-24015568

ईमेल/email: ce.nfdb-dadf@gov.in; वेबसाइट/website: nfdb.gov.in

प्रस्तावना

राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड (एन.एफ.डी.बी.) देश में मत्स्य उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है तथा एकीकृत एवं समग्र तरीके से मत्स्यपालन विकास गतिविधियों के साथ समन्वय करता है। इसने मछुआरों की आबादी के बीच विभिन्न आधुनिक और व्यवहार्य तकनीकों को बढ़ावा, समन्वित एवं वित्त पोषित किया है जैसे रीसर्क्युलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम (आर.ए.एस.) और बायोफ्लॉक, केज कल्चर और पेन कल्चर अर्थात् सीवीड (समुद्री शैवाल) की कृषि, गहन कृषि प्रणालियों को लोकप्रिय बनाना।

एन.एफ.डी.बी. नई और उन्नत प्रौद्योगिकियों के प्रसार को बढ़ावा दे रहा है और मछुआरों, मत्स्य पालकों, उद्यमियों आदि के बीच वित्तीय और बुनियादी ढांचा सहायता योजनाओं के बारे में जागरूकता प्रदान कर रहा है। बड़ी जनसंख्या के लिए इन पहलों के संवर्धन का विस्तार करने के लिए, एक मंच बनाने का विचार सामने आया जहां पूरे भारत में सफल मत्स्यपालन और जलकृषि प्रथाओं/तकनीकों को प्रस्तुत किया जा सके। यह देखकर बहुत खुशी हो रही है कि यह पहल “एस एस एस इंडिया @ 75: भारतीय मत्स्यपालन में सफलता की 100 उत्कृष्ट कहानियां” पुस्तक में साकार हुई है।

पुस्तक में विभिन्न तकनीकों का अभ्यास करने के सफल अनुभव मामलों को दर्शाया गया है कि कैसे मत्स्यपालन के क्षेत्र में अभिनव प्रथाओं ने मछुआरों और किसानों को उच्च उपज प्राप्त करने में सक्षम बनाया है। कुछ प्रथाओं ने गृहिणी महिलाओं को उद्यमी बनने, मूल्य वर्धित मत्स्य उत्पादों की तैयारी और बिक्री में समृद्धता से वंचित आदिवासी महिलाओं, बिचौलियों द्वारा शोषण को रोकने के लिए मछली किसान उत्पादक संगठन का गठन और विशेष रूप से आई.सी.ए.आर. संस्थानों, के.वी.के., गैर सरकारी संगठन आदि और प्रासंगिक संपर्क विवरण द्वारा संस्थागत हस्तक्षेपों द्वारा जल निकाय, मत्स्य संसाधनों, मछुआरों की आय और सामाजिक संरचना सहित पूरे क्षेत्र के समग्र विकास को उद्यमी बना दिया है। मुझे तहे दिल से उम्मीद है कि पुस्तक सभी के लिए भी एक महान संसाधन होगी जो इसमें उल्लिखित किसी भी सफल प्रथाओं को लेना और/या अपस्केल करना चाहता है।

एन.एफ.डी.बी. राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के मत्स्यपालन विभागों, आई.सी.ए.आर. संस्थानों, सी.एस.आई.आर. संस्थानों, एक्वा वन सेंटर और सूचीबद्ध सलाहकारों और गैर सरकारी संगठनों द्वारा प्रदान की गई सहायता और जानकारी एवं अपने कर्मचारियों तथा पी.एम.सी.-ई.वाई. द्वारा किए गए संग्रह और संकलन को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करता है।

सुवर्णा
15/11/20
(सी.सुवर्णा)



परशोत्तम रूपाला
PARSHOTTAM RUPALA



सत्यमेव जयते



आजादी का
अमृत महोत्सव

मंत्री
मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी
भारत सरकार

MINISTER
FISHERIES, ANIMAL HUSBANDRY & DAIRYING
GOVERNMENT OF INDIA

D.O. No. 1493 MIN(FAH&D)/2021-22

15 NOV 2022

व्यापक मीठा जल संसाधनों - 8,000 कि.मी. से अधिक की तटरेखा, 2 मिलियन वर्ग कि.मी. से अधिक के विशेष आर्थिक क्षेत्र (ई.ई.जेड.) के साथ मत्स्यपालन हमारे देश का एक प्रमुख बढ़ता क्षेत्र है। भारत विश्व में तीसरा सबसे बड़ा मत्स्य उत्पादक देश है, जिसका विश्व मत्स्य उत्पादन में योगदान 7.93% है और विश्व स्तर पर जलकृषि मत्स्य उत्पादक देशों में दूसरा सबसे बड़ा राष्ट्र है।

पिछले दशक के दौरान मत्स्यपालन क्षेत्र में अत्यधिक विकास हुआ है। नीली क्रांति (बी.आर.) योजना और विशेषीकृत प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (पी.एम.एम.एस.वाई.) के कार्यान्वयन ने महत्वपूर्ण आर्थिक विकास और समग्र मत्स्यपालन संवृद्धि के साथ मछुआरों के जीवन में शानदार बदलाव लाए हैं। पी.एम.एम.एस.वाई. औसत राष्ट्रीय जलकृषि उत्पादकता को 3 टन से बढ़ाकर 5 टन प्रति हेक्टेयर करने, निर्यात को दोगुना रु.1,00,000 करोड़ करने, मछुआरों और मत्स्य किसानों की आय को दोगुना करने आदि के महत्वाकांक्षी लक्ष्य के साथ शुरू की गई है। सतत और उत्पादक मत्स्यपालन तथा आर्थिक संवृद्धि को बढ़ाने के लिए जलकृषि, खाद्य और पोषण सुरक्षा में वृद्धि, आय में वृद्धि और आजीविका में सुधार, एवं हमारे पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करना समय की मांग है, जिस पर सरकार ध्यान केंद्रित कर रही है।

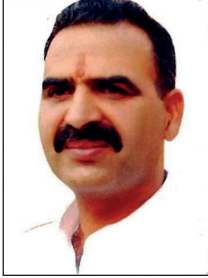
मुझे राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड (एन.एफ.डी.बी.) के प्रयासों के बारे में जानकर असीम प्रसन्नता हो रही है कि उन्होंने पिछले दशक में मत्स्यपालन क्षेत्र के महत्वपूर्ण परिणामों को विश्व मात्स्यिकी दिवस- 2022 के अवसर पर "एसएसएस इंडिया @ 75: भारतीय मत्स्यपालन में सफलता की 100 उत्कृष्ट कहानियां" नामक पुस्तक के माध्यम से रिकॉर्ड किया है। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक भारतीय मत्स्यपालन क्षेत्र में की गई पहलों और प्रगति के बारे में एक अंतर्दृष्टि प्रदान करेगी। एन.एफ.डी.बी. द्वारा भारत के सभी कोनों से तस्वीरों और सफलतापूर्ण कहानियों की संपूर्ण जानकारी से प्रकाशित पुस्तक को रचनात्मक प्रतिनिधित्व के साथ अच्छी तरह से तैयार किया गया है।

मैं भारत और विश्व भर में संभावित मछुआरों और उद्यमियों के लिए अधिक रुचि उत्पन्न करने के लिए एन.एफ.डी.बी. द्वारा इस पुस्तक के विमोचन के अवसर पर अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

(परशोत्तम रूपाला)



डॉ० संजीव कुमार बालियान
DR. SANJEEV KUMAR BALYAN



सत्यमेव जयते



प्रस्तावना

राज्य मंत्री
मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय
भारत सरकार

कृषि भवन, नई दिल्ली-110001

MINISTER OF STATE FOR FISHERIES,
ANIMAL HUSBANDRY & DAIRYING
GOVERNMENT OF INDIA

KRISHI BHAWAN, NEW DELHI-110001

O/o MoS(FAHD)/Camp:MZN

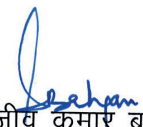
Dy. No. 1655

Date. 16/11/2022

मत्स्यपालन और जलीय कृषि भारत में खाद्य उत्पादन, पोषण सुरक्षा, रोजगार, आय और विदेशी मुद्रा का एक महत्वपूर्ण स्रोत है और इसमें असीम क्षमता हैं। सरकार की पहल से भारत में मत्स्यपालन क्षेत्र के विकास में अत्यधिक बदलाव देखा गया है। नीली क्रांति मिशन ने देश की आर्थिक समृद्धि को सुगम बनाया और व्यक्तिगत मछुआरों और मत्स्य किसानों ने खाद्य और पोषण सुरक्षा में योगदान दिया। हमारी सरकार ने प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (पी.एम. एम.एस.वाई.) योजना शुरू की, जो मत्स्य उत्पादकता, उत्पादन, गुणवत्ता, फसल के बाद के बुनियादी ढांचे, प्रौद्योगिकी और विपणन के मत्स्यपालन मूल्य श्रृंखला में महत्वपूर्ण अंतराल को दूर करने के लिए एक विशेष मंच है। इसका उद्देश्य मूल्य श्रृंखलाओं को मजबूत और आधुनिक बनाना, मत्स्यपालन प्रबंधन ढांचा स्थापित करना और मत्स्य किसानों और मछुआरों के सामाजिक आर्थिक कल्याण को सुनिश्चित करते हुए पता लगाने की क्षमता को बढ़ाना है। वर्ष 2011-12 से 2020-21 तक हमारे मत्स्य और मत्स्य उत्पादों का निर्यात मूल्य के रूप में रु. 16,597.23 करोड़ से बढ़कर रु. 43,720.98 करोड़ और मात्रा में 8,62,021 से बढ़कर 11,49,510 मीट्रिक टन हो गया है। अब घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में गुणवत्ता वाली मछली की स्थिर आपूर्ति सुनिश्चित करने पर जोर दिया जाना चाहिए। यह बढ़े हुए जलकृषि उत्पादन और एक सुदृढ़ आपूर्ति श्रृंखला के माध्यम से प्राप्त किया जाएगा।

अपनी स्थापना से, राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड (एन.एफ.डी.बी.) ने विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के लिए अनुकूलकृषि-आधारित कैप्चर मत्स्यपालन, गहन जलकृषि और ज्ञान-आधारित कृषि के माध्यम से मत्स्यपालन क्षेत्र के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नीली क्रांति और पी.एम.एम.एस.वाई. की सफलता का अनावरण करने के साथ-साथ सफलता प्राप्त करने के लिए अच्छी प्रथाओं और प्रौद्योगिकियों को साझा करने के उद्देश्य से एन.एफ.डी.बी. द्वारा मात्स्यिकी क्षेत्र में प्राप्त की गई उपलब्धियों को अच्छी तरह से प्रलेखित किया गया है। देश भर में मात्स्यिकी क्षेत्र में सफल जलकृषि और विपणन प्रथाओं के प्रसार में एन.एफ.डी.बी. की सक्रिय भागीदारी प्रशंसनीय है।

मुझे विश्व मात्स्यिकी दिवस 2022 के उपलक्ष्य में एन.एफ.डी.बी. द्वारा लाई गई "एसएसएस इंडिया/75 य भारतीय मत्स्यपालन में सफलता की 100 उत्कृष्ट कहानियां" पुस्तक का अनावरण करते हुए गर्व महसूस हो रहा है। मैं इस अवसर पर एन.एफ.डी.बी. को बधाई देता हूं कि उन्होंने हमारे राष्ट्र के निर्माण के लिए मत्स्यपालन क्षेत्र के लाभ के लिए इस पुस्तक को प्रकाशित करने में ईमानदारी से प्रयास किया है।


(डॉ० संजीव कुमार बालियान)

Office: Krishi Bhawan, New Delhi-110001 • Tel.: 011-23380378, 011-23380379 (Fax)

कार्यालय: कृषि भवन, नई दिल्ली-110001 • दूरभाष: 011-23380378, 011-23380379 (फैक्स)



डॉ. एल. मुरुगन
Dr. L. MURUGAN



75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

राज्य मंत्री
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय और
मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय
भारत सरकार

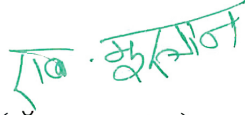
MINISTER OF STATE FOR
INFORMATION & BROADCASTING AND
FISHERIES, ANIMAL HUSBANDRY AND DAIRYING
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

भारतीय मत्स्यपालन क्षेत्र ने पिछले आठ वर्षों में परिवर्तनकारी बदलाव देखे हैं। प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में नीली क्रांति, मत्स्यपालन और जलकृषि अवसंरचना विकास निधि, प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना और महत्वपूर्ण रूप से, मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी के लिए एक अलग मंत्रालय का गठन, आदि प्रयासों से मत्स्यपालन क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस क्षेत्र में अभूतपूर्व निवेश (रु.32000 करोड़ से अधिक) आया, तथा इसके साथ ही हमारे लाखों मछुआरे भाइयों और बहनों में उद्यमिता की भावना को भी बढ़ावा मिला। उद्यमिता

इससे मत्स्यपालन क्षेत्र में खासकर के मत्स्यपालन, भंडारण, परिवहन, प्रसंस्करण और विपणन के क्षेत्र में उद्यमों की वृद्धि हुई है। मैंने अवंतीपुरा से नेल्लोर तक, और शिलांग से उडुपी तक, हमारे युवा पुरुष और महिला मत्स्य उद्यमियों में जोश और उत्साह देखा है। उन्होंने अपने उपक्रमों को सफलतापूर्वक स्थापित करने में प्रभावशाली कदम उठाए हैं। लगातार बढ़ रहा मत्स्य उत्पादन एवं निर्यात इस क्षेत्र में भारत की आत्मनिर्भरता बढ़ा रहा है। ये सफलता की कहानियां देश के कोने-कोने तक पहुंचनी चाहिये और सभी के लिए आसानी से उपलब्ध होनी चाहिए।

मुझे खुशी है कि इस विषय में राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड "एसएसएस इंडिया @ 75: भारतीय मत्स्यपालन में सफलता की 100 उत्कृष्ट कहानियां" पुस्तक लेकर आया है। यह पुस्तक प्रत्येक सफल उद्यम पर एक नजर डालती है। यह उन मूल लोकाचार और पहलों को उजागर करती है, जिन्होंने उन्हें सफल बनाया है। मुझे विश्वास है कि, यह पुस्तक हमारे नवउद्यमियों की मदद करेगी और उन्हें अपने चुने हुए क्षेत्र में सफलता के मार्ग पर चलने के लिए मार्गदर्शन करेगी।


(डॉ. एल. मुरुगन)

कमरा सं. : 119, 'ए' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110 001
दूरभाष : +91-11-23381193, 23381194, ई-मेल : mos-moib@gov.in
Room No. 119, 'A' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi-110 001
Tel. : +91-11-23381193. 23381194. E-mail : mos-moib@gov.in



जतीन्द्र नाथ स्वेन, भा.प्र.से.
सचिव

Jatindra Nath Swain, IAS
Secretary



मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय
मत्स्यपालन विभाग
कृषि भवन, नई दिल्ली-110001
Ministry of Fisheries,
Animal Husbandry & Dairying
Department of Fisheries
Krishi Bhawan, New Delhi-110001

प्रस्तावना

भारतीय मत्स्यपालन क्षेत्र ने स्वतंत्रता के बाद से एक लंबा सफर तय किया है, 1950-51 में उत्पादन 0.75 मिलियन टन से बढ़कर 2020-21 में 14.7 मिलियन टन हो गया है। यह सब हमारे मछुआरों, मत्स्यपालकों और विस्तार एजेंटों और मत्स्य वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों के कारण संभव हुआ है। इस क्षेत्र की संभावना को स्वीकार करते हुए, भारत सरकार ने समय-समय पर कई पहल की हैं, जिसमें मूल्य श्रृंखला के महत्वपूर्ण बिंदुओं पर उपयुक्त हस्तक्षेपों के माध्यम से व्यवहार्य और सतत मत्स्यपालन और जलकृषि के विकास की सुविधा के लिए पी.एम.एम.एस.वाई. की वर्तमान प्रमुख योजना शामिल है।

पी.एम.एम.एस.वाई.ने 2024-25 तक 22 मिलियन टन मत्स्य उत्पादन और 55 लाख जनशक्ति के अतिरिक्त रोजगार सृजन का लक्ष्य रखा है। हालांकि यह तभी संभव है जब उत्पादन और मूल्य श्रृंखला में निरंतर नवोन्मेषों की एक श्रृंखला के माध्यम से उत्पादकता बढ़े। नवोन्मेष दो अलग-अलग तरीकों से होते हैं-प्रयोगशालाओं में उच्च तकनीक अनुसंधान और विकास के माध्यम से और क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों द्वारा वृद्धिशील सुधार के माध्यम से। वर्षों से देश ने आई.सी.ए.आर. संस्थानों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के प्रयासों के माध्यम से नई प्रौद्योगिकियों के निर्माण में महत्वपूर्ण प्रगति देखी है। ये प्रगतियाँ क्षेत्र में सफल परियोजनाओं में परिपूर्ण हुई हैं। व्यापक दर्शकों के सामने उनकी स्वीकृति से पूर्व ऐसे मामलों को सफलतापूर्वक अपनाने तथा अनुकूलन पर डालना महत्वपूर्ण है।

यह जानकर खुशी हो रही है कि एन.एफ.डी.बी. ने इस संबंध में "एस एस एस इंडिया @ 75; भारतीय मत्स्यपालन में सफलता की 100 उत्कृष्ट कहानियाँ" पुस्तक की संकल्पना करके पहल की है। पुस्तक में देशभर में मत्स्यपालन और जलकृषि में क्षेत्र कार्यकर्ताओं द्वारा अपनाई गई सफलतापूर्वक तकनीकों और प्रथाओं को उत्तम वर्ग से बताया गया है। मैं इस पुस्तक को प्रकाशित करने में एन.एफ.डी.बी. द्वारा किए गए प्रयासों की तहे दिल से सराहना करता हूँ और मुझे यकीन है कि यह भारत के कोने-कोने में रहने वाले मछुआरों और मत्स्य किसानों के बीच इन सर्वोत्तम प्रथाओं को फैलाने की प्रक्रिया और उनकी उत्पादकता और आय में सुधार करने में उनकी मदद करेगा।

ज.न.स्वेन

(जतीन्द्र नाथ स्वेन)

अंतर्वस्तु

क्र.सं.	लाभार्थी का नाम और गतिविधि	पृष्ठ संख्या
1.	महिला नाव मालिक द्वारा मछली कियोस्क के लिए अपने क्षितिज का विस्तार दिलेश्वरी, फिश कियोस्क, अंडमान और निकोबार द्वीप	1
2.	आई.सी.ए.आर.- सी.आई.ए.आर.आई. द्वारा दक्षिण अंडमान में एक मौन जलकृषि जया लक्ष्मी, आई.सी.ए.आर.- सी.आई.ए.आर.आई., मत्स्य फीड उत्पादन, अंडमान और निकोबार द्वीप	2
3.	उद्यमी से समाज सुधार के मशाल वाहक एम.एस.धर्म लिंगम, आइस प्लांट, अंडमान और निकोबार द्वीप	3
4.	वन्नामी पालें और आय बढ़ाएं झींगा कृषि, अंडमान और निकोबार द्वीप	4
5.	कौशल विकास से समृद्धि कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम, सी.आई.एफ.एन.ई.टी, अंडमान और निकोबार द्वीप	5
6.	मत्स्य किसान उत्पादक कंपनी: एक लाभदायक कंपनी जी. भूपेश रेड्डी, मछली और झींगे का व्यापार, आंध्र प्रदेश	6
7.	हैचरी- एक आकर्षक व्यवसाय एम. वेंकटरमण, समुद्री मत्स्य हैचरी, आंध्र प्रदेश	7
8.	केज की कृषि से विश्वास: आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई. का प्रभाव नागराजू, आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई., तटीय केज कृषि, आंध्र प्रदेश	8
9.	झींगा शौचालय से स्मार्ट उपज नालिबोइना नागराजू, झींगा कृषि, आंध्र प्रदेश	9
10.	मत्स्यपालन से ग्रामीण महिलाओं को उद्यमी बनने के लिए सशक्त बनाना नीलम्मातल्ली स्वयं सहायता समूह, जलजीविका, केज कल्चर, आंध्र प्रदेश	10
11.	आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई. की पोम्पानो की कृषि रियल्टर को मत्स्य किसान में बदलना यू.टी. कृष्ण प्रसाद, आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई., तालाब मत्स्य कृषि, आंध्र प्रदेश	11
12.	वासंती प्रीमियम झींगा फीड के लिए एक विश्वसनीय ब्रांड विजय वर्मा और कृष्णम राजू, झींगा फीड मिल, आंध्र प्रदेश	12
13.	मॉडल रेसवे - रेनबो फार्म दोरजी खांडू ख्रीमे, रेसवे कल्चर, अरुणाचल प्रदेश	13
14.	कृषक से जलकृषक बन गये नैलेक्ता चौहाई, टेबल फिश उत्पादन, अरुणाचल प्रदेश 15	14
15.	गुणवत्ता बीज: गुणवत्ता आय अमल मेधी, मत्स्यपालन, असम	15
16.	बहुआयामी जलकृषि विकास में सफल उद्यमी बिनंदा बारो, एकीकृत मत्स्यपालन और मत्स्य बीज उत्पादन, असम	16
17.	उद्यमिता द्वारा सशक्तिकरण चुमी बोरदोलोई, एकीकृत मत्स्यपालन और प्रसंस्करण, असम	17
18.	कला शिक्षक मत्स्य किसान में बदलना गार्गी गीतोम बोरा, एकीकृत मत्स्यपालन, असम	18
19.	कॉलेज से निकले साहसी उद्यमी नितुल चंद्र दास, मत्स्य बीज उत्पादन, एकीकृत मत्स्य पालन, समग्र मत्स्य कृषि, असम	19
20.	पारंपरिक मत्स्यपालन से आधुनिक मत्स्यपालन रंजीता सैकिया डेका, रीसर्कुलैटरी एक्वाकल्चर सिस्टम, असम	20
21.	मत्स्यपालन: एक आकर्षक व्यवसाय उत्तम मंडल, बीज उत्पादन और ग्री-आउट कल्चर, असम	21
22.	मत्स्य प्रसंस्करण से समृद्धि स्वयं सहायता समूह, सी.आई.एफ.ई., मूल्य वर्धित उत्पाद, असम	22
23.	बाढ़ से मत्स्यपालन द्वारा उत्कृष्ट आय चंदन कुमार, मत्स्य पालन, बिहार	23
24.	कृषि आधारित मात्स्यिकी के लिए सहकारिता सहकारी समिति, सी.आई.एफ.आर.आई., कृषि आधारित मत्स्यपालन और बीज उत्पादन, बिहार	24
25.	सरकारी शिक्षक का प्रगतिशील मत्स्य कृषक बनना राजेश पासवान, पॉलीकल्चर, बिहार	25

क्र.सं.	लाभार्थी का नाम और गतिविधि	पृष्ठ संख्या
26.	सिरसा मौन में वैज्ञानिक हस्तक्षेप सहकारी, सी.आई.एफ.आर.आई., कृषि आधारित मत्स्यपालन और बीज उत्पादन, बिहार	26
27.	मौन का परिवर्तन सहकारी का परिवर्तन, सी.आई.एफ.आर.आई., कृषि आधारित मत्स्यपालन और बीज उत्पादन, बिहार	27
28.	मत्स्य उत्पादन बढ़ाने में शरणार्थी सुकदेव मंडल, बीज उत्पादन, मत्स्य बीज, मत्स्य फीड और मछली और मछली तालाब संबंधित उत्पादों की बिक्री, छत्तीसगढ़	28
29.	अग्रवाल जलकृषि की ओर संजय अग्रवाल, सी.आई.एफ.ए.एक्स. मत्स्य फीड का उत्पादन और वितरण, छत्तीसगढ़	29
30.	पंगेशियस पालें और भोजन का आनंद लें! वंदना चुरेंद्र, बायोप्लोक कृषि, जीवित मछलियों और मछली खाद्य उत्पादों की खुदरा बिक्री, छत्तीसगढ़	30
31.	पावर प्लांट से मत्स्यपालन में सशक्त प्रौद्योगिकी की यात्रा सिद्धार्थ मेहता, आर.ए.एस./बायोप्लोक/कोल्ड स्टोरेज/केज कल्चर निर्माता और निर्यातक, दिल्ली	31
32.	बायोप्लोक: लाभदायक व्यापार जहीर करमाली, बायोप्लोक, गोवा	32
33.	समृद्धि: तालाब से थाली तक मनोज मोहनलाल शर्मा, झींगा पालन, गुजरात	33
34.	खुले में सोचना, एक गृहिणी द्वारा दूसरों के लिए रोजगार सृजन कुलदीप कौर, झींगा पालन, हरियाणा	34
35.	मत्स्यपालन एक शानदार पेशा है अमृत लाल, मत्स्यपालन, हिमाचल प्रदेश	35
36.	बायोप्लोक - भरपूर रिटर्न रेशमा देवी, बायोप्लोक, हिमाचल प्रदेश	36
37.	शिक्षक से ट्राउट किसान हमीदुल्लाह खांडे, ट्राउट पालन इकाई और हैचरी, जम्मू और कश्मीर	37
38.	आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी. छात्रों को उद्यमी बनाता है! रिफत अमीन, सैयद फैज कादरी, सौरव पी. सतीश, आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी., रेनबो ट्राउट की आपूर्ति, जम्मू और कश्मीर	38
39.	तालाब कृषि से केज कृषक जोधन प्रसाद, केज कल्चर, झारखंड	39
40.	मत्स्यपालन में एक सफलता की यात्रा नवकिशर गोप, केज कल्चर, झारखंड	40
41.	एक साथ रहना: नदी जलकृषि पर रिटर्न गुड्डू बैठा, केज/पेन कल्चर, झारखंड	41
42.	एक अभिनव कृषि के लिए इंटीरियर डिजाइनर की आंतरिक इच्छा एन. चेतन राज, मत्स्य और झींगा कृषि, कर्नाटक	42
43.	एक्का कल्चरिस्ट में बदलता है आर्किटेक्ट सौम्या सत्यनारायण, रीसर्क्युलेटरी एक्काकल्चर सिस्टम, कर्नाटक	43
44.	फैशन डिजाइनर से मत्स्य किसान की कहानी सौभाग्य और आनंद, मत्स्यपालन, कर्नाटक	44
45.	सीवीड (समुद्री शैवाल) आधारित जैव-सक्रिय और न्यूट्रास्युटिकल्स का व्यावसायीकरण बॉबी किझाकेथारा, आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी., समुद्री खरपतवार आधारित उत्पादों का निर्माण, केरल	45
46.	एक युवा उद्यमी की कहानी: फू फूड्स मोहम्मद फवास, आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी., ग्रीन सीप उत्पादों का निर्माण, केरल	46
47.	सीवीड (समुद्री शैवाल) कुकीज़ का स्टार्ट-अप नजीब बिन हनीफ, आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी., अलाल और सीवीड(समुद्री शैवाल) आधारित खाद्य और पेय पदार्थ, केरल	47
48.	सजावटी मत्स्यपालन में निर्माता कंपनी सहाद्री एक्वेरियम मत्स्य उत्पादक कंपनी, विपणन सजावटी मछली, केरल	48
49.	सोलार हाईब्रिड ड्रायर: आमदनी का जरिया सुनीर वी. ए., आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी., सूखे समुद्री भोजन का निर्माण और विपणन, केरल	49
50.	शिक्षक से निर्यातक बनना वी.बी. हव्वा, कोल्ड स्टोरेज, मत्स्य निर्यात और मूल्य वर्धित उत्पाद विनिर्माण, लक्षद्वीप	50
51.	गृहिणी से एक्काफार्मर अमीना बेगम,, रेसवे कल्चर, लद्दाख	51

क्र.सं.	लाभार्थी का नाम और गतिविधि	पृष्ठ संख्या
52.	प्रतिभा के कारण ट्राउट कृषि की ओर इलियास अहमद, रेसवे कल्चर, लद्दाख	52
53.	फल विक्रेता से फलदायी हैचरी मालिक कैलाश चंद्र वर्मा, मत्स्य बीज, फीड और सजावटी मछली का उत्पादन, मध्य प्रदेश	53
54.	उत्सुक कृषक से एक अद्भुत मत्स्य किसान कमला अजबराव कुरवाडे, ग्रो-आउट तालाब कृषि, महाराष्ट्र	54
55.	ब्यूटीशियन से ओर्नामेंटल किसान पल्लवी दीपक पानझाडे, मछली और एक्वेरियम बेचना, महाराष्ट्र	55
56.	मूल्य संवर्द्धन: मूल्य जोड़ना रमेश नारायणराव पवार, बायोफ्लॉक, महाराष्ट्र	56
57.	कांटेक्टर से केज एक्काकल्चरिस्ट बनना संगिनी सीताराम घायल केज कल्चर, महाराष्ट्र	57
58.	मत्स्य सखी का परामर्शदाता में बदलना स्वयं सहायता समूह, जलजीविका, महाराष्ट्र	58
59.	मूल्य संवर्द्धन: मूल्य जोड़ना जनजातीय सहकारी, सी.आई.एफ.ई., मूल्य वर्धित उत्पाद, महाराष्ट्र	59
60.	लाभदायक मत्स्यपालन के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण कीफा अखम मरिंग, ग्रो-आउट तालाब की कृषि, मणिपुर	60
61.	दिल की समस्याओं की चिकित्सा के लिए मछली की कृषि जेवियर नेंगखनलम, मत्स्यपालन, मणिपुर	61
62.	धनेश्वर दृढ़ संकल्प के परिणामस्वरूप अच्छी आजीविका हुई धनेश्वर राभा, मत्स्य कृषि, मेघालय	62
63.	बीज उत्पादन और कृषि से परिवार की सहायता प्रिती अरेंघ, मत्स्यपालन और बीज उत्पादन, मेघालय	63
64.	रिलियन ने विश्वसनीय मत्स्यपालन को चुना रिलियन नोंगलांग, मत्स्य कृषि, मेघालय	64
65.	शौक को पेशे में बदलना एफ. लालडिंगकियाना, तालाब में मत्स्य कृषि, मिजोरम	65
66.	एकीकृत कृषि से मॉडल मत्स्यपालन तक का सफर इम्नातोशी, ग्रो-आउट उत्पादन, नागालैंड	66
67.	एकीकृत कृषि लाभकारी कृषि अर्नपूर्णा नायक, मत्स्यपालन, बागवानी और मुर्गी पालन, ओडिशा	67
68.	गतिविधियों का एकीकरण - उद्यमी मॉडल का उदाहरण झीना परिदा, हैचरी और एक्का वन सेंटर, ओडिशा	68
69.	निर्बाध व्यवसाय: बीज व्यवसाय सपन कुमार, मत्स्य हैचरी, दवाएं, अन्य जलकृषि आदानों आदि का व्यापार, ओडिशा	69
70.	महिला उद्यमी मात्स्यिकी में मूल्य शृंखला को पुनः आकार देते हुए अनीता मुथुवेल, समुद्री खाद्य संसाधक और आपूर्तिकर्ता, पुडुचेरी	70
71.	झींगा कृषि के विकल्प के रूप में अवतार सिंह, झींगा पालन, पंजाब	71
72.	जनजातीय मछुआरों के लिए आजीविका मॉडल मत्स्य सहकारी समिति, मत्स्यपालन, राजस्थान	72
73.	प्रगतिशील पर्ल किसान विनोद कुमावत, पर्ल कृषि, राजस्थान	73
74.	ट्राउट कृषि ने बदल दी आजीविका दा नोरबू शेरपा, रेसवे कृषि, सिक्किम	74
75.	रेनबो ट्राउट - जीवन में रंग भरे काल बहादुर, मत्स्य हैचरी और रेसवे कल्चर, सिक्किम	75
76.	ट्राउट पालन के माध्यम से जीवन को नवीकरण करना सुभाष राय, मत्स्यपालन और बीज उत्पादन, सिक्किम	76
77.	सी बास द्वारा लाया गया समुद्री परिवर्तन : आई.सी.ए.आर.- सी.आई.बी.ए. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम एस.एच.जी., डॉ. मुथुलक्षी रेड्डी एस.एच.जी., अन्नाई थेरेसा एस.एच.जी., आई.सी.ए.आर.-सी.आई.बी.ए., नर्सरी पालन और ग्रो-आउट कृषि, तमिलनाडु	77

क्र.सं.	लाभार्थी का नाम और गतिविधि	पृष्ठ संख्या
78.	सीवीड (समुद्री शैवाल): सतत आय का स्रोत जया लक्ष्मी, जेय, थंगम, कलेश्वरी, सीवीड (समुद्री शैवाल) की कृषि, तमिलनाडु	78
79.	अपशिष्ट से धन: स्वस्थ व्यवसाय केनित राज, मछली अपशिष्ट प्रसंस्करण, तमिलनाडु	79
80.	केज कल्चर - मछुआरों के लिए एक विकल्प थ.एम.रायप्पन और थ.एम.मुथैया, ओपन सी केज कल्चर, तमिलनाडु	80
81.	स्टेला की तारकीय सीवीड(समुद्री शैवाल) कृषि स्टेला मैरी, सीवीड(समुद्री शैवाल) कृषि, तमिलनाडु	81
82.	स्वयं सहायता समूह से आत्मनिर्भर महिलाएं मत्स्य मित्र समूह, मूल्य वर्धित उत्पाद, तेलंगाना	82
83.	केज कल्चर में सहकारी का सामूहिक प्रयास मछुआरा सहकारी समिति, केज कल्चर, तेलंगाना	83
84.	प्रौद्योगिकी के एका इंजीनियरिंग के लिए सिविल इंजीनियर वाई. शांति श्री, रीसर्कुलेटरी एकाकल्चर सिस्टम, तेलंगाना	84
85.	आकर्षक मत्स्यपालन: कैटफिशिंग अजीत दास, बीज उत्पादन और विपणन, लिपुरा	85
86.	छोटे मत्स्य किसान से मत्स्य ब्रीडर मधुसूदन भट्टाचार्य, मत्स्य बीज उत्पादन, लिपुरा	86
87.	जूनून से प्रगतिशील किसान बनना राजकुमार डे, बीज उत्पादन, लिपुरा	87
88.	आदिवासी किसान से सफल उद्यमी धर्मेन्द्र, आई.सी.ए.आर.-एन.बी.एफ.जी.आर., बीज उत्पादन और विपणन, उत्तर प्रदेश	88
89.	बीजों की उन्नत किस्म से बेहतर आय गौतम चौधरी, ग्रो-आउट और बीज पालन, उत्तर प्रदेश	89
90.	एक रियल्टर से आर.ए.एस. का उपयोग करके अच्छी आय मो. आसिफ सिद्दीकी, मत्स्यपालन, उत्तर प्रदेश	90
91.	निरंतर आजीविका की ओर अग्रणी पीयूषिका यादव, ग्रो-आउट और बीज पालन, उत्तर प्रदेश	91
92.	एकीकृत कृषि से जीवन में सुधार राजनीश कुमार, एकीकृत एका कल्चर बीज बैंक एका पार्क और फिश ऑन व्हील, उत्तर प्रदेश	92
93.	ट्राउट कृषि से गांव विकास की ओर जयपाल सिंह नेगी, रेसवे कृषि, उत्तराखंड	93
94.	मछलियों के लिए अनमोल फीड अमित सरावगी, पशुधन फीड निर्माण, पश्चिम बंगाल	94
95.	छोटी छलांग से महत्वपूर्ण लाभ रमन कपाट, मत्स्यपालन, पश्चिम बंगाल	95
96.	टिशू कल्चर तकनीक के माध्यम से एल्बोर्न सी मांस का मास सीडलिंग उत्पादन सी.एस.आई.आर.- सी.एस.एम.सी.आर.आई., समुद्री शैवाल बीज उत्पादन और ऊतक संवर्धन प्रयोगशाला	96
97.	मत्स्य सेतु: एकाफार्मर्स के लिए डिजिटल इको-सिस्टम आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.ए., मत्स्य सेतु डिजिटल प्लेटफॉर्म	97
98.	समुद्री केज कल्चर द्वारा मैरीकल्चर क्रांति आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई., समुद्री केज कृषि	98
99.	एन.एफ.डी.बी. ने समुद्री फिन फिश ब्रूड बैंकों की स्थापना के लिए आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई. के साथ हाथ मिलाया आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई., ब्रूड बैंक स्थापना	99
100.	अंतःप्रजनन को रोकने के लिए मछली के शुक्राणु क्रायोप्रिजर्वेशन तकनीक आई.सी.ए.आर.-एन.बी.एफ.जी.आर., फिश मिल्ट का क्रायोप्रिजर्वेशन	100



महिला नाव मालिक द्वारा मछली कियोस्क के लिए अपने क्षितिज का विस्तार



नाम	दिलेश्वरी
जिला	दक्षिण अंडमान
केंद्र शासित प्रदेश	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
शैक्षिक योग्यता	कक्षा 8
मोबाइल सं.	9434278624
स्थापना का वर्ष	2022
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	मछली कियोस्क
उत्पादन क्षमता	प्रति वर्ष 45 टन
रोजगार सृजित	5

श्रीमती दिलेश्वरी दक्षिण अंडमान की मछली पकड़ने वाली नाव की मालकिन हैं। उसकी नावें मत्स्यपालन विभाग (डी.ओ.एफ.), अंडमान और निकोबार (ए एंड एन) प्रशासन के साथ पंजीकृत हैं। बाजार की गतिशीलता के कारण, वह कई बार अपनी पूरी फसल नहीं बेच पाती थी। इस समस्या को हल करने के लिए, उन्होंने भंडारण और बिक्री के लिए एक मछली कियोस्क सुविधा स्थापित करने और अन्य बातों के साथ-साथ स्वरोजगार सृजित करने का फैसला किया। डी.ओ.एफ., ए एंड एन प्रशासन ने इसके लिए “एक्वेरियम / सजावटी मछली के कियोस्क सहित मछली कियोस्क का निर्माण” हेतु पी.एम.एम.एस.वाई. योजना के तहत वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए उसका समर्थन किया।

उन्होंने बथु बस्ती, पोर्ट ब्लेयर में ₹ 12.17 लाख की कुल परियोजना के साथ कियोस्क की स्थापना की। इसमें से ₹ 6 लाख पी.एम.एम.एस.वाई. के तहत अनुदान के रूप में लिए गए और ₹ 4 लाख उनका अपना योगदान था।

इस सुविधा की स्थापना से पहले उनकी औसत मासिक आय मात्र ₹ 15,000 थी। इस सुविधा के साथ मासिक आय 600% बढ़कर लगभग ₹ 1 लाख होगी। यह सुविधा एक महिला सहित 5 स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार पैदा करने में सक्षम है। वे भविष्य में अपनी सुविधा का विस्तार करने और रोजगार के अधिक अवसर सृजन करने की योजना बना रही हैं।





आई.सी.ए.आर.- सी.आई.ए.आर.आई. द्वारा दक्षिण अंडमान में एक मौन जलकृषि



अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में जलकृषि मीठे पानी की मछलियों की भारी मांग के लिए जानी जाती है क्योंकि बसने वाली आबादी उन्हें पसंद करती है। इस प्रकार, द्वीप के किसानों के लिए मीठे पानी के जलकृषि में बड़ी क्षमता है। तथापि, जलकृषि में प्रचालनात्मक लागत का लगभग 60% फीड और इसकी प्रबंधन पद्धतियों पर खर्च किया जाता है। इस वजह से और पूरक भोजन पर ज्ञान की कमी के कारण, किसान “व्यापक” जलकृषि का पालन करते हैं और बदले में मुख्य भूमि की तुलना में कम मछली उत्पादन प्राप्त करते हैं। इस समस्या के समाधान के लिए आई.सी.ए.आर.-सी.आई.ए.आर.आई., पोर्ट ब्लेयर ने ‘द्वीप कार्प उत्पादक फीड’ तैयार किया और कृषि क्षेत्र संवर्धन निधि के तहत नाबार्ड की वित्तीय सहायता से 80 से 100 किलोग्राम प्रति घंटे की उत्पादन क्षमता की एक पायलट स्केल फिश फीड मिल की स्थापना की। द्वीप जलकृषि के लिए मत्स्य फीड उत्पादन में स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए सुविधा को एक इनक्यूबेशन सुविधा के रूप में बढ़ाया गया है।

मैसर्स मेयर नेचर से श्रीमती जया लक्ष्मी, दक्षिण अंडमान उन लोगों में से एक थीं, जिन्होंने इस सुविधा का उपयोग किया था। गरचरमा में उनकी फार्म इकाई में मीठे पानी का एक्वा फार्म, पोल्ट्री फार्म, सब्जी की खेती, पौधों की नर्सरी, जैविक खाद उत्पादन आदि और इसका विपणन शामिल है। उसने ‘द्वीप कार्प ग्रोवर फीड’ के साथ अपने तालाबों में मछली को खिलाना शुरू कर दिया। अपनी इकाई में मछली के विकास प्रदर्शन से हुई वृद्धि से प्रभावित होकर, वह मत्स्य फीड उत्पादन में उद्यम करती है। आई.सी.ए.आर.-सी.आई.ए.आर.आई. ने मैसर्स मेयर नेचर के साथ ‘द्वीप कार्प ग्रोवर फीड’ प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण और 3 महीने के लिए इनक्यूबेशन सुविधा का विस्तार करने के लिए फरवरी, 2022 में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इनक्यूबेशन की अवधि के दौरान आई.सी.ए.आर.-सी.आई.ए.आर.आई. द्वारा श्रीमती लक्ष्मी और उनकी टीम को फीड उत्पादन के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया था। सुविधा में, टीम ने 1,025 किलोग्राम फीड का उत्पादन किया और इसके विपणन से ₹ 51,250 का राजस्व अर्जित किया।

टीम अब गरचरमा में अपनी इकाई में अपनी मत्स्य फीड मिल स्थापित करके मत्स्य फीड उत्पादन का विस्तार करने और द्वीप के युवाओं के लिए आजीविका और रोजगार के अवसरों में सुधार करने की योजना बना रही है।

हस्तक्षेप	आई.सी.ए.आर.- सी.आई.ए.आर.आई.
लाभार्थी	जया लक्ष्मी
जिला	दक्षिण अंडमान
राज्य	अंडमान और निकोबार द्वीप
शैक्षिक योग्यता और गुणवत्ता	उच्चतर माध्यमिक
श्रेणी	सामान्य
व्यवसाय	सरकारी सेवा (सेवानिवृत्त)
मोबाइल सं.	9476045005
व्यावसायिक गतिविधि	मत्स्य फीड उत्पादन
स्थापना का वर्ष	2022
पद	मालिक
इकाई का नाम	मैसर्स मेयर नेचर
फीड उत्पादन (3 महीने)	1,025 किलो
वार्षिक कारोबार (3 महीने)	₹ 51,250
रोजगार सृजित	4





उद्यमी से समाज सुधार के मशाल वाहक



नाम	एम.एस.धर्म लिंगम
जिला	दक्षिण अंडमान
केंद्र शासित प्रदेश	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
शैक्षिक योग्यता	कक्षा 8
व्यवसाय	मछली पकड़ने का जहाज और बर्फ संयंत्र मालिक
मोबाइल सं.	9434288201
स्थापना का वर्ष	2021-22
पद	मालिक
फर्म का नाम	मैसर्स डी.एस.एन. आइस प्लांट
व्यावसायिक गतिविधि	आइस प्लांट
वार्षिक उत्पादन	6,480 टन
वार्षिक कारोबार	₹ 51.84 लाख
रोजगार सृजित	12

श्री एम.एस.धर्म लिंगम एक उद्यमी हैं। वह 8 टन की क्षमता की आइस प्लांट इकाई चलाते हैं। साथ ही उनके पास मत्स्यपालन विभाग (डी.ओ.एफ.), अंडमान और निकोबार (अंडमान और निकोबार) प्रशासन के साथ पंजीकृत दो मशीनीकृत मछली पकड़ने के जलयान हैं। द्वीप में मछली पकड़ने के जलयानों की संख्या में वृद्धि होने के कारण, द्वीप में मछली पकड़ने में वृद्धि हुई और बदले में बर्फ की मांग भी बढ़ी। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए, श्री धर्म लिंगम एक और बड़ी क्षमता वाले आइस प्लांट का निर्माण करना चाहते थे।

डी.ओ.एफ., अंडमान और निकोबार प्रशासन के समर्थन से, उन्होंने पी.एम.एम.एस.वाई. योजना के तहत “आइस प्लांट के निर्माण” के लिए आवेदन किया। वित्त वर्ष 2021-22 में इसे मंजूरी मिलने के बाद उन्होंने पोर्ट ब्लेयर के डुंडस प्वाइंट पर 18 टन क्षमता की आइस प्लांट यूनिट का निर्माण किया। यह सुविधा 300 वर्ग मीटर क्षेत्र में बनाई गई थी। कुल परियोजना लागत ₹ 43 लाख थी। उन्हें पी.एम.एम.एस.वाई. के तहत अनुदान के रूप में ₹ 16 लाख प्राप्त हुए। बैंक ऋण के साथ उनका अपना योगदान ₹ 27 लाख था। उन्होंने बर्फ संयंत्र से समुद्र के किनारे तक वापस प्रक्रिया को आसान बनाने और टर्नअराउंड समय को कम करने के लिए एक ट्रक सेवा सुविधा की भी व्यवस्था की।

पहले से स्थापित बर्फ संयंत्र के साथ श्री धर्म लिंगम की आय ₹ 32,000 प्रति माह थी, लेकिन पी.एम.एम.एस.वाई. के तहत सुविधा के विस्तार के साथ, वह अब ₹ 1.2 लाख से अधिक प्रति माह कमा रहे हैं। यानी 400% की वृद्धि। कुल कारोबार अब ₹30 लाख से बढ़कर ₹51 लाख प्रति वर्ष हो गया है। इस सुविधा की स्थापना से आसपास के लगभग 1,500 मछुआरों को लाभ हुआ और उन्हें अपनी फसल के शेल्फ जीवन को बढ़ाने में मदद मिली। इसके अलावा, श्री धर्म लिंगम लीन अवधि के दौरान बर्फ ब्लॉकों के भंडारण के लिए कोल्ड रूम स्थापित करने की योजना बना रहे हैं।





वन्नामी पालें और आय बढ़ाएं



श्री पोटेया दक्षिण अंडमान के प्रेम नगर में मछुआरा परिवार से ताल्लुक रखते हैं। वे ₹ 30,000/- प्रति माह कमा रहे थे। उन्होंने अपने दोस्त से प्रेरित होकर खारे पानी की जलकृषि को अपनाया और इसके संबंध में विवरण प्राप्त करने के लिए मत्स्यपालन विभाग (डी.ओ.एफ.), अंडमान और निकोबार (अंडमान और निकोबार) प्रशासन से संपर्क किया।

उनके मार्गदर्शन में उन्होंने पी.एम.एम.एस.वाई. के तहत “खारे पानी की जलकृषि के लिए नए तालाबों का निर्माण” के लिए आवेदन किया। परियोजना को मंजूरी मिल गई और उन्होंने वन्नामी कृषि के लिए 1 हेक्टेयर के क्षेत्र में एक शेड और एक तालाब का निर्माण किया। कुल परियोजना लागत ₹ 28.40 लाख थी। इसमें से उन्हें पी.एम.एम.एस.वाई. के तहत अनुदान के रूप में ₹ 1.63 लाख प्राप्त हुए। बाकी रकम खुद ही खर्च की गई। उन्होंने अपनी कृषि तालाबों में अच्छे पानी की गुणवत्ता प्रबंधन, गुणवत्ता वाले बीज और समय पर खिलाने जैसी सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाया। वर्तमान में तालाब 7 टन की वार्षिक उत्पादन क्षमता के साथ चल रहा है।

डी.ओ.एफ., अंडमान और निकोबार प्रशासन के हस्तक्षेप से, उनकी मासिक आय दोगुनी होकर लगभग ₹ 65,000 हो गई है। वह अब लगभग ₹ 8 लाख का औसत वार्षिक शुद्ध लाभ कमाता है। इसके अतिरिक्त, इसने 3 लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा किए। श्री पोटेया निकट भविष्य में उत्पादन क्षमता बढ़ाने की योजना बना रहे हैं, ताकि बेहतर आय स्तर सृजित किया जा सके और स्थानीय युवाओं को अधिक रोजगार उपलब्ध कराया जा सके।

नाम	पोटेया
जिला	दक्षिण अंडमान
केंद्र शासित प्रदेश	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
शैक्षिक योग्यता	कक्षा 7
व्यवसाय	मछली पकड़ना
मोबाइल सं.	9476028301
स्थापना का वर्ष	2021
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	झींगा कृषि
प्रजातियां	पेनियस वन्नामी
वार्षिक उत्पादन	7 टन
वार्षिक कारोबार	₹ 28 लाख
रोजगार सृजित	3





कौशल विकास से समृद्धि

सफलता की कहानी: 5



प्रशिक्षण	सी.आई.एफ.एन.ई.टी.
वित्तीय हस्तक्षेप	एन.एफ.डी.बी.
केंद्र शासित प्रदेश	अंडमान और निकोबार द्वीप गतिविधि: कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम
अवधि	15 मार्च- 13 अप्रैल, 2022

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह मछुआरे और मछुआरिन पारंपरिक मछली पकड़ने मुख्य रूप से सरल गिलनेट ऑपरेशन और लाइन मछली पकड़ने के तरीकों का उपयोग करने की आदी थीं। यह मत्स्य उत्पादन में वृद्धि को बहुत बाधित करता है। सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ फिशरीज नॉटिकल एंड इंजीनियरिंग ट्रेनिंग (सी.आई.एफ.एन.ई.टी.) ने द्वीपवासियों को आधुनिक तकनीकों से लैस करने के लिए इस स्थिति में हस्तक्षेप किया। सिफ़नेट भारत सरकार के अधीन एक राष्ट्रीय प्रशिक्षण संस्थान है और कौशल विकास गतिविधियों में लगा हुआ है।

एन.एफ.डी.बी. ने पी.एम.एम.एस.वाई. के तहत ऐसे ही एक प्रशिक्षण कार्यक्रम को वित्त पोषित किया जो अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के हाशिए पर रहने वाले मछुआरों के लिए आयोजित किया गया था। यह कार्यक्रम मत्स्य पालन विभाग, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और भारतीय मत्स्य सर्वेक्षण, पोर्ट ब्लेयर बेस के सहयोग से जंगलीघाट, पोर्टब्लेयर के मछली लैंडिंग केंद्र में आयोजित किया गया था। यह प्रशिक्षण एक महीने की अवधि के लिए 10 बैचों के 387 मछुआरों को दिया गया। कार्यक्रम के दौरान, “मछली पकड़ने के जहाज पर लंबी लाइन मछली पकड़ने और टूना हैंडलिंग”, “नौकाओं का दोष सुधार और रखरखाव”, और “मछली पकड़ने के जहाज पर संचार और नेविगेशन उपकरण” पर चर्चा की गई। मछुआरा समुदाय ने इस अवसर का उपयोग किया और मछली पकड़ने की नई तकनीकों, सुरक्षा उपायों, लॉन्गलाइन गियर सामग्री और विभिन्न प्रकार के हुक के महत्व को सीखा। उन्होंने विभिन्न प्रकार के टूना मछली पकड़ने के संचालन, सशिमी ग्रेड टूना तैयारी, टूना संसाधनों के महत्व, विभिन्न नौवहन और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, विभिन्न मछली पकड़ने के गियर, अग्निशमन उपकरण और समुद्री सुरक्षा उपकरणों के बारे में भी सीखा।

यह कार्यक्रम एक बड़ी सफलता थी। मछुआरे मछली पकड़ने के दौरान बेहतर सुरक्षा उपाय अपना सकते हैं। जंगलीघाट के मछुआरे अब टूना मछली पकड़ने के लिए लॉन्गलाइन का उपयोग करने में सक्षम हैं जो उनकी फसल की मात्रा को बढ़ाते हैं।





मत्स्य किसान उत्पादक कंपनी: एक लाभदायक कंपनी



श्री जी. भूपेश रेड्डी आंध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले के निदिमुसली गांव में स्थित भावी एक्का एंड फिश फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी (बी.ए.एफ.एफ.पी.सी.) के प्रबंध निदेशक हैं, जिसमें 989 सदस्य मछली और झींगे के विपणन में लगे हुए हैं, जो मछुआरों की आय को बढ़ावा देने और मुख्य रूप से उनकी फसल के लिए बेहतर मूल्य प्राप्त करने की समस्या का समाधान करने के लिए पाए गए थे। इस समस्या के समाधान के लिए, उन्होंने सभी किसानों से एकल की गई मछलियों को इकट्ठा करना शुरू कर दिया और उन्हें निर्यात कंपनियों को थोक मात्रा में बेचना शुरू कर दिया, ताकि उनकी उपज के लिए बेहतर मार्जिन मिल सके। वे नेल्लोर शहर के बाजार और कावली, कोवुरु और गूडुरु में बाजार आउटलेट में अपनी उपज बेचते हैं। इस तकनीक ने उन्हें पूरी तरह से फसलोत्तर से पहले अपनी तत्काल वित्तीय जरूरतों को दूर करने में मदद की।

नाबार्ड ने शुरू में ₹.4.42 लाख की भावी एक्का को सहायता प्रदान की। बाद में, उन्हें व्यवसाय विकास के लिए ₹ 8.66 लाख और किसानों को वन-स्टॉप समाधान की पेशकश करने वाली एक छोटी दुकान स्थापित करने के लिए ₹ 5.16 लाख दिए गए। लघु कृषक कृषि व्यवसाय संघ (एस. एफ.पी.सी.) ने बी.ए.एफ.एफ.पी.सी. के प्रचालन के लिए ₹.807 लाख की वित्तीय सहायता दी। संयुक्त देयता समूहों की सहायता के लिए आन्ध्र प्रगति ग्रामीण बैंक (ए.पी.जी.बी.) द्वारा ₹.40 लाख का ऋण प्रदान किया गया था। मत्स्यपालन विभाग, आंध्र प्रदेश द्वारा प्रदान की गई ₹80 लाख की सब्सिडी के साथ बी.ए.एफ.एफ.पी.सी. ने अपने सदस्यों को 500 एयरेटर वितरित किए। अंतर्देशीय पालन को ठीक से प्रबंधित करने और ऑक्सीजन के लिए मछली तक बेहतर पहुंच प्रदान करने के लिए यह नई तकनीक पेश की जा रही है।

एफ.एफ.पी.ओ. ने बाद में अपनी व्यावसायिक गतिविधियों के लिए एक कार्य योजना तैयार की, जिसके परिणामस्वरूप बिक्री ₹ 1.35 लाख (2017-18) से बढ़कर ₹ 51.70 लाख (2019-20) हो गई और कारोबार का 60% मछली की बिक्री से प्राप्त हुआ था। हाल ही में, उन्होंने “गुणपति” ब्रांड नाम के तहत अपने उत्पादों की ब्रांडिंग शुरू की और किसानों को सीधे उपभोक्ताओं से जोड़ने की कोशिश की। इस कदम का उद्देश्य डिजिटल मार्केटिंग के साथ किसानों को सशक्त बनाना भी है। बेहतर मूल्य प्राप्त करने के लिए, बी.ए.एफ.एफ.पी.सी. मछली के अपशिष्ट के उप-उत्पाद के रूप में मछली के अचार, मछली चटनी और मत्स्य खाद बनाने जैसी मूल्य वर्धन गतिविधियां चला रहा है।

उन्होंने 20 जागरूकता कार्यक्रम, प्रशिक्षकों के लिए 5 प्रशिक्षण (टी.ओ.टी.), एक्सपोजर विज़िट और विश्व खारे पानी के जलकृषि सम्मेलन में एक सम्मेलन करके अपने सदस्यों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए। इससे उन्हें मत्स्य कृषि के वैज्ञानिक प्रबंधन और मत्स्य स्वास्थ्य प्रबंधन के बारे में जानकारी मिली, जिससे उनकी उत्पादकता में वृद्धि हुई। बीज और फीड की आसान उपलब्धता के लिए किसानों, फीड मिलों और हैचरी के साथ नियमित अभिसरण बैठक की जाती है। वे किसानों में एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग न करने के लिए जागरूकता को बढ़ावा दे रहे हैं।

नाम	जी भूपेश रेड्डी
जिला और राज्य	नेल्लोर, आंध्र प्रदेश
शैक्षिक योग्यता	एम.बी.ए. श्रेणी: सामान्य
व्यवसाय	विपणन
मोबाइल सं	9949747160
स्थापना का वर्ष	2017
फर्म का नाम	भावी एक्का फिश फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी
पद	प्रबंध निदेशक
व्यावसायिक गतिविधि	मछली और झींगे, मूल्य वर्धित उत्पादों, खाद आदि का व्यापार और क्षमता निर्माण गतिविधियाँ
वार्षिक कारोबार	₹ 60.82 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	175 टन
रोजगार सृजित	6





हैचरी - एक आकर्षक व्यवसाय



नाम	एम. वेंकटरमण
जिला	पूर्वी गोदावरी
और राज्य	आंध्र प्रदेश
शैक्षणिक योग्यता	बी.एस.सी.
श्रेणी	सामान्य
व्यवसाय	उद्यमी
मोबाइल सं.	9848011451
फर्म का नाम	एम.एस.आर. एक्का प्रा. लि.
स्थापना वर्ष	2018
स्थान	निर्देशक
गतिविधि	समुद्री मछली हैचरी
प्रजातियाँ	बहु प्रजातियों
वार्षिक कारोबार	₹ 4 करोड़ रुपए
वार्षिक मत्स्य बीज उत्पादन	संख्या में 3-5 मिलियन
रोजगार सृजित	34

श्री मेदिसेट्टी वेंकटरमण ने वर्ष 2017 में पूर्वी गोदावरी जिले, आंध्र प्रदेश में एम.एस.आर. एक्का प्राइवेट लिमिटेड यूनिट की स्थापना की। इकाई में प्रयोगशाला सुविधा के साथ 2.20 एकड़ क्षेत्र में फैली एक हैचरी शामिल है। इस कौशल सुविधा में दस सदस्यीय टीम है जो सिल्वर पोम्पानो, इंडियन पोम्पानो, कोबिया और सी बास के पालन पर ध्यान केंद्रित करती है।

नीली क्रांति योजना के तहत उन्हें ₹1.03 करोड़ की पहली वित्तीय सहायता मिली। आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई. ने उपयुक्त डिजाइन प्रदान करके मौजूदा झींगा हैचरी को संशोधित करने के लिए तकनीकी सहायता प्रदान की। उन्हें बुनियादी ढांचे को बढ़ाने, नवीकरण, अतिरिक्त मशीनरी और परिचालन व्ययों के लिए अन्य स्रोतों से ₹4.53 करोड़ की वित्तीय सहायता भी मिली। स्थापित सुविधा प्रति वर्ष 50 मिलियन स्पॉन की वार्षिक क्षमता और प्रति वर्ष 3.50 मिलियन पोस्ट लार्वा के साथ स्थापित की गई है। हैचरी ने वर्ष 2018-19 से 2020-21 के दौरान लगभग 23,59,400 फिंगरलिंग का उत्पादन किया है, जिनमें से 22,81,900 एशियाई सी बास फिंगरलिंग की आपूर्ति नर्सरी पालन और कृषि के लिए किसानों को की जाती है। इससे विगत तीन वर्षों में ₹1.06 करोड़ का राजस्व अर्जित हुआ।

हैचरी वर्तमान में रीसर्कुलेटरी एक्काकल्चर सिस्टम (आर.ए.एस.) के साथ सक्षम ब्रूड स्टॉक होल्डिंग टैंकों में कोबिया (राकीसेंट्रोन कैनाडम), सिल्वर पोम्पानो (ट्रेकिनोटस ब्लोची) और इंडियन पोम्पानो (ट्रेकिनोटस मूकाली) के ब्रूड स्टॉक को बनाए रख रही है। हैचरी आंध्र प्रदेश और कर्नाटक की हैचरी और नर्सरी पालन इकाइयों के साथ अपने अविश्वसनीय बाजार संबंधों के माध्यम से स्पॉन और फिंगरलिंग की आपूर्ति करती है।

हैचरी देश में बहु-प्रजातियों के समुद्री मत्स्य बीज उत्पादन के लिए एक मॉडल हैचरी के रूप में कार्य कर रही है। ऐसे सतत और समर्पित प्रयासों के साथ, श्री वेंकटरमण आर.ए.एस. में बहु समुद्री प्रजाति कृषि शुरू करने और पूरे भारत में स्पॉन, फ्राई और फिंगरलिंग की आपूर्ति करने के लिए उत्सुक हैं।





केज की कृषि से विश्वास: आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई. का प्रभाव

डॉ. शेखर मेगाराजन



आन्ध्र प्रदेश के लक्ष्मीपुरम गाँव के श्री नागराजू अपनी आजीविका के लिए मुख्यतः खाड़ियों में पारंपरिक मछली पकड़ने पर निर्भर थे। इसमें उन्हें सबसे बड़ी समस्या अनियमित आय का सामना करना पड़ा। वह सालाना महज रु.1.50 लाख कमा रहे थे। इस दौरान उन्हें भा.कृ.अनु.प.- सी.एम.एफ.आर.आई. की केज कल्चर गतिविधि के बारे में पता चला और उन्हें समुद्री फिनफिश कृषि पर जागरूकता पाने के लिए उनसे संपर्क किया। आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई., क्षेत्रीय केंद्र विशाखापट्टनम के डॉ.शेखर मेगाराजन और उनके सहयोगी वाली तकनीकी टीम ने वाणिज्यिक नर्सरी पालन सुविधाओं के पास उपलब्ध मत्स्य बीज का उपयोग के साथ एशियाई सी बास मछली की तटीय केज कल्चर का प्रदर्शन किया।

उन्होंने 5 x 5 x 3 मीटर 3 आकार और प्रत्येक 650 किलोग्राम क्षमता की मत्स्य कृषि केज प्रणालियों की 2 इकाइयों की स्थापना की। परियोजना की कुल लागत रु 5 लाख थी। उन्होंने 12 प्रति मीटर 3 पर स्टॉक की दर से मछली के बीज के साथ पिंजरों का स्टॉक किया श्री नागराजू को एन.एफ.डी.बी. द्वारा वित्त पोषित “तटीय केज कृषि प्रदर्शन योजना” के तहत आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई., विशाखापट्टनम के क्षेत्रीय केंद्र से रु 4 लाख की आंशिक वित्तीय सहायता प्राप्त हुई और उन्होंने खुद रु 1 लाख का निवेश किया। 10 महीने की ग्री-आउट कृषि अवधि के अंत में, बाजार के आकार की मछली (1 से 1.10 किलोग्राम आकार की मछली) की हार्वेस्ट की और घरेलू बाजारों में बेची जाती है। कुल मिलाकर लगभग 1.2 टन मछली की फसल थी और इसे रु.350 से रु.450 प्रति किलोग्राम की दर से बेचा गया था।

वर्तमान में, उन्होंने अपनी कृषि प्रणाली को 4 केज इकाइयों तक विस्तारित किया है और वह अपने फार्म में 2 पुरुषों को रोजगार देते हैं। इस गतिविधि के माध्यम से उनकी वार्षिक आय लगभग रु.3 लाख है जो इस गतिविधि को पूरा करने से पहले उनकी आय की तुलना में लगभग दोगुना है। मत्स्यपालन ने निश्चित रूप से उन्हें अपनी नियमित मछली पकड़ने की गतिविधियों के साथ अतिरिक्त आय अर्जित करने में मदद की है। इसके अलावा, सुसंस्कृत मछलियों को मछली पकड़ने के दौरान पकड़ी गई छोटी मछलियों के साथ खिलाया जा रहा है। इससे फीड कॉस्ट काफी कम हो गई है।

हस्तक्षेप	आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई.
लाभार्थी	नागराजू
जिला	कृष्णा
राज्य	आंध्र प्रदेश
शैक्षिक योग्यता	प्राथमिक स्तर
श्रेणी	अनुसूचित जनजाति
व्यवसाय	मत्स्यपालन
मोबाइल सं.	9502576406
व्यावसायिक गतिविधि	तटीय केज कृषि
प्रजातियां	एशियाई सी बास
स्थापना का वर्ष	2020
पद	मालिक
मत्स्य उत्पादन	1.2 टन
वार्षिक कारोबार	रु 2 से 3 लाख
रोजगार सृजित	2





झींगा शौचालय से स्मार्ट उपज



नाम	एन. नागराजू
जिला और राज्य	कृष्णा, आंध्र प्रदेश
शैक्षिक योग्यता	बी.एससी.
श्रेणी	सामान्य
व्यवसाय	झींगा किसान
मोबाइल सं.	9951694422
स्थापना का वर्ष	2020
फर्म का नाम	नागहनुमान मत्स्य और झींगा फार्म
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	वन्नामी कृषि
वार्षिक कारोबार	₹ 33.5 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	48 टन
रोजगार सृजित	7

श्री एन. नागराजू आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के ओगिराला गाँव के हैं। ये बी.एससी. स्नातक हैं और वन्नामेई कृषि शुरू करने से पहले एक कृषि किसान थे। मत्स्यपालन विभाग के ग्राम मात्स्यिकी सहायक द्वारा किए गए शोध ने उन्हें वन्नामी कृषि में नई तकनीकों का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया, और वर्ष 2020 में, उन्होंने 4 हेक्टेयर वन्नामेई कृषि फार्म में 24 टन प्रति फसल उत्पादन क्षमता के साथ “झींगा शौचालय” की तकनीक का उपयोग करना शुरू कर दिया। उसने ₹ 10 लाख की कुल परियोजना लागत का निवेश स्वयं किया था।

आम तौर पर, तालाब के तल पर कीचड़ के कारण बने प्रदूषित वातावरण से झींगा प्रभावित होता है। प्रभावित झींगे फीड नहीं लेते हैं और बदले में कमजोर हो जाते हैं। वे विभिन्न जीवाणु और वायरल रोगों से ग्रस्त होंगे। इससे कृषि फार्मों में रोग का प्रकोप होता है जिसके परिणामस्वरूप झींगा मृत्यु दर और वित्तीय नुकसान होता है। इस समस्या को दूर करने के लिए उन्होंने झींगा शौचालय तकनीक को अपनाया। इसके द्वारा, नीचे के कीचड़ को केंद्रीय गड्ढे में एकत्र किया जा सकता है और कीचड़ मोटर द्वारा बाहर निकाला जा सकता है। इस प्रकार, झींगा प्रदूषित वातावरण से तनावग्रस्त नहीं होता है और यह उसकी विकास और भोजन का सेवन बढ़ाता है। उन्होंने 5 पुरुषों और 2 महिलाओं को रोजगार दिया। वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान, उन्होंने 48 टन का औसत वार्षिक उत्पादन और ₹ 33.5 लाख का औसत शुद्ध लाभ हासिल किया।

श्री नागराजू अर्ध-जैविक, रोग-मुक्त और एंटीबायोटिक-मुक्त फसल का उत्पादन करने के लिए सर्वोत्तम पद्धतियों का उपयोग करते हैं। इस नई तकनीक को अपनाकर उसे और उसके क्षेत्र के अन्य किसानों को अच्छा लाभ मिल रहा है। वह नवीन तकनीकों का उपयोग करके झींगा पालन को जारी रखना चाहते हैं। उनके फार्म पर, मत्स्यपालन विभाग, आंध्र प्रदेश “मत्स्य सागु बड़ी” कार्यक्रम (किसानों के लिए आयोजित कृषि तकनीकों पर एक कार्यक्रम) का आयोजन करता है। इससे आसपास के किसान समृद्ध हुए हैं। जलकृषि प्रणालियों से उनके अच्छे स्वास्थ्य को बनाये रखने तथा अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए इस तकनीक का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित हुए हैं।





मत्स्यपालन से ग्रामीण महिलाओं को उद्यमी बनने के लिए सशक्त बनाना



कुछ वर्ष पहले तक, आंध्र प्रदेश के पचिपेडा मंडल के कोडिकल्लावलसा गांव की आदिवासी महिलाएं जंगल से केवल ₹ 40 प्रति दिन के हिसाब से जलाऊ लकड़ी इकट्ठा करने और बेचने के व्यवसाय में लगी हुई थीं। जलजीविका एक गैर सरकारी संगठन ने “टाटा ट्रस्ट” और राज्य मत्स्यपालन विभाग के सहयोग से इन महिलाओं को 2016 में केज कल्चर से परिचित कराया। शुरुआती अनिच्छा के बावजूद, पुणे के डिम्भे जलाशय में सफलता देखने के बाद कोडिकल्लावलसा की 10 महिलाओं ने इस नई तकनीक को सीखने में रुचि दिखाई।

जलजीविका ने उनके लिए प्रशिक्षण का आयोजन किया और उन्हें स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री से केज बनाना सिखाया। इन महिलाओं ने केज कल्चर, केज के रखरखाव, सजावटी मत्स्यपालन, और मत्स्य फीड प्रबंधन, रोग प्रबंधन आदि की तकनीक सीखी। अक्टूबर 2017 में, उन्होंने अपनी पहली सफलता को अनुभव किया जब उन्होंने लगभग 65 किलोग्राम वजन की 5,000 मछलियां बेचीं और ₹10,800 कमाए। आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.ए. ने उनकी सफलता को स्वीकार किया और उन्हें 2021 में स्वयं सहायता समूह (एस.एच.जी.) को “एंटरप्रेन्योर ऑफ द ईयर अवार्ड” से सम्मानित किया। 2017 में, जलजीविका ने 160 से अधिक ग्रामीण लोगों को कुशल मत्स्यपालन तकनीकों के लिए आंध्र प्रदेश के (चार जिलों- विशाखापट्टनम्, विजयनगरम्, श्रीकाकुलम और अनंतपुर) में परिचित कराया। एन.जी.ओ. के अनुसार, इस तरह की पहल से एक वर्ष में लगभग 1.1 करोड़ रुपये मिलते हैं। मत्स्यपालन में महिलाओं की सफलता ने पुरुषों को भी प्रेरित किया है, और पुरुषों की सहकारी समिति ने एक स्थायी आय विकसित करने पर काम करना शुरू कर दिया है।

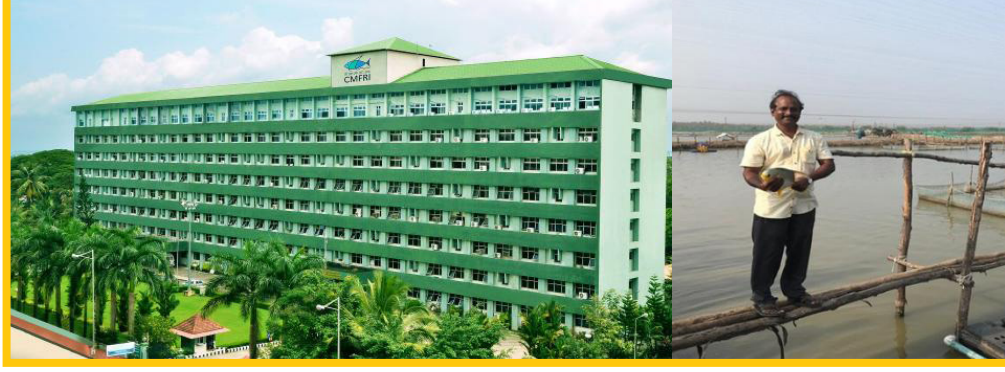
कोविड, महामारी के दौरान, स्थानीय मत्स्यपालन समुदाय की स्थिति बुरी हो गई, और कोविड के बाद के समय के दौरान, सामूहिक मत्स्य बीज उद्यमों और स्थानीय बाजार में मछली बेचने में लगा हुआ है। जलजीविका ने महिला मत्स्य पालकों की एफ.पी.सी. स्थापित करने की योजना तैयार की ताकि बाजार लिंकेज के लिए बुनियादी सहायता की जा सके।

स्थापना	महिला सामूहिक
राज्य	आंध्र प्रदेश
लाभार्थी	आदिवासी महिलाएं
गतिविधि	केज कल्चर
हस्तक्षेप	जलजीविका और टाटा ट्रस्ट





आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई. की पोम्पानो की कृषि रियल्टर को मत्स्य किसान में बदलना



तकनीकी हस्तक्षेप	आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई.
लाभार्थी	यू.टी. कृष्ण प्रसाद
जिला	कोनासीमा
राज्य	आंध्र प्रदेश
शैक्षिक योग्यता	मास्टर डिग्री
श्रेणी	सामान्य
व्यवसाय	विपणन और रियल एस्टेट व्यवसाय
मोबाइल सं.	9848444125
व्यावसायिक गतिविधि	तालाब मत्स्य कृषि
प्रजातियां	भारतीय पोम्पानो
स्थापना का वर्ष	2020
पद	मालिक
मछली उत्पादन	7 टन
वार्षिक कारोबार	₹ 20 से 25 लाख
रोजगार सृजित	5 प्रत्यक्ष और 5 अप्रत्यक्ष



आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई. ने तटीय तालाबों में जागरूकता पैदा करने और समुद्री मत्स्यपालन को लोकप्रिय बनाने की दिशा में कई पहल की हैं। श्री यू. टी. कृष्ण प्रसाद इन पहलों से लाभान्वित कई मछली किसानों में से एक हैं। मत्स्यपालन में प्रवेश करने से पहले, वह छोटे पैमाने पर विपणन और रियल एस्टेट व्यवसाय में शामिल थे, प्रति वर्ष लगभग 10 लाख कमाते थे। उनके व्यवसाय में अनियमित आय की चुनौती ने उन्हें दूसरे व्यवसाय के विचार की ओर खींच लिया। इस दौरान वे भा.कृ.अनु.प.-सी.एम.एफ.आर.आई., विशाखापट्टनम के क्षेत्रीय केंद्र के संपर्क में आए और वहां के वैज्ञानिकों से संपर्क किया। वहां के वैज्ञानिकों ने उन्हें तटीय तालाब में भारतीय पोम्पानो की ग्रो-आउट संस्कृति का गहन प्रदर्शन दिया। इसके लिए प्रयुक्त मछली के बीज का उत्पादन क्षेत्रीय केंद्र में ही किया गया था।

उन्हें आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई., विशाखापट्टनम के क्षेत्रीय केंद्र से एन.एफ.डी.बी. द्वारा वित्त पोषित “समुद्री फिन मछली तालाब कृषि प्रदर्शन योजना” के तहत ₹ 12 लाख की वित्तीय सहायता प्राप्त हुई और उन्होंने ₹ 4 लाख का निवेश किया। इस सहायता से 2.7 टन की उत्पादन क्षमता वाली तीन तालाब इकाइयां स्थापित की गईं। इन तालाबों में भारतीय पोम्पानो बीज को एक प्रति घन मीटर की दर से स्टॉक किया गया था। श्री कृष्ण प्रसाद ने अलग-अलग तालाब में ग्रो-आउट कृषि को अपनाकर मत्स्य बीज के 75 ग्राम के आकार तक पहुंचने तक एक अलग नर्सरी-पालन सुविधा का उपयोग करने जैसी सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाया। इस पद्धति से जीवित रहने की अच्छी दर प्राप्त हुई। एक वर्ष की कृषि अवधि के अंत में, 7 टन मछली की कटाई की गई और घरेलू बाजारों में ₹ 300 से 340 प्रति किलो की दर से बेची गई। व्यक्तिगत मछली का आकार 900 ग्राम से 1.10 किलोग्राम तक था।

अनुभव के साथ, श्री कृष्ण प्रसाद ने अब अपने मत्स्य फार्म का विस्तार किया है और वर्तमान में वह 40 एकड़ में मत्स्यपालन कर रहे हैं। इनमें से 8 एकड़ में समुद्री पंख मछली प्रजातियों को सुसंस्कृत किया जा रहा है। तालाब क्षेत्र के शेष को झींगा कृषि के लिए प्रयोग किया जाता है। मिस्टर यू. टी. कृष्ण प्रसाद ने रोजगार पैदा किया और बदले में इस गतिविधि के साथ लगभग 10 लोगों के लिए जीवन स्तर को सुधारा।



वासंती प्रीमियम झींगा फ्रीड के लिए एक विश्वसनीय ब्रांड

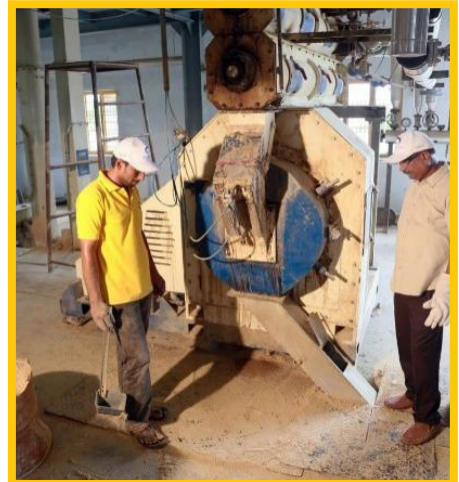


श्री एम. करुणा राजू और कृष्णम राजू ने 1995 में, संयुक्त रूप से आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले के बापटला में एक फार्म स्थापित किया और झींगा की कृषि शुरू की। वर्तमान में फार्म 88 हेक्टेयर में फैला हुआ है, झींगा कृषि का व्यवसाय कर रहे हैं। 2015 में, दोनों भागीदारों ने संयुक्त रूप से साई एक्वा फीड्स नामक एक फर्म की स्थापना की। उन्हें झींगा फ्रीड की उच्च लागत की चुनौती का सामना करना पड़ रहा था। इसलिए, उन्होंने 2 टन प्रति घंटे की क्षमता की एक फीड मिल स्थापित की और ₹3 करोड़ का निवेश करके एक फ्रीड गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला की स्थापना की। उनकी इकाई में उत्पादित फ्रीड को ब्रांड “वासंती प्रीमियम” दिया गया था और उनका फार्म पर उपयोग किया जाता था जिससे अच्छी आमदनी हुई। फीड के उपयोग से उत्पादन की लागत में 20% की कमी आई है। स्व-उपभोग के अलावा, फ्रीड को पड़ोसी फार्मों को ₹.55 प्रति किलोग्राम से ₹.65 प्रति किलोग्राम के प्रतिस्पर्धी मूल्य पर भी बेचा गया था, जबकि बाजार मूल्य 88 रुपये प्रति किलोग्राम था। पिछले तीन वर्षों के दौरान, 7,633 टन झींगा फ्रीड का उत्पादन हुआ और इसका उपयोग छोटे और मध्यम किसानों द्वारा किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप संचयी रूप से साई एक्वा फीड के लिए ₹ 916 लाख की बचत हुई।

विभिन्न प्रकार के कच्चे माल और विधियों के उपयोग जैसे नवोन्मेषी उपायों का प्रयोग करना इस प्रेरणादायक यात्रा में महत्वपूर्ण योगदानकर्ता थे। तालाब उत्पादकता में सुधार के लिए बायोमिमिक्री तकनीक अर्थात् जैविक रस का उपयोग जो चावल की भूसी और सोया के किण्वन द्वारा तैयार किया जाता है और उपयोग किया जाता है। इसने पानी की गुणवत्ता, फाइटोप्लांकटन और ज़ोप्लांकटन उत्पादन आदि में सुधार करने में मदद की और बदले में, इसने जीवित रहने की दर में 20% की वृद्धि की। इसके अलावा, स्थायित्व को बढ़ाने के लिए फार्म में झींगा की विभिन्न प्रजातियों की कृषि का अभ्यास किया जा रहा है। फर्म एक्वा किसानों को इनपुट टूल्स और मशीनरी भी बेचती है।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय खारा जलकृषि संस्थान (भा.कृ.अनु.प.-सी.आई.बी.ए.) द्वारा विकसित ‘वन्नामेई प्लस’ और साई एक्वा फीड्स द्वारा अधिग्रहित, स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री और स्वदेशी फ्रीड निर्माण तकनीक से बना एक लागत प्रभावी गुणवत्ता फ्रीड है। इस फ्रीड का उपयोग करके, लघु किसान ₹ 50,000 से ₹ 60,000 / फसल / हेक्टेयर का बढ़ा हुआ लाभ मार्जिन अर्जित करने में समर्थ हुए। सफलता को देखते हुए, लघु और मध्यम स्तर के किसानों द्वारा आंध्र प्रदेश, केरल, गुजरात, हरियाणा और पश्चिम बंगाल में फ्रीड मिलों की अतिरिक्त पांच इकाइयां स्थापित की गईं। इस तरह की सफल यात्रा और 70 लोगों को रोजगार के अवसर देने के कारण, फर्म को भारत सरकार द्वारा विश्व मात्स्यिकी दिवस- 2020 पर “सर्वश्रेष्ठ मत्स्यपालन उद्यम” का पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नाम	विजय वर्मा और कृष्णम राजू
जिला और राज्य	गुंटूर, आंध्र प्रदेश
शैक्षिक योग्यता	बी टेक
श्रेणी	सामान्य
व्यवसाय	स्व-नियोजित
मोबाइल सं.	9885553555
फर्म का नाम	साई एक्वा फीड्स
स्थापना का वर्ष	2015
स्थिति	मैनेजिंग पार्टनर
व्यावसायिक गतिविधि	झींगा फ्रीड मिल
वार्षिक टर्नओवर	₹ 20 करोड़
वार्षिक झींगा फ्रीड उत्पादन	7,633 टन
रोजगार सृजित	70





मॉडल रेसवे - रेनबो फार्म



नाम	दोरजी खांडू खीमे
जिला और राज्य	पश्चिम कामेंग, अरुणाचल प्रदेश
शैक्षणिक योग्यता	बी.ए.
श्रेणी	एस.टी.
व्यवसाय	किसान
मोबाइल सं.	6009940128
स्थापना वर्ष	2018
फर्म का नाम	रेनबो फार्म
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	रेसवे कृषि
वार्षिक कारोबार	₹ 4.8 लाख
वार्षिक उत्पादन	60,000 टन
रोजगार सृजित	2

श्री दोरजी खांडू खीमे अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम सियांग जिले के आलो में रिलायंस पावर लिमिटेड में वरिष्ठ कार्यपालक के रूप में कार्यरत थे। पारिवारिक आग्रह के कारण, उन्होंने 2019 में नौकरी से इस्तीफा दे दिया और अपने गृहनगर लौट आए। शेरगांव ट्राउट फार्म का दौरा करने पर उन्हें ट्राउट की कृषि और ट्राउट की मांग के बारे में पता चला। इसके बाद उन्होंने ट्राउट की कृषि करने का फैसला किया। उन्होंने अपने राज्य में ट्राउट की कृषि के लिए उपलब्ध सब्सिडी के संबंध में मत्स्यपालन विभाग से संपर्क किया और विभाग द्वारा ट्राउट की कृषि करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। जल्द ही उन्होंने जिगांव गांव में "रेनबो फार्म" नाम से अपना फार्म शुरू किया। अपने कृषि काल के सात महीनों के भीतर, उन्होंने फार्म से कमाई करना शुरू कर दिया।

वर्तमान में उनके पास कंक्रीट रेसवे की 3 यूनिट, 1 मिट्टी का रेसवे

और 1 मिट्टी का मछली तालाब है। उनकी कुल परियोजना लागत ₹9 लाख थी। इसमें से ₹3.6 लाख सरकार द्वारा नीली क्रांति योजना के अंतर्गत वित्तीय सहायता के रूप में वित्त पोषित किया गया था। उन्होंने एक निजी बैंक से ₹5 लाख का ऋण भी लिया। वित्तीय वर्ष 2021-22 में, उन्होंने कुल 600 कि.ग्रा. का उत्पादन किया और उपज का विपणन करके ₹ 2.80 लाख का शुद्ध लाभ अर्जित किया। वह फार्म में स्वास्थ्यकर स्थिति बनाए रखने में अत्यधिक सावधानी बरतता है, हर दो महीने में मछलियों को अलग करना और बीमारी के प्रकोप के दौरान समय पर हस्तक्षेप करना। इस तरह की अच्छी प्रबंधन प्रथाओं ने उन्हें लाभ के साथ अपने फार्म को उत्पादक रूप से बनाए रखने में मदद की है।

वर्तमान में, ट्राउट की कृषि के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए सरकारी अधिकारियों, मत्स्य किसानों और अन्य राज्यों के पर्यटकों द्वारा नियमित रूप से उनके फार्म का दौरा किया जाता है। ट्राउट की कृषि के कारण श्री खीमे अपने परिवार की आजीविका बढ़ाने में सफल रहे हैं। उन्होंने अपने गांव में 2 लोगों को रोजगार भी दिया है। इससे उनके कर्मचारियों के जीवन स्तर में भी सुधार करने में मदद मिली है। वह निकट भविष्य में एक फिश हैचरी, फिश फीड मिल स्थापित करने और अपने फार्म का क्षेत्रफल बढ़ाने की योजना बना रहे हैं।





कृषक से जलकृषक बन गये

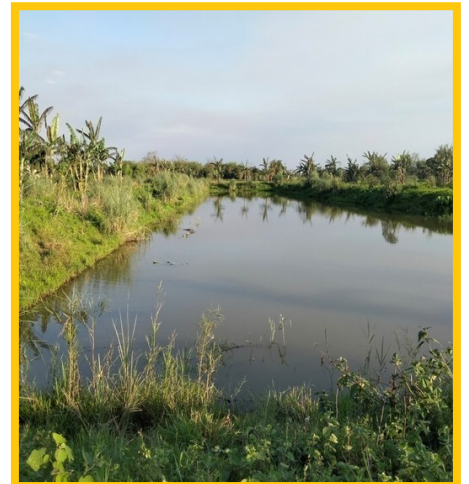


श्री नेलेक्ता चौहाई अरुणाचल प्रदेश के चांगलांग जिले के मुदोई गांव के निवासी हैं। मत्स्यपालन करने से पहले वह एक कृषक थे जो लगभग ₹ 70,000 कमाते थे। अरुणाचल प्रदेश के मत्स्यपालन विभाग ने उन्हें जलकृषि करने के लिए प्रोत्साहित किया क्योंकि इसमें उच्च आय है।

राज्य मत्स्यपालन विभाग के मार्गदर्शन और समर्थन के तहत, उन्होंने मुख्यमंत्री नील क्रांति अभियान (एम.एम.एन.के.ए.) योजना के तहत “आई.एम.सी. और विदेशी कार्प के टेबल मत्स्य उत्पादन” गतिविधि के लिए आवेदन किया और वित्त वर्ष 2019-20 के दौरान प्रत्येक तालाब की 3.50 टन उत्पादन क्षमता के साथ ग्रीन-आउट तालाबों की 7 इकाइयों का सफलतापूर्वक निर्माण किया। इस योजना के तहत, उन्हें ₹21 लाख की कुल परियोजना लागत की तुलना में ₹12.60 लाख की वित्तीय सहायता प्राप्त हुई, और शेष ₹8.40 लाख का निवेश स्वयं किया था।

मत्स्यपालन विभाग के तकनीकी इनपुट और मार्गदर्शन ने जलकृषि और इसकी प्रथाओं को समझने में उनके लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके सामने एक बड़ी चुनौती इलाके में अच्छी कम लागत वाली गुणवत्ता वाले फीड की उपलब्धता थी। वे समझ गये थे कि मत्स्यपालन से अर्जित ज्ञान से अगर इस मुद्दे को सुलझा लिया जाए तो उत्पादन कई गुना बढ़ाया जा सकता है। वह उचित आहार अनुपात में फीड का उपयोग करता है और पानी की गुणवत्ता के विभिन्न मानकों को बनाए रखता है। श्री नेलेक्ता ने अपने लिए ₹7.50 लाख के वार्षिक कारोबार के साथ अच्छी आय अर्जित करना शुरू कर दिया और दूसरों के लिए रोजगार के अवसर सृजित किए। वह अपने कृषि क्षेत्र का विस्तार करने की योजना बना रहे हैं और उच्च मूल्य वाली मछलियों की गहन मत्स्य कृषि में अनुभव हासिल करना चाहते हैं।

नाम	नेलेक्ता चौहाई
जिला और राज्य	चांगलांग, अरुणाचल प्रदेश
शैक्षिक योग्यता	हाई स्कूल
श्रेणी	अनुसूचित जाति
व्यवसाय	किसान
मोबाइल सं.	9366367734
स्थापना का वर्ष	2019
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	आई.एम.सी. और विदेशी कार्प का टेबल मत्स्य उत्पादन
वार्षिक कारोबार	₹ 7.50 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	3.50 टन
रोजगार सृजित	3





गुणवत्ता बीज: गुणवत्ता आय



नाम	अमल मेधी
जिला और राज्य	नलबाड़ी, असम
शैक्षिक योग्यता	बी.ए.
वर्ग व्यवसाय	किसान
मोबाइल सं.	8812838707
फर्म का नाम	मेढी गुणवत्ता मछली बीज निर्माता और आपूर्तिकर्ता
स्थापना के वर्ष	2008
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	देसी मागुर, सिंधी और पाबड़ा, आई.एम.सी. और विदेशी कार्प्स का मत्स्य बीज उत्पादन
वार्षिक टर्नओवर	₹ 3.50 करोड़
वार्षिक मछली बीज उत्पादन	संख्या में 1 करोड़
रोजगार सृजित	15

अमल मेधी असम के नलबाड़ी जिले के सोंधा गांव के रहने वाले हैं। 2008 तक, उनके परिवार की मुख्य आजीविका कृषि खेती थी। उनके पास धान की खेती करने वाली 50 सेंट खेती की ज़मीन थी, जिससे उन्हें मुश्किल से कोई आमदनी होती थी। इसलिए, उन्होंने अपने 50 सेंट खेत का उपयोग फिशपॉन्ड बनाने के लिए किया और ₹20,000 का निवेश करके स्थानीय हैचरी से 10 लाख की संख्या में स्पॉन खरीदा और कृषि शुरू कर दी। स्पॉन की जीवित रहने की दर लगभग 50% थी। जब स्पॉन फिंगरलिंग में बदल गया, तो उसने उन्हें स्थानीय बाजार में वापस बेच दिया, जिससे उन्हें पहली बार ₹50,000 मिले। उच्च प्रतिफल ने उन्हें अपना उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने स्थानीय बैंकों से ₹ 1.95 लाख का ऋण लिया और वर्ष 2010 में एक-एक एकड़ के दो तालाब खरीदे और फिंगरलिंग को पालना शुरू किया। वर्ष 2010 में, उन्होंने हापा प्रणाली के माध्यम से इंडियन मेजर कार्प्स (आई.एम.सी.) और विदेशी कार्प्स का प्रजनन शुरू किया। इससे स्पॉन की जीवित रहने की दर 50% से बढ़कर 60% हो गई।

उन्होंने 2012 में असम में मागुर, कोई, सिंधी और पाबड़ा की स्वदेशी प्रजनन तकनीकों पर प्रशिक्षण में भाग लिया। 2014 में उन्होंने नई तकनीकों को अपनाकर अपने निवेश से चार गुना ज्यादा कमाई की। उन्होंने 10 एकड़ जमीन खरीदी और पड़ोसी गांवों में 15 एकड़ जमीन पट्टे पर ली, जहां वे बड़े पैमाने पर कृषि और प्रजनन का अभ्यास कर रहे हैं। उन्होंने देशी मागुर, सिंधी और पाबड़ा का प्रजनन शुरू किया। आज उनके द्वारा उत्पादित स्वदेशी बीज की आपूर्ति उनके जिले और अन्य राज्यों में की जाती है। अब तक वह इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण पर करीब ₹.65 लाख खर्च कर चुके हैं।

श्री मेधी को उनके उत्कृष्ट काम के लिए मान्यता दी गई थी और उन्हें 2016 में “सर्वश्रेष्ठ मत्स्य किसान” और “सर्वश्रेष्ठ गुणवत्ता वाले मत्स्य बीज उत्पादक” के रूप में सम्मानित किया गया है और 2019 में मत्स्यपालन विभाग, असम द्वारा उन्हें “मत्स्यपालन ब्रांड एंबेसडर” के रूप में नामित किया गया था। उन्हें “असम में 2020 तक किसानों की आय दोगुनी करने के लिए राज्य स्तरीय किसान मेले के दौरान कृषि और संबद्ध क्षेत्र में नई तकनीक को अपनाने और बढ़ावा देने” के लिए भी सम्मानित किया गया था।





बहुआयामी जलकृषि विकास में सफल उद्यमी

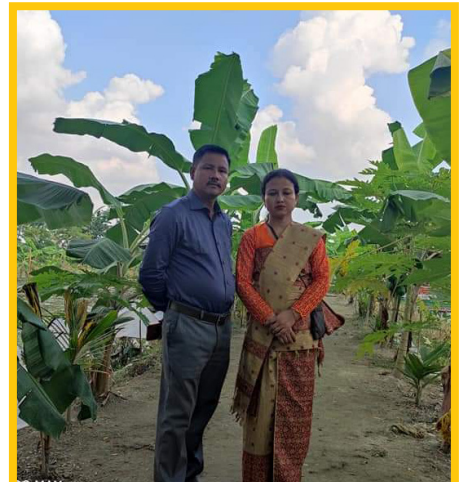


श्री बिनंदा बारो असम के बामुनझार गांव के रहने वाले हैं। उन्होंने 2005 में एमबीए पूरा किया और 2006 में मैनेजमेंट ट्रेनी के रूप में अपना करियर शुरू किया। वर्तमान में, वह सस्कनेक्ट प्रा. लिमिटेड के सह-संस्थापक और प्रबंध निदेशक के पद पर कार्यरत हैं। 2019 में, उन्होंने अपनी खुद की जमीन के 100 वर्ग फुट में 4 सुअर पालने के बाड़े खोले। 2020 में, उन्होंने 0.9 हेक्टेयर धान के खेत को 3 मछली तालाबों में परिवर्तित करके जलकृषि में कदम रखा और ग्रामीण लोगों, विशेष रूप से महिलाओं को सतत विकास के लिए सशक्त बनाने के उद्देश्य से “ऐ चानेकी एग्रोवेट सर्विसेज” शुरू की। एक बार तालाबंदी लागू होने के बाद, उन्होंने समय का पूरा फायदा उठाया और तालाब के किनारों को छोटे बागवानी उद्यानों में बदल दिया और अपने सुअर फार्म को 200 सूअरों की नस्लों के हैम्पशायर, यॉर्कशायर, ड्यूरोक आदि के साथ एक एकीकृत सुअर सह मत्स्य फार्म में बदल दिया। राज्य के पशुपालन और मत्स्यपालन विभागों ने श्री बारो को सभी दिशाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने में मदद करने में प्रमुख भूमिका निभाई। एक बार जब लॉकडाउन बढ़ा दिया गया, तो उन्होंने अपने शुरुआती 3 मछली तालाबों को 1,200 बत्तखों के साथ एक एकीकृत बतख सह मत्स्य फार्म में बदल दिया। उसी वर्ष उन्होंने बीटल नस्ल की 3 बकरियों से छोटे पैमाने पर बकरी पालन भी शुरू किया और बाद में संख्या बढ़ाकर 10 बकरियों की कर दी।

2021 में, 0.25 हेक्टेयर भूमि पर 4 हैचरी स्थापित की गई, साथ ही सुअर सह मछली एकीकृत फार्म का 0.62 हेक्टेयर तक विस्तार किया गया। उन्होंने जमीन खरीदकर अपने सुअर पालने के लिए लगभग 1 किलोमीटर सड़क (चौड़ाई 14 फीट) भी बनवाई है। 2022 में, उन्होंने अपनी 2.75 हेक्टेयर भूमि को चावल सह मत्स्यपालन अपनाने के लिए 3 तालाबों में परिवर्तित किया। इसके साथ ही उन्होंने 5 नए नर्सरी तालाब, 1 ब्रूड स्टॉक तालाब और 1 पालने वाले तालाब की शुरुआत की। कुल मिलाकर, उनके पास लगभग 3.5 हेक्टेयर में फैले 15 मछली तालाब हैं। केवीके, डारंग के तकनीकी मार्गदर्शन से उन्होंने बागवानी में भी कदम रखा।

उन्होंने बुद्धिमानी से अपने सभी खेतों की आय को विस्तार में निवेश किया और अपने स्वयं के निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त किया। हालांकि फार्म अपने शुरुआती दौर में था, लेकिन उसने 2020-21 में लगभग ₹15 लाख कमाए। उन्हें 2021 में उनकी एकीकृत कृषि प्रणाली के लिए आई.सी.ए.आर.- कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रशंसा प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया। इसके अलावा, वह महिला सशक्तिकरण के लिए एक बुनाई उद्योग, एक चावल मिल, एक तेल मिल, मत्स्य बीज उत्पादन, और मछली और पशु फीड मिल गुणवत्ता के लिए एक और हैचरी स्थापित करने की योजना बना रहे हैं।

लाभार्थी	बिनंदा बारो
जिला	बक्स
राज्य	असम
शिक्षा	एम.बी.ए.
व्यवसाय	कृषि और संबद्ध गतिविधियाँ
मोबाइल सं.	9401801117
व्यावसायिक गतिविधि:	1. मछली सह सुअर पालन 2. मछली सह बतख पालन 3. मछली सह धान की कृषि 4. बकरी पालन 5. मत्स्य बीज उत्पादन
फर्म का नाम	आई चानेकी एग्रोवेट सर्विसेज
स्थापना का वर्ष	2019
पद	मालिक
वार्षिक कारोबार	₹ 15 लाख
रोजगार सृजित	20 से अधिक





उद्यमिता द्वारा सशक्तिकरण



नाम	चुमी बोरदोलोई
जिला और राज्य	नगाँव, असम
शैक्षिक योग्यता	एम.ए. संस्कृत
श्रेणी	ओ.बी.सी.
व्यवसाय	सामाजिक कार्यकर्ता
मोबाइल सं.	8723003589
स्थापना का वर्ष	2001
फर्म का नाम	चारु खाद्य प्रसंस्करण इकाई
पद	प्रोपराइटर
व्यावसायिक गतिविधि	एकीकृत कृषि (स्थानीय रूप से उपलब्ध प्रजातियाँ), मछली प्रसंस्करण, महिलाओं के लिए प्रशिक्षण
वार्षिक कारोबार	₹ 20 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	22.05 टन
रोजगार सृजित	14

श्रीमती चुमी बोरदोलोई असम के नगाँव जिले के हाटनी भेटा गांव की रहने वाली हैं। उन्होंने संस्कृत में एम.ए. किया। हालांकि वह एक स्कूल शिक्षिका थीं, लेकिन उन्होंने हमेशा महिला सशक्तिकरण के लिए एक सामाजिक कार्यकर्ता बनने का लक्ष्य रखा। ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के अपने सपने को साकार करने के लिए, उन्होंने स्वयं सहायता समूह (एस. एच.जी.) और गैर-सरकारी संगठन (एन.जी.ओ.) बनाने का फैसला किया। उन्होंने वर्ष 2001 में “चारु खाद्य प्रसंस्करण इकाई” नामक एक मॉडल खाद्य प्रसंस्करण इकाई और एकीकृत कृषि क्षेत्र में काम करने वाले एक गैर सरकारी संगठन की शुरुआत की। एन.जी.ओ. सरकारी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं को प्रशिक्षित करता है। कुल मिलाकर लगभग 5000 महिलाओं को संगठन द्वारा प्रशिक्षित किया गया है और प्रशिक्षण के बाद वह उन्हें नौकरी पाने के लिए या अपना खुद का उद्यम शुरू करने के लिए मार्गदर्शन करती हैं। वह एकीकृत कृषि-कृषि विकास सोसाइटी (कर्बी लालुंग कृषि पम, रोडली एफ.पी.सी. (किसान उत्पादक कंपनी) के सचिव के रूप में भी कार्य करती हैं।

उनके पास असम के नगाँव जिले के बरहमपुर में 32 बीघा जमीन और मारीगांव जिले के कापहेरा में 165 बीघा जमीन है। उनके द्वारा स्थापित एकीकृत मत्स्यपालन में धान सह मत्स्यपालन, बतख सह मत्स्यपालन, बकरी पालन, सुअर पालन, नर्सरी, मधुमक्खी पालन, आदि शामिल हैं। वे गुणवत्ता प्रशिक्षण भी प्रदान करती हैं। एकीकृत कृषि क्षेत्र 5000 किलोग्राम उत्पादन की क्षमता के साथ 90 हेक्टेयर की सीमा में है और प्रति वर्ष ₹ 20 लाख का वार्षिक कारोबार होता है। वे अच्छी गुणवत्ता और फसल की मात्रा का उत्पादन करने के लिए 100% जैविक जैव-उर्वरक का उपयोग करती हैं। भविष्य में, वह एक एक्वा फिश टूरिज्म रिसॉर्ट खोलने की योजना बना रही हैं।

उन्हें भारत सरकार द्वारा कई उत्कृष्टता पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जैसे असम के खाद्य प्रसंस्करण के सर्वश्रेष्ठ उद्यमी, 2019, भारत की सर्वश्रेष्ठ सशक्त महिला, 2019, असम 2018 की सर्वश्रेष्ठ महिला किसान और भारत की सर्वश्रेष्ठ महिला किसान, 2015.





कला शिक्षक मत्स्य किसान में बदलना

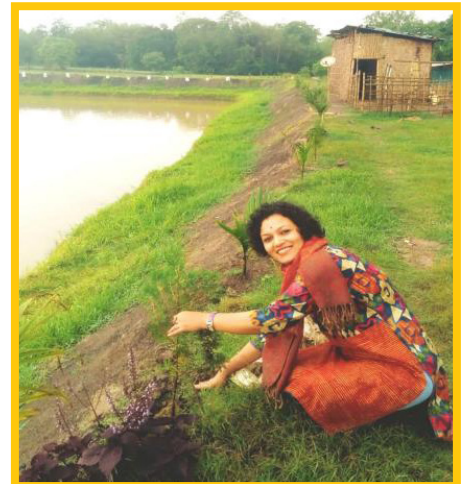


श्रीमती गार्गी गीतोम बोरा असम के नागांव जिले के मोरिकोलॉन्ग गांव की रहने वाली हैं। 2006 में पेंटिंग में डिप्लोमा और एम.ए. पूरा करने के बाद, उन्होंने जवाहरलाल नेहरू नवोदय विद्यालय में एक कला शिक्षक के रूप में काम करना शुरू किया। हालांकि, अपने विवाह के बाद, उन्हें व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन दोनों में संतुलन बनाने में समस्याओं का सामना करना पड़ा। इसने उन्हें एक उद्यमशीलता की यात्रा में प्रवेश करने और अपना खुद का कला विद्यालय शुरू करने के लिए प्रेरित किया है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने सरसों के तेल निर्माण के लिए एक तेल मिल शुरू की, लेकिन वित्तीय संकट के कारण काम नहीं किया। फिर उसने दो वर्ष का ब्रेक लिया और बैंक ऋण प्राप्त करके जागृति खाद्य उत्पाद नामक एक खाद्य प्रसंस्करण इकाई शुरू की। इस ब्रांड के माध्यम से, उन्होंने विभिन्न प्रकार की मछली और सब्जियों के अचार और नमकीन बनाने का विचार किया।

जब उन्हें शुरुआत की, तो उन्हें समय पर कच्चा माल प्राप्त करने की चुनौती का सामना करना पड़ा। इसे दूर करने, विशेष रूप से मछली की कमी को दूर करने के लिए, उन्होंने एकीकृत कृषि में कदम रखा।

यद्यपि श्रीमती बोरा ने अपना व्यवसाय खुद ही शुरू किया था, फिर भी उन्होंने एकीकृत कृषि और उपलब्ध सरकारी योजनाओं के बारे में अधिक जानकारी हासिल करने के लिए नागांव में राज्य मत्स्यपालन कार्यालय से संपर्क किया। मत्स्यपालन विभाग के मार्गदर्शन और समर्थन से, उन्होंने वित्तीय वर्ष 2020-21 के दौरान पी.एम.एम.एस.वाई. के अंतर्गत “एकीकृत कृषि” गतिविधि के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त की और एक नये तालाब का निर्माण किया। फार्म में मछली तालाब के अलावा सुअर पालन, बत्तख का पालन, और नींबू, नारियल, सुपारी और केले के पेड़ आदि फसलें शामिल हैं। पी.एम.एम.एस.वाई. के अंतर्गत, उन्हें पहले वर्ष के लिए ₹ 80,000 की वित्तीय सहायता मिली। ₹ 7.77 लाख की राशि उनके द्वारा निवेश की गई थी। कुल परियोजना लागत ₹ 8.50 लाख थी। श्रीमती बोरा के लिए अपनी आजीविका को विनियमित करने के लिए तेल मिल और मछली खाद्य उत्पादों का निर्माण पर्याप्त नहीं था। हालांकि, एकीकृत कृषि शुरू करने के बाद, वह आर्थिक रूप से पहले से अधिक समर्थ हो गई। वह तालाब में खाद डालने के लिए सरसों के तेल की खली, सुअर के गोबर और बत्तख की लीद का उपयोग करती हैं। जल्द ही, वह मत्स्यपालन के लिए एक बायोफ्लोक टैंक और रीसर्क्युलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम स्थापित करने जा रही है। चूंकि उनकी जमीन राजमार्ग से जुड़ी हुई है, इसलिए वह एक रिसॉर्ट भी शुरू करने की योजना बना रही है।

नाम	गार्गी गीतोम बोरा
जिला और राज्य	नागांव, असम
शैक्षिक योग्यता	एम.ए. फाइन आर्ट्स
श्रेणी	ओ.बी.सी.
व्यवसाय	शिक्षक
मोबाइल सं.	94015315959
फर्म का नाम	जागृति फूड प्रोडक्ट्स
पद	प्रोपराइटर
व्यावसायिक गतिविधि	एकीकृत मत्स्यपालन
वार्षिक कारोबार	₹ 6.04 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	4.4 टन
रोजगार सृजित	10





कॉलेज से निकले साहसी उद्यमी



लाभार्थी	नितुल चंद्र दास
जिला	कामरूप (ग्रामीण)
राज्य	असम
शैक्षिक योग्यता	बी. ए.
श्रेणी	अनुसूचित जाति
व्यवसाय	मत्स्य किसान
व्यावसायिक गतिविधि	मत्स्य बीज उत्पादन, एकीकृत मत्स्य पालन, समग्र मत्स्य कृषि
स्थापना का वर्ष	2014
पद	मालिक
फर्म का नाम	एन.सी.डी. मत्स्य फार्म
वार्षिक उत्पादन	टेबल मछली के एन.ई.एस. पर 11.8 टन और 120 मिलियन स्पॉन
वार्षिक कारोबार	₹ 36.6 लाख
रोजगार सृजित	20

श्री नितुल चंद्र दास असम के कामरूप जिले के रहने वाले हैं। 2014 में अपनी पढ़ाई के ठीक बाद, उन्होंने अपनी 0.15 हेक्टेयर संपत्ति पर जलकृषि में अपना करियर शुरू किया। कॉलेज में पढ़े-लिखे युवक के पास सफेदपोश नौकरी नहीं होने के कारण, कृषि बुनियादी ढांचे की स्थापना के शुरुआती दिनों में उन्हें सामाजिक दबाव का सामना करना पड़ा। निराश न होते हुए, उन्होंने आधुनिक जलकृषि तकनीकों के बारे में अधिक जानने के लिए एन.एफ.डी.बी. और मत्स्यपालन विभाग, असम द्वारा प्रदान किए गए मत्स्यपालन में विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रमों में भाग लिया। अपने प्रयासों और बदले में, जलकृषि से उत्पन्न राजस्व के लिए धन्यवाद, वह जलकृषि में सफल हो गया।

उसने अब अपनी मत्स्यपालन को 8 हेक्टेयर तक बढ़ा दिया है। वे अपने फार्म में 1,000 बतख की क्षमता के साथ मछली सह बतख एकीकृत कृषि करते हैं। इसके अतिरिक्त, उनके पास एक प्रजनन पूल, पांच हैचिंग पूल, एक ओवरहेड टैंक और एक स्पॉन संग्रह टैंक के साथ एक चीनी सर्कुलर हैचरी है। उनके पास लगभग 4 हेक्टेयर क्षेत्र की एक छोटी मौन भी है जहां वे भारतीय मेजर कार्प और ई ज़ोटिक सी आर्प्स की उन्नत किस्मों की उन्नत फिंगरलिंग का स्टॉक करते हैं। वह जिस फीड का उपयोग करते हैं वह चावल पॉलिश और सरसों के तेल के केक मिश्रण (1: 1) 2 - 3% प्रति किलोग्राम शरीर के वजन की दर से है।

आज, श्री दास का वार्षिक कारोबार ₹ 36.6 लाख है और उन्होंने मत्स्यपालन में एक बहुत अधिक राजस्व उत्पादक मॉडल स्थापित किया है जिसे भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के अन्य हिस्सों में दोहराया जा सकता है।





पारंपरिक मत्स्यपालन से आधुनिक मत्स्यपालन



श्रीमती रंजीता सैकिया डेका असम के कामरूप महानगर जिले के मेधिकुची गांव की रहने वाली हैं। 2005 से वे ग्रामीण लोगों को सूचना प्रौद्योगिकी (आई.टी.) में ऑनलाइन सेवाएं प्रदान कर रही हैं। चूंकि वह एक पारंपरिक मत्स्यपालन परिवार से ताल्लुक रखती हैं, जहाँ वे रु. 3 से 4 लाख आय प्राप्त करती थी, इसलिए उन्होंने अपने घर में एक्वापोनिक्स की शुरुआत की। एक्वापोनिक्स में प्राप्त सफलता ने उन्हें मत्स्यपालन विभाग, असम के मार्गदर्शन में आर.ए.एस. (रीसर्कुलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम) शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने नीली क्रांति योजना के अंतर्गत प्राप्त वित्तीय सहायता के माध्यम से 2020 में सफलतापूर्वक आर.ए.एस. परियोजना की स्थापना की। उन्होंने एक टिन की छत वाले शेड के नीचे कुल 6 लाख लीटर पानी के साथ 8 टैंकों का निर्माण किया। उन्हें वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान कुल 16 टन का उत्पादन मिला।

नीली क्रांति योजना के अंतर्गत, उन्हें ₹ 30.00 लाख की वित्तीय सहायता मिली। आर.ए.एस. में मत्स्यपालन करना उनके लिए आसान काम नहीं था, क्योंकि वे आर.ए.एस. तकनीक की आदी नहीं थी। पहले वर्ष में, उन्हें कई अप्रत्याशित परिस्थितियों का सामना करना पड़ा क्योंकि वह आर.ए.एस. की तकनीक से अच्छी तरह वाकिफ नहीं थी, लेकिन दूसरे वर्ष में, वह सिस्टम से अपेक्षाकृत परिचित हो गई और धीरे-धीरे सभी बाधाओं से निपटने में सक्षम हो गई।

आर.ए.एस. सिस्टम शुरू करके, उन्होंने कम जगह और श्रम के साथ अधिक मात्रा में मत्स्य उत्पादन करना सीखा। इसके अलावा, वह स्वादिष्ट मछली उत्पाद बेचकर अपने इलाके से रु.8.55 लाख का निवल लाभ प्राप्त करती है। वार्षिक कारोबार लगभग ₹ 14.80 लाख है। अब उनका परिवार बिना किसी परेशानी के अपने व्यवसाय का प्रबंधन करने में सक्षम है और युवाओं को रोजगार प्रदान कर सकता है। उनकी भविष्य की योजना गुवाहाटी के पास एक लाइव मछली बाजार परिसर स्थापित करने की है।

नाम	रंजीता सैकिया डेका
जिला और राज्य	कामरूप महानगर, असम
शैक्षणिक योग्यता	बी.ए.
श्रेणी	अनुसूचित जनजाति (एस.टी.)
व्यवसाय	मछली पालन
मोबाइल सं.	7002098870
स्थापना का वर्ष	2020
फर्म का नाम	रोडली इंक (ऑनलाइन सेवाएं) और रंजीता सैकिया डेका की आर.ए.एस.
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	आर.ए.एस. (आई.एम.सी., ग्रास और अमूर कार्प, सिंधी, कोई और पंगेशियस)
वार्षिक कारोबार	₹ 14.8 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	16 टन
रोजगार सृजित	3





मत्स्यपालन: एक आकर्षक व्यवसाय



नाम	उत्तम मंडल
जिला	उदलगुड़ी
राज्य	असम
शैक्षणिक योग्यता	कक्षा 10
श्रेणी	अनुसूचित जाति
व्यवसाय	मत्स्य किसान
मोबाइल सं.	9101413273
व्यावसाय	बीज उत्पादन और ग्रो-आउट कल्चर
स्थापना का वर्ष	2009
पद: मालिक	
फर्म का नाम	उत्तम मंडल मत्स्य फार्म
वार्षिक उत्पादन	5.9 लाख टन वार्षिक मत्स्य बीज 4.74 टन
वार्षिक कारोबार	₹ 34.31 लाख
रोजगार सृजित	2

श्री उत्तम मंडल असम के उदलगुड़ी में एक मत्स्य किसान हैं। 2009 में, मत्स्यपालन विभाग (डी.ओ.एफ.) के उदलगुड़ी कार्यालय से तकनीकी सहायता से, उन्होंने 0.50 हेक्टेयर के कुल जल क्षेत्र के दो तालाबों का निर्माण किया और इन तालाबों में वैज्ञानिक मत्स्यपालन शुरू किया। उन्होंने इससे प्राप्त लाभ का उपयोग करके अपनी मत्स्य कृषि का विस्तार किया और 1.20 एकड़ के कुल क्षेत्रफल के साथ एक और तालाब बनाया। वे जलकृषि में अधिक ज्ञान प्राप्त करने और अपने फार्म में आधुनिक तकनीकों का अभ्यास करने के लिए हमेशा उत्साहित रहते हैं। हाल ही में, उन्होंने एन.एफ.डी.बी.-उत्तर पूर्व क्षेत्र केंद्र, खानापारा द्वारा 3 से 5 मार्च 2022 तक कलाईगांव, उदलगुड़ी में मीठे पानी की जलकृषि में वैज्ञानिक तकनीकों पर तीन दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। वे ऑक्सीजन के स्तर में सुधार के लिए अपने तालाब में पैडल व्हील एयररेटर का उपयोग करते हैं और मछली को 26-28% कच्चे प्रोटीन की मात्रा वाले पेलेटेट सिंकिंग और फ्लोटिंग फिश फीड खिलाते हैं।

वे मत्स्य बीज पालन में भी लगे हुए हैं। वे मुख्य रूप से कैटला, रोहू, मृगल, अमूर कॉमन कार्प, सिल्वर कार्प और घास कार्प की उन्नत किस्मों के बीज पालन पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वित्त वर्ष 2021-22 में, उन्होंने 4.5 लाख फ्राई, 1.4 लाख फिंगरलिंग और 4,740 किलोग्राम टेबल मत्स्य उत्पादन किया। इन सभी स्रोतों से उनकी कुल शुद्ध आय वित्त वर्ष 2021-22 में ₹ 15.50 लाख थी।

स्थानीय मत्स्य पालक अब उचित मूल्य पर ई उच्च गुणवत्ता वाले मत्स्य बीज खरीदने के लिए उत्तम मंडल की मत्स्य बीज सुविधा पर निर्भर हैं। उनके मत्स्य फार्म का उपयोग डी.ओ.एफ., उदलगुड़ी द्वारा अन्य मत्स्य किसानों के लिए प्रदर्शन करने हेतु भी किया जाता है। उनकी उपलब्धियों के आधार पर, इनको राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस -2021 पर डी.ओ.एफ., उदलगुड़ी द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रगतिशील मत्स्य किसान के रूप में मान्यता दी गई थी।





मत्स्य प्रसंस्करण से समृद्धि



भाकृअनुप- केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान (आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.ई.), मुंबई ने असम के गुइजान गांव में पूर्वोत्तर पहाड़ी (एन.ई.एच.) योजना के तहत मूल्य वर्धित मत्स्य उत्पादों के लिए 200 किलोग्राम प्रतिदिन क्षमता का एक पायलट संयंत्र स्थापित किया है। इसका उद्घाटन 8 अक्टूबर, 2021 को किया गया था। तब से, आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.ई. द्वारा आयोजित चार प्रशिक्षण कार्यक्रमों से विभिन्न स्वयं सहायता समूहों (एस.एच.जी.) की 200 महिलाएं लाभान्वित हुईं। मार्च 2022 में, 20 सदस्यों वाली दो महिला एस.एच.जी. ने समान गुणवत्ता वाले मछली उत्पाद बनाने में अपने कौशल को उन्नत किया। यद्यपि उन्होंने अपने स्वयं सहायता समूहों का गठन किया था, लेकिन उनकी गतिविधि बहुत कम थी और मूल्य वर्धित मछली उत्पादों की तैयारी तकनीकों को सीखने तक आय नगण्य थी।

मूल्य वर्धित मछली उत्पादों की तैयारी के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान प्राप्त करने के बाद, 20 महिलाओं की टीम ने अप्रैल 2022 से अंशकालिक गतिविधि के रूप में अपने दम पर मूल्य वर्धित मछली उत्पादों का प्रसंस्करण और बिक्री शुरू की। उन्होंने पांच सदस्यों वाले उप-समूहों का गठन किया, प्रत्येक उप-समूह रोटेशन के आधार पर गतिविधि के लिए प्रतिदिन 3 से 4 घंटे व्यतीत करता है। वर्तमान में उनका मासिक कारोबार ₹ 40,000 है और मासिक शुद्ध लाभ ₹20,000 है।

आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.ई., मुंबई के तकनीकी मार्गदर्शन में असम कृषि विश्वविद्यालय, गैर सरकारी संगठन जीव सुरक्षा और स्थानीय मत्स्यपालन विभाग के एसोसिएट डायरेक्टर ऑफ एक्सटेंशन द्वारा स्थानीय स्तर पर उनकी निगरानी की जा रही है। महिलाएं अपनी याता जा रही रखने और अपने व्यवसाय का विस्तार करने की योजना बनाने के लिए उत्साहित हैं।

स्थापना का नाम	मूल्य वर्धित मछली उत्पादों के लिए पायलट स्केल प्लांट
जिला और राज्य	तिनसुकिया, असम स्थापना
वर्ष	2021
लाभार्थी	महिला स्वयं सहायता समूह
संपर्क व्यक्ति	श्रीमती रंजीता बनिया
फोन सं.	9678891071
व्यावसायिक गतिविधि	मूल्य वर्धित मछली उत्पादों की तैयारी और बिक्री
तकनीकी हस्तक्षेप	आई.सी.ए.आर.- सी.आई.एफ.ई.





बाढ़ से मत्स्यपालन द्वारा उत्कृष्ट आय



नाम	चंदन कुमार
जिला और राज्य	सीतामढ़ी, बिहार
शैक्षिक योग्यता	स्नातक की डिग्री
व्यवसाय	किसान
मोबाइल सं.	9431620811
स्थापना का वर्ष	2020-21
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	मत्स्यपालन
वार्षिक कारोबार	₹ 3.61 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	2.50 टन
रोजगार सृजित	20

चंदन कुमार बिहार के सीतामढ़ी जिले के परिहार के रहने वाले हैं। उन्होंने जलकृषि गतिविधि में जाने से पहले अनाज और सब्जियों की खेती की। जिस क्षेत्र में वह रहते हैं, वह प्रायः बाढ़प्रवण क्षेत्र है, जिससे उन्हें बार-बार फसलों का नुकसान उठाना पड़ता है। अपनी फसलों से मिलने वाली ₹ 50,000 - ₹ 70,000 की मामूली वार्षिक आय के साथ, उनके लिए अपनी वित्तीय जरूरतों का प्रबंधन करना मुश्किल था। इन बाधाओं ने उन्हें जलकृषि में स्थानांतरित होने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र कार्यालय का दौरा किया और विभिन्न मत्स्यपालन पद्धतियों, लाभों, मत्स्यपालन से संबंधित वैचारिक तकनीक आदि के बारे में जाना। इनके आधार पर, उन्होंने पॉलीकल्चर मत्स्यपालन पर एक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट राज्य मत्स्यपालन विभाग को सौंपी। उनकी परियोजना स्वीकृत हो गई और उन्हें खेत स्थापित करने के लिए वित्तीय सहायता के रूप में ₹2,66,500 मिले। बाकी बचे हुए ₹3,99,900 का निवेश उन्होंने खुद किया था। वर्ष 2021-22 में उनका कुल उत्पादन 2.32 लाख रुपये के शुद्ध लाभ के साथ 2.50 टन था।

श्री कुमार अच्छी गुणवत्ता वाले मत्स्य बीज का उपयोग करते हैं और अपने खेत के लिए अच्छी प्रबंधन गतिविधियों को अपनाते हैं। उन्होंने अपने प्रोजेक्ट से अपने गांव में 20 लोगों के लिए रोजगार पैदा किया है। वर्तमान में वह प्रगति से खुश हैं और वह आगामी वर्षों में अपने खेत का विस्तार करने और अधिक लाभ प्राप्त करने की आकांक्षा रखते हैं।





कृषि आधारित मात्स्यिकी के लिए सहकारिता



बिहार का रूह्नी मौन धनौती नदी का कट-ऑफ विसर्पण है जो मौसमी रूप से एक लिंक चैनल के माध्यम से जुड़जाता है। सहकारी समिति “मोतिहारी प्रखंड मत्स्यजीवी सहयोग समिति लिमिटेड” के तहत लगभग 150 मछुआरे निर्वाह मछली पकड़ने का अभ्यास करते हैं। यद्यपि मौन में मत्स्य उत्पादन क्षमता 976-1003 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष है, वैज्ञानिक प्रबंधन व्यवस्थाओं के अभाव में प्राकृतिक मत्स्यपालन से उपज 115-130 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष के दायरे में पाई गई। आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.आर.आई. ने हितधारकों के भागीदारी मत्स्य प्रबंधन मॉडल (सह-प्रबंधन) के माध्यम से बिहार के रूह्नी मौन में स्थायी तरीके से मत्स्यपालन विकास नामक एक अभिनव परियोजना शुरू की, जिसे एन.एफ.डी.बी. द्वारा वित्त पोषित किया गया है ताकि रूह्नी मौन के किसानों को मछली की उपज, विशेष रूप से कृषि आधारित मत्स्यपालन (सी.बी.एफ.) में सी.आई.एफ.आर.आई. की प्रौद्योगिकी में प्रदर्शित और प्रशिक्षित किया जा सके। आईसीएआर-सी.आई.एफ.आर.आई. ने मछुआरों को संगठित किया और उन्हें सीबीएफ पर जागरूकता और प्रशिक्षण दिया।

सितंबर से अक्टूबर के बाद से चरणबद्ध तरीके से मौन में कुल 1,68,000 उन्नत फिंगरलिंग स्टॉक किए गए थे, जब बाढ़ का खतरा कम था। सितंबर से बंद मौसम के बाद हार्वेस्ट शुरू हुई और जनवरी-फरवरी के दौरान चरम पर पहुंच गई। जैसे-जैसे हार्वेस्ट आगे बढ़ी, इस फसल पैटर्न ने मछली के लिए अधिक स्थान और प्राकृतिक भोजन बनाया। जनवरी-फरवरी में एक और बीज स्टॉकिंग की गई थी। यह बीज सितंबर से फसल के आकार तक पहुंच जाएगा। मौन के सीमांत क्षेत्रों में स्थापित 8 पूर्वनिर्मित “सी.आई.एफ.आर.आई. पेन एच.डी.पी.ई.” में भारतीय प्रमुख कार्प और विदेशी कार्प के उन्नत फिंगरलिंग के उत्पादन के माध्यम से गुणवत्ता वाले बीज की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित की गई थी। इसके अलावा, टेबल-आकार के पंगेशियस के उत्पादन के लिए गहरे पूल में 6 उथले “सी.आई.एफ.आर.आई. जी.आई. केजों” की बैटरी स्थापित की गई थी। यह उन्हें मछली पकड़ने पर प्रतिबंध की अवधि के दौरान प्रतिपूरक आय प्रदान करेगा। मत्स्य बीज के समय पर भंडारण का समर्थन करने के लिए फिंगरलिंग के पालन के लिए मौन के किनारे छह नर्सरी तालाबों की खुदाई भी की गई थी।

जिला और राज्य	पूर्वी चंपारण, बिहार
स्थापना वर्ष	2017
लाभार्थी	फिशर सामूहिक
व्यावसायिक गतिविधि	कृषि आधारित मत्स्यपालन, बीज उत्पादन
तकनीकी हस्तक्षेप	आई.सी.ए.आर.- सी.आई.एफ.आर.आई.





सरकारी शिक्षक का प्रगतिशील मत्स्य कृषक बनना



नाम	राजेश पासवान
जिला और राज्य	पटना, बिहार
शैक्षिक योग्यता	ग्रेजुएशन
व्यवसाय	सरकारी शिक्षक
मोबाइल सं.	6201005266
स्थापना का वर्ष	2021
फर्म का नाम:	
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	आई.एम.सी. और बिगहेड कार्प की पॉली कल्चर
वार्षिक कारोबार	₹ 5.5 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	3.20 टन
रोजगार सृजित	3

राजेश पासवान बिहार के पटना जिले के फतेहा गांव में एक सरकारी शिक्षक हैं। वे अपने पेशे के माध्यम से बहुत कम कमा रहे थे, जिसके कारण उन्हें आय के वैकल्पिक स्रोत की तलाश की। मछली पकड़ने के क्षेत्र में विशाल क्षमता को देखते हुए, उन्होंने मत्स्यपालन शुरू करने का निश्चय किया। उन्होंने लगभग एक एकड़ के एक छोटे से तालाब में कार्प मोनोकल्चर शुरू किया, जिससे उन्हें पारिवारिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त पैसा नहीं मिला। उन्होंने मत्स्यपालन में प्रदान की जाने वाली सेवाओं के बारे में ग्रामश्री किसान में एक विज्ञापन देखा। वह मत्स्यपालन में सर्वोत्तम प्रबंधन प्रथाओं के बारे में उत्सुक थे, इसलिए, उन्होंने उनसे संपर्क किया और ग्रामश्री द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में से एक में भाग लिया। वहां श्री पासवान को मत्स्यपालन विशेषज्ञ से जानकारी मिली कि मछली की वृद्धि और आदर्श स्टॉक घनत्व को कैसे बनाए रखा जाए और कुल उत्पादन कैसे बढ़ाया जाए।

₹ 5.30 लाख की कुल परियोजना लागत के साथ, वह अब 2.5 टन की उत्पादन क्षमता के साथ 1.9 एकड़ के अपने खेत पर तालाबों की 2 इकाइयों में इंडियन मेजर कार्प (आई.एम.सी.) और बिगहेड कार्प की पॉलीकल्चर सफलतापूर्वक कर रहा है।

ग्रामश्री के माध्यम से सीखी गई प्रथाओं को अपनाकर, उन्होंने मछली मृत्यु दर को कम किया। वह संक्रमित मछली पर फिश सैनिटाइजर का इस्तेमाल करते हैं, जो 2-3 दिनों के भीतर मछली को कीटाणुरहित कर देता है। वह खेत से बने फीड के हैंगिंग बैग का उपयोग करके मछली को खिलाता है, जो फीड की बर्बादी को कम करता है और इसे अमोनिया संरचनाओं को कम करने से रोकता है। अमोनिया गठन को कम करता है। इससे उनका कुल मत्स्य उत्पादन बढ़ा है और ₹1.50 लाख का लाभ प्राप्त हुआ है।

श्री पवन की सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है और वे परिवार की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हैं। उन्होंने 3 लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा किए। उनकी योजना 91.40 सेंट भूमि पर एक और तालाब बनाने की है और गरीब लोगों के लिए रोजगार के अधिक अवसर पैदा करने का इरादा है। उन्होंने साझा किया कि ग्रामश्री ने तालाब के निर्माण से लेकर उपज के विपणन तक एक छोर अर्थात् अंतिम छोर तक हाथ पकड़कर समर्थन के साथ उनकी मदद की है। अपने मत्स्य विशेषज्ञों की मदद से, वह लाभ प्राप्त करने में सक्षम था।





सिरसा मौन में वैज्ञानिक हस्तक्षेप



सिरसा मौन एक मौसमी रूप से खुली ऑक्सबो झील है जो एक लिंक चैनल के माध्यम से धनौती नदी से जुड़ी हुई है। सहकारी समिति “मोतिहारी प्रखंड मत्स्यजीवी सहयोग समिति लिमिटेड” के तहत 125 मछुआरों द्वारा जल निकाय में मछली पकड़ने का काम किया जाता है। इस मौन की मत्स्य उत्पादन क्षमता 1,181-1,332 किलोग्राम/हेक्टेयर/वर्ष होने का अनुमान है। हालांकि, ऑटो-भर्ती में विफलता, लिंक चैनल का संकुचन, खरपतवार संक्रमण, शिकारियों, माला और गुणवत्ता वाले मत्स्य बीज की अनुपलब्धता, अनुचित प्रजातियों की संरचना के साथ अपर्याप्त स्टॉकिंग, बीज पालन सुविधा की कमी आदि के कारण उत्पादकता घटकर 140 किलोग्राम / हेक्टेयर / वर्ष हो गया था। एन.एफ.डी.बी. की वित्तीय सहायता से, “मत्स्य उत्पादन क्षमता का दोहन करने हेतु इन-सीटू मत्स्य बीज पालन और मत्स्यपालन में वृद्धि करने की तकनीकों के माध्यम से बिहार के सिरसा मौन में मत्स्यपालन विकास” इस मौन के मत्स्यपालन को विकसित करने के लिए आईसीएआर-सी.आई.एफ.आर.आई. ने एक अभिनव पायलट परियोजना लागू की।

आईसीएआर-सी.आई.एफ.आर.आई. ने मछुआरों को मानकीकृत कृषि-आधारित मत्स्यपालन (सीबीएफ) प्रोटोकॉल का पालन करने के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया। उन्नत कार्प फिंगरलिंग्स को वर्ष में दो बार मौन में स्टॉक किया गया था, एक बार अक्टूबर में (40%) मछली पकड़ने के प्रतिबंध तक और दूसरा गर्म जलवायु परिस्थितियों की शुरुआत के साथ फरवरी के मध्य (60%) में सिरसा मौन में 2018 और 2019 में क्रमशः कुल 1,52,000 कार्प बीज छोड़े गए थे। कार्प बीज का एक हिस्सा पेन में उठाया गया था और बाकी एक वाणिज्यिक हैचरी से खरीदा गया था। हार्वेस्ट सितंबर में शुरू की गई थी, जो जनवरी-फरवरी के दौरान चरम पर थी। फसल पैटर्न ने स्टॉक की गई मछलियों के लिए अधिक स्थान और प्राकृतिक भोजन की उपलब्धता की आवश्यकता हुई। सोसाइटी को टेबल-आकार मछली कृषि के लिए 12 सी.आई.एफ.आर.आई. मॉडल जीआई केज और उन्नत कार्प फिंगरलिंग के उत्पादन के लिए पूर्वनिर्मित “सी.आई.एफ.आर.आई. पेन एच.डी.पी.ई.”, केज और पेन कृषि के लिए “सी.आई.एफ.आर.आई. केज ग्रे” फ्रीड, मोनो-फिलामेंट गिल नेट (छोटी मछलियों को पकड़ने को हतोत्साहित करता है), एक एफ.आर.पी. नाव और एक फलक-निर्मित नाव प्रदान की गई थी। 72 दिनों के बाद नवंबर में कुल 576 किलोग्राम उन्नत फिंगरलिंग की हार्वेस्ट की गई और मौन को छोड़ दिया गया।

पंगेशियस और सिंधी को 2018 और 2019 में क्रमशः बंद मछली पकड़ने के मौसम के दौरान केज में सुसंस्कृत किया गया था, जिससे प्रत्येक को रु.2,00,950 और रु34,800 का राजस्व प्राप्त हुआ था।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण में सी.बी.एफ. के कार्यान्वयन से मत्स्य उत्पादन (432 किलोग्राम / हेक्टेयर / वर्ष), मछली पकड़ने के मानव-दिवस (32 से 62 दिन), और दो वर्ष के भीतर उनकी आय दोगुनी हो गई। क्षेत्र में मछुआरों के रोजगार की तलाश में दूसरे राज्यों में पलायन की प्रथा भी कम हो गई।

जिला और राज्य	पूर्वी चंपारण, बिहार
स्थापना वर्ष	2017
लाभार्थी	फिशर सामूहिक
व्यावसायिक गतिविधि	कृषि आधारित मत्स्यपालन, बीज उत्पादन
तकनीकी हस्तक्षेप	आई.सी.ए.आर.- सी.आई.एफ.आर.आई.





आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.आर.आई. द्वारा करारिया मौन का परिवर्तन



जिला और राज्य	पूर्वी चंपारण बिहार
स्थापना वर्ष	2017
लाभार्थी	फिशर सामूहिक
व्यावसायिक गतिविधि	कृषि आधारित मत्स्यपालन, बीज उत्पादन
तकनीकी हस्तक्षेप	आई.सी.ए.आर.- सी.आई.एफ.आर.आई.

करारिया मौन में, लगभग 132 मछुआरे प्राथमिक मछुआरा सहकारी समिति “मोतिहारी प्रखंड मत्स्यजीवी सहयोग समिति लिमिटेड” के तहत निर्वाह मछली पकड़ने का अभ्यास करते हैं। यद्यपि करारिया मौन की अनुमानित उत्पादन क्षमता 3,183 से 3,437 किलोग्राम/हेक्टेयर/वर्ष की सीमा में है, दर्ज उत्पादन 190 किलोग्राम/हेक्टेयर/वर्ष था। यह वैज्ञानिक प्रबंधन की अनुपस्थिति के कारण था। इस मुद्दे को कम करने के लिए, आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्यपालन अनुसंधान संस्थान (आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.आर.आई.) ने एन.एफ.डी.बी. से वित्तीय सहायता के साथ एक अभिनव पायलट परियोजना “समुदायों के सशक्तिकरण और क्षमता निर्माण और बेहतर आजीविका के लिए हितधारकों की भागीदारी के माध्यम से बिहार के करारिया मौन में मत्स्य विकास” को लागू किया।

आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.आर.आई. ने लाभार्थियों को कृषि आधारित मत्स्यपालन (सी.बी.एफ.) के मानक प्रोटोकॉल का पालन करने की सलाह दी, जैसे उपयुक्त मछली प्रजातियों का चयन और उनकी संरचना, बीज का आकार, स्टॉकिंग घनत्व, स्टॉकिंग समय/मौसम, और हार्वेस्ट अनुसूची। 2,46,000 संख्या में रोहू, कतला, और मृगल, ग्रास कार्प और कॉमन कार्प की उन्नत फिंगरलिंग को खुले पानी में कंपित तरीके से छोड़ा गया। इसके अतिरिक्त, मछुआरों को उत्खनित नर्सरी तालाबों में अतिशीतित बीज के पालन और उत्पादन में प्रशिक्षित किया गया था। प्रारंभ में, भंडारित बीजों को आउटसोर्स किया गया था; बाद के वर्षों में, प्रशिक्षित मछुआरों ने खुदाई किए गए तालाबों से बीज उत्पादन शुरू किया। 1.50 हेक्टेयर क्षेत्र (संख्या में 4) और “सी.आई.एफ.आर.आई. पेन एच.डी.पी.ई.” (संख्या में 8) को मापने वाले नर्सरी तालाबों ने इस मौन में सीबीएफ को आगे बढ़ाने के लिए गुणवत्ता वाले बीजों का एक निरंतर स्रोत प्रदान किया। मछुआरों को मोनोफिलामेंट गिल नेट, एक फाइबर बोट, और दो तख्त-निर्मित लकड़ी की नावें सुरक्षा गश्त, पेन निगरानी, मछली पकड़ने आदि के लिए प्रदान की गईं। एक तालाब में स्वदेशी कैटफिश सिंधी के टेबल मत्स्य उत्पादन का एक अन्य पायलट परीक्षण भी किया गया था। दिसंबर के अंत में फिंगरलिंग्स को कम घनत्व (14/एम3) पर स्टॉक किया गया था और मछलियों को सी.आई.एफ.आर.आई. केजरो प्लोटिंग फीड से खिलाया गया था। 5 महीने की कृषि के बाद, उत्पादन 93 किलोग्राम था, जिसकी कीमत ₹ 400 प्रति किलोग्राम थी।

परियोजना ने बीज उत्पादन प्रणाली के संचालन, उत्पादन और प्रबंधन के लिए मछुआरों की क्षमता में सुधार किया। वर्तमान में, सीबीएफ दृष्टिकोण के माध्यम से, उत्पादन 190 से 592 किग्रा / हेक्टेयर / वर्ष और मछली पकड़ने के दिन 44 दिनों से बढ़कर 2017 से 2020 तक 151 दिन हो गए।





मत्स्य उत्पादन बढ़ाने में शरणार्थी



1960 में, स्वर्गीय श्री सतीश मंडल का परिवार शरणार्थी के रूप में बांग्लादेश से भारत में छत्तीसगढ़ आए। 1985 में, उन्होंने और उनके तीन बेटों ने अपनी आजीविका कमाने के लिए एक व्यवसाय के रूप में जलकृषि शुरू की। वे आंध्र प्रदेश से रोहू, कटला और पंगेशियस जैसी मछली की किस्मों का व्यापार करते हैं और उन्हें छत्तीसगढ़ में व्यापार करते हैं और अच्छा लाभ कमाते हैं।

2007 में, मंडल बंधुओं ने ₹.25 लाख के निवेश से एक तालाब का निर्माण किया और राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आर.के.वी.वाई.) के तहत ₹.10 लाख की सब्सिडी प्राप्त की। तालाब में रोहू मछली पालने से छह महीने में उन्होंने अच्छा मुनाफा कमाया। इसने मंडल बन्धुओं को अपने मत्स्यपालन व्यवसाय का विस्तार करने के लिए प्रेरित किया। 3 सितंबर 2008 को, मंडल बंधुओं ने अपनी खुद की कंपनी एम.एम. फिश सीड कल्टीवेशन प्राइवेट लिमिटेड सालाना ₹.20 लाख लाभ कमाई के साथ पंजीकृत की। 2017 से, कंपनी एक हैचरी स्थापित करके मोनो सेक्स तिलापिया और पंगेशियस बीजों का उत्पादन कर रही है। जीवित पंगेशियस को आसपास की कंपनी फार्मों को बेचा जाता है। मत्स्यपालन में तेजी से विस्तार ने मंडल भाइयों को एक समूह “मंडल ग्रुप ऑफ कंपनीज प्राइवेट लिमिटेड” के तहत विभिन्न व्यवसायों में विविधता लाने के लिए प्रेरित किया है। वर्तमान में, कंपनियों का समूह छत्तीसगढ़ के सात जिलों में तालाब क्षेत्र के 140 हेक्टेयर (108 हेक्टेयर अपने खेत और 32 हेक्टेयर पट्टे पर) पर अपना उत्पादन कर रहा है, जहां भारतीय प्रमुख कार्प, पंगेशियस, मोनो सेक्स तिलापिया, कोई, चितोल का उत्पादन किया जाता है। कंपनी ने रायपुर और बिलासपुर में मत्स्य किसान सहायता केंद्र भी खोले हैं

एम.एम. फिश सीड कल्टीवेशन प्राइवेट लिमिटेड ने मत्स्यपालन के क्षेत्र में कई पुरस्कार और मान्यताएँ प्राप्त की हैं। कंपनी को भारत सरकार द्वारा 2018 में श्रेष्ठ मत्स्य पालक पुरस्कार, कृषि रत्न पुरस्कार, कृषि बसंत पुरस्कार, श्रीमती बिलासा बाई केवतीन मत्स्य पुरस्कार और राज्य के सर्वश्रेष्ठ मत्स्य किसान जैसे अनेक राष्ट्रीय और राज्य पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

नाम	सुकदेव मंडल
जिला और राज्य	रायपुर, छत्तीसगढ़
शैक्षिक योग्यता	अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर
श्रेणी	सामान्य
व्यवसाय	मत्स्यपालन
मोबाइल सं.	9755347874
फर्म का नाम	एम.एम. फिश सीड कल्टीवेशन प्राइवेट लिमिटेड
स्थापना का वर्ष	1985
पद	निदेशक
व्यावसायिक गतिविधि	बीज उत्पादन, ग्रो-आउट, मत्स्य फ्रीड और मछली और मछली तालाब संबंधित उत्पादों की बिक्री
वार्षिक कारोबार	₹ 100 करोड़
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	ग्रो-आउट- 8000 टन मत्स्य बीज-5 करोड़ (संख्या)
रोजगार सृजित	प्रत्यक्ष- 630 अप्रत्यक्ष रूप से- 2700





अग्रवाल जलकृषि की ओर



नाम	संजय अग्रवाल
जिला और राज्य	रायपुर, छत्तीसगढ़
शैक्षणिक योग्यता	12वीं कक्षा
श्रेणी	सामान्य
मोबाइल सं	7024148417
स्थापना का वर्ष	2008
फर्म का नाम	मेसर्स अग्रवाल ट्रेडिंग कंपनी
पद	निदेशक
व्यावसायिक गतिविधि	सी.आई.एफ.ए.एक्स. मत्स्य फीड का उत्पादन और वितरण
वार्षिक कारोबार	₹15 करोड़
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	4000 टन
रोजगार सृजित	47

2008 में स्थापित अग्रवाल ट्रेडिंग कंपनी आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.ए. की तकनीकों (सी.आई.एफ.ए.एक्स, डायग्नोसिस किट, सी.आई.एफ.ए. कार्प स्टार्टर, सी.आई.एफ.ए. कार्प ग्रोवर, और नैनो प्लस) का निर्माण, विपणन और प्रचार करने वाली प्रमुख कंपनियों में से एक है। अग्रवाल ट्रेडिंग कंपनी आईएसओ 9001:2015 प्रमाणित साझेदारी फर्म है, जो अपने इष्टतम गुणवत्ता वाले उत्पादों और पारदर्शी सौदों के लिए लोकप्रिय है।

श्री अग्रवाल ब्रांडिंग के प्रस्तावक हैं और इसलिए उनके पास सी.आई.एफ.ए.एक्स, सी.आई.एफ.ए. कार्प स्टार्टर, सी.आई.एफ.ए. कार्प ग्रोवर और सी.आई.एफ.ए. नैनो के लिए पंजीकृत ट्रेडमार्क हैं और उन्होंने दो तकनीकों के लिए पेटेंट प्राप्त किया है। उन्होंने 2014 में सी.आई.एफ.ए.एक्स उत्पादन इकाई, प्रति दिन 1,000 लीटर की उत्पादन क्षमता, 2017 में रोग निदान उत्पादन इकाई और 2020 में 200 टन की फीड मिल इकाई जैसी इकाइयों की बेहतर स्थिति के लिए वर्षों से मत्स्यपालन से संबंधित विभिन्न मशीनरी और बुनियादी ढांचे की स्थापना की। श्री संजय अग्रवाल ने भारत के विभिन्न हिस्सों में स्थित फ्रीड कंपनियों के आधिकार्यों का दौरा किया और प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी के बारे में गहन ज्ञान प्राप्त करने के लिए जैसे कि फ्रीड सामग्री को पीसने और मिलाने, निष्कर्षण तकनीक, सुखाने और पैकिंग, और पुनः प्रसंस्करण गतिविधियों और उत्पाद मूल्य की बिक्री का पालन किया। आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.ए. द्वारा उत्पादों का व्यावसायीकरण के लिए कंपनी ने उल्लेखनीय संघ विकसित किए जिसके कारण वे डीलर नेटवर्क और बैंकों के साथ वित्तीय जुड़ाव के माध्यम से गुणवत्ता वाले कच्चे माल और बाजार के उत्पादों को प्राप्त करने में समर्थ हुए। कंपनी ने मछली रोगों के लिए अनेक निदान किट बनाने की पहल की।

वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान कंपनी ने ₹15 करोड़ के वार्षिक कारोबार के साथ ₹30 लाख का शुद्ध लाभ कमाया है। कोविड-19 के दौरान, कंपनी को परिवहन पर प्रतिबंध के कारण उत्पादों की खरीद और आपूर्ति के साथ चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन बाद में बिना किसी नुकसान के इसे अच्छी तरह से प्रबंधित किया। जलकृषि के विकास के लिए आवश्यक प्रौद्योगिकी की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए कंपनी एक वर्ष में 20,247 किसानों तक पहुंच गई है। उन्होंने विभिन्न विषयों पर ज्ञान और प्रौद्योगिकी तक पहुंच के साथ मछुआरा समुदायों को समृद्ध करने के लिए 30 जागरूकता कार्यक्रम, 10 टी.ओ.टी. (प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण), और 17 सेमिनार / कार्यशालाएं आयोजित कीं।





पंगेशियस पालें और भोजन का आनंद लें

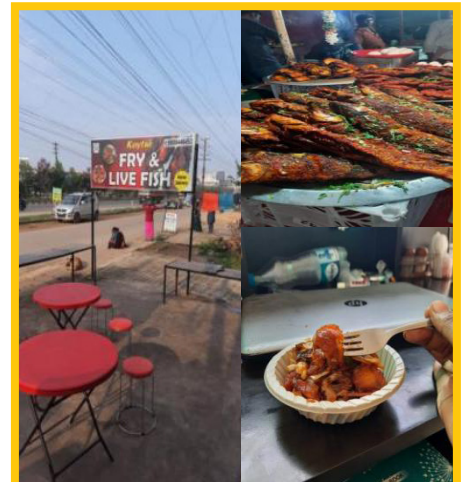


सुश्री वंदना चुरेंद्र और श्री पुष्पक राठिया छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले के दुगाटोला गांव की रहने वाले हैं। सुश्री चुरेंद्र ने खाद्य प्रक्रिया इंजीनियरिंग में एम.टेक किया। उन्होंने और श्री राठिया ने संयुक्त रूप से 2019 में बायोफ्लोक तकनीक में कदम रखा। तालाब की कृषि की तुलना में, उन्होंने बायोफ्लोक तकनीक का उपयोग करके 30-50% अधिक मत्स्य उत्पादन हासिल किया। वे मुख्य रूप से पेंगासियस फिंगरलिंग और 0.90 से 1.5 किलोग्राम पंगेशियस के विपणन योग्य आकार बेचते हैं। इसके अलावा, उनके पास “फ्राइड फिश आउटलेट्स” और “लाइव फिश आउटलेट्स” भी हैं। वे स्थानीय बाजारों में मछली की आपूर्ति करते हैं और अपने स्वयं के आउटलेट के माध्यम से भी बेचते हैं। तली हुई मछली की दुकानों पर, कुरकुरे मछली, फिश बर्गर, फिश फिंगर, तवा फिश फ्राई, फिश मंचूरियन आदि जैसे स्नेक्स अच्छे लाभ मार्जिन पर बेचे जाते हैं।

वे लाइनर टैंक, गोल टैंक और आयताकार टैंक के निर्माण और विभिन्न सांस्कृतिक तकनीकों पर किसानों को प्रशिक्षण प्रदान करने में भी लगे हुए हैं। कंपनी कुल मिलाकर लगभग 40-50 व्यक्तियों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मत्स्यपालन, टैंक निर्माण कार्य, मत्स्य परिवहन कार्य आदि में रोजगार देती है। इससे लोगों के बीच सहयोग होता है और इलाके की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार होता है।

कंपनी की योजना तली हुई मछली के आउटलेट खोलने और पूरे भारत में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की है। वे पहले ही छत्तीसगढ़ के रायपुर में 3 आउटलेट खोल चुके हैं। अगले 3 महीनों के भीतर, छत्तीसगढ़ के दुर्ग और रायपुर क्षेत्र में और 10 और आउटलेट खोलने वाले हैं।

नाम	वंदना चुरेंद्र और पुष्पक राठिया
जिला और राज्य	दुर्ग, छत्तीसगढ़
शैक्षिक योग्यता	एम. टेक. खाद्य प्रसंस्करण इंजीनियरिंग
श्रेणी	एसटी
व्यवसाय	मत्स्यपालन और मछली विपणन
मोबाइल सं.	7999521372
फर्म का नाम	कोयतूर फिश फार्मिंग प्राइवेट लिमिटेड
स्थापना का वर्ष	2019
पद	निदेशक
व्यावसायिक गतिविधि	(पंगेशियस) की बायोफ्लोक कृषि, जीवित मछलियों और मछली खाद्य उत्पादों की खुदरा बिक्री
वार्षिक कारोबार	₹ 56 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	60 टन
रोजगार सृजित	34





पावर प्लांट से मत्स्यपालन में सशक्त प्रौद्योगिकी की यात्रा

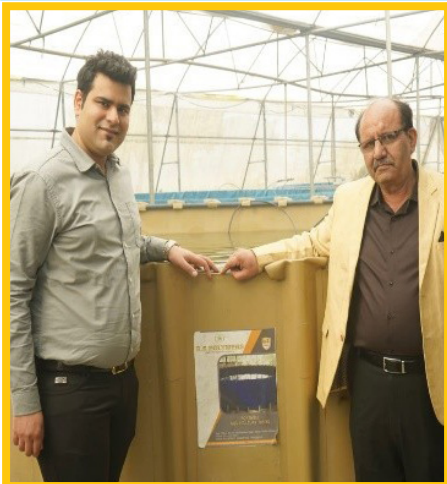


नाम	सिद्धार्थ मेहता
जिला और राज्य	पश्चिम शालीमार बाग, दिल्ली
शैक्षिक योग्यता	अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में पी.जी.
श्रेणी: सामान्य व्यवसाय	व्यवसाय
मोबाइल सं	9310670971
स्थापना का वर्ष	1988
फर्म का नाम	आर.एस. पॉलिमर
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	आर.एस. / बायोफ्लोक / कोल्ड स्टोरेज / केज कल्चर निर्माता और निर्यातक।
वार्षिक कारोबार	₹ 43.61 करोड़
वार्षिक उत्पादन	1000 टन
रोजगार सृजित	110

श्री विमल मेहता के स्वामित्व में आर.एस. पॉलिमर की स्थापना 1988 में हुई थी और यह थर्मल और हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट्स को क्रियान्वित करने वाली अग्रणी कंपनियों में से एक है तथा एक्वाकल्चर टैंक, फिश फीड, फिश फार्मिंग टैंक और बायोफ्लोक टैंक आदि के निर्माता और आपूर्तिकर्ता हैं। उत्तराधिकारी के रूप में, उनके बेटे मि. सिद्धार्थ मेहता, जिन्होंने इंटरनेशनल बिजनेस में पोस्ट ग्रेजुएशन किया था, ने मत्स्यपालन क्षेत्र में व्यावसायिक संभावनाओं पर ध्यान दिया। ऐसा करने के लिए, उन्होंने मत्स्यपालन क्षेत्र में नई तकनीकों को सीखने के लिए पूरी दुनिया की यात्रा की। थाईलैंड और सिंगापुर में 'मछली और झींगा की खेती में आधुनिक तकनीक' पर सेमिनार में भाग लेने के दौरान, उन्होंने उच्च घनत्व वाली मत्स्यपालन के लिए री-सर्कुलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम (आर.एस.एस.) और बायोफ्लोक को सबसे प्रभावी तकनीकों के रूप में देखा। उन्होंने महसूस किया कि इन तकनीकों को शुरू करने से किसानों को काफी मदद मिलेगी, इसलिए उन्होंने उत्पादन बढ़ाने और फसल के नुकसान को कम करने के लिए 2012 में आर.एस. पॉलिमर की एक सहायक कंपनी आर.एस. पॉलीप्लास्ट की शुरुआत की।

मत्स्य किसानों को सशक्त बनाने की दृष्टि से, भारत में जलकृषि उद्योग में नये उपायों/नवोन्मेषों के लिए अनुसंधान और विकास के साथ-साथ अंतर्देशीय खेती की आधुनिक तकनीकों के मुफ्त तकनीकी प्रशिक्षण, प्रदर्शन और विकास के संचालन के लिए एक एकड़ भूमि पर आर.एस. पॉलीप्लास्ट की स्थापना की गई थी। इसके अतिरिक्त, आर.एस. पॉलीप्लास्ट ने भारतीय वायु सेना के सहयोग से पूर्व सैनिकों की सहयोग करने के लिए 'बायोफ्लोक के माध्यम से विनियोजन' कार्यक्रम, भारतीय वायु सेना के विधवाओं और विकलांगों के समर्थन के लिए डिजाइन किए गए 'आधुनिक जलकृषि के माध्यम से रोजगार' के साथ अभिसरण में आय उत्पन्न करने के लिए तथा जलकृषि के माध्यम से युवा उद्यमियों को सहायता के माध्यम से विशेष रोजगार सृजन की है।

आज, आर.एस. पॉलिमर अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी इन-हाउस विनिर्माण संयंत्रों के साथ बायोफ्लोक और आर.एस.एस. इकाइयों के लिए आवश्यक सभी उत्पादों के स्रोत के लिए वन-स्टॉप समाधान प्रदान करता है। उन्होंने अपने संयंत्र स्थापित करने में 10,000 मत्स्य किसानों को लाभान्वित किया। इसके अतिरिक्त, आर.एस. पॉलीप्लास्ट में 4 टन/दिन की क्षमता वाली एक इन-हाउस कोल्ड स्टोरेज इकाई और प्रसंस्करण सुविधा है। वे उन किसानों को प्रतिस्पर्धी मूल्य भी प्रदान करते हैं जो अपनी फसल बेचने में रुचि रखते हैं।





बायोफ्लोक: लाभदायक व्यापार



श्री जहीर करमाली उत्तरी गोवा जिला, गोवा के बेरी गांव के रहने वाले हैं। वे खुदरा व्यापार में लगे हुए थे और उनमें ऐसी चीज में विविधता लाने की इच्छा थी जो न केवल आशाजनक हो बल्कि टिकाऊ भी हो। बढ़ती मांग की संभावनाओं और आर्थिक व्यवहार्यता के कारण वह जलकृषि में रुचि रखते थे। इसलिए, उन्होंने प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (पी.एम.एम.एस.वाई.) के तहत गतिविधि “मध्यम बायोफ्लोक का निर्माण” गतिविधि के लिए आवेदन किया और वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान 120 एम 3 मात्रा के साथ 8 टैंकों का सफलतापूर्वक निर्माण किया। इस योजना के तहत, उन्हें ₹ 1.39 करोड़ की कुल परियोजना लागत के साथ ₹20 लाख की वित्तीय सहायता और बैंक से ₹150 लाख का ऋण प्राप्त हुआ।

उन्होंने बायोफ्लोक और आर.ए.एस. सिस्टम की फ्यूजन तकनीक का उपयोग करके अपना फार्म स्थापित किया है, जिसमें वे सीबास की खेती करते हैं और फसल को ₹ 650 प्रति किलोग्राम की दर से बेचते हैं। प्रत्येक टैंक में अलग-अलग उपकरण होते हैं, जो प्रत्येक इकाई को अधिक कुशल बनाते हैं।

उनका सुझाव है कि उनके मॉडल को पूरे भारत में दोहराया जा सकता है क्योंकि इसमें युवाओं के लिए रोजगार पैदा करने की क्षमता है। यह तकनीक समुद्री मात्स्यिकी के शोषण को कम करती है या अधिक वैज्ञानिक ढंग से लागू की जा सकती है और यह समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण को बढ़ावा देती है। उन्होंने ज़श फार्म को केकड़े और मसल कृषि में विस्तारित करने की योजना बनाई है।

नाम	मैसर्स ज़श फार्म
जिला और राज्य	उत्तरी गोवा, गोवा
शैक्षणिक योग्यता	बी.कॉम. श्रेणी: सामान्य
व्यवसाय	खुदरा व्यापार
मोबाइल सं.	9326144800
स्थापना का वर्ष	2021
फर्म का नाम	
मैसर्स ज़श फार्म की स्थिति	पार्टनर
व्यावसायिक गतिविधि	बायोफ्लोक में समुद्री बास का संवर्धन
वार्षिक कारोबार	₹ 68 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	48 टन
रोजगार सृजित	12





समृद्धि: तालाब से थाली तक



नाम	मनोज मोहनलाल शर्मा
जिला और राज्य	सूरत, गुजरात
शैक्षिक योग्यता	पीएच.डी.
व्यवसाय	मत्स्य उद्यमी
मोबाइल सं.	9824112856
फर्म का नाम	मयंक एक्वाकल्चर प्राइवेट लिमिटेड
स्थापना का वर्ष	2005
पद	निदेशक
व्यावसायिक गतिविधि	झींगा पालन
वार्षिक कारोबार	₹ 25 करोड़
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	500 टन
रोजगार सृजित	185

डॉ. मनोज मोहनलाल शर्मा का जन्म महाराष्ट्र के नांदेड़ में हुआ था और बचपन से ही मत्स्यपालन क्षेत्र में उनकी गहरी रुचि रही है। सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ फिशरीज एजुकेशन, मुंबई से फिशरीज रिसोर्स मैनेजमेंट में मास्टर्स की पढ़ाई की। उनकी विशेषज्ञता सतत झींगा पालन में निहित है। वर्तमान में, डॉ. शर्मा मयंक एक्वा प्रोडक्ट्स, गुजरात के निदेशक हैं। वे सूरत में नीली क्रांति वाले प्रमुख व्यक्तियों में से एक हैं और उन्होंने तटीय मौन को झींगा के लिए सबसे व्यवहार्य कृषि क्षेत्रों में से एक में बदलने और बदले में हजारों लोगों को आजीविका प्रदान करने में मदद की है। झींगा कृषि में बेहतर प्रबंधन पद्धतियों पर चर्चा करने के लिए उन्हें कई देशों में एक वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया है।

मयंक एक्वाकल्चर प्राइवेट लिमिटेड (एम.ए.पी.एल.) अब गुजरात में 250 हेक्टेयर झींगा फार्म से झींगा पालन में अग्रणी कंपनियों में से एक है। फार्म सूरत, भरुच और भावनगर जिलों को शामिल करते हुए पूरे गुजरात में फैले हुए हैं। उनकी एक्वाकल्चर प्रोबायोटिक उत्पाद लाइन, “विवालाइन” को 2013 में लॉन्च किया गया था। उत्पाद लाइन रोग की रोकथाम और सतत झींगा कृषि का समर्थन करती है। उन्होंने 2019 में मयंक एक्वा प्रोडक्ट्स की स्थापना की और मल्टी-फेज इनडोर झींगा कृषि तकनीक में कदम रखा, जिसमें संपूर्ण जैव-सुरक्षा प्रोटोकॉल के तहत झींगा पोस्ट-लार्वा का इनडोर पालन शामिल है। बहु-चरणीय इनडोर झींगा कृषि तकनीक किसान को पूरे वर्ष लागत प्रभावी और रोग मुक्त बीज रखने की अनुमति देती है जिससे उत्पादन को दोगुना करके प्रति वर्ष दो फसलें लेना आसान हो जाता है। उन्होंने झिंगलाला रेस्तरां को “तालाब से थाली” तक अपने प्रमुख लक्ष्य अवधारणा के साथ स्थानीय और विदेशी दोनों तरह के व्यंजन परोसने की शुरुआत की। अपनी तरह का पहला पेस्को शाकाहारी रेस्तरां केवल फार्म से उगाए गए झींगा और 45 से अधिक विभिन्न झींगा व्यंजन परोसता है।

इन वर्षों में, मत्स्यपालन क्षेत्र में मयंक एक्वाकल्चर प्राइवेट लिमिटेड और डॉ. शर्मा के योगदान को अच्छी तरह से मान्यता दी गई है और फर्म को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।





खुले में सोचना, एक गृहिणी द्वारा दूसरों के लिए रोजगार सृजन



श्रीमती कुलदीप कौर हरियाणा के सिसरा जिले के चोरमारखेड़ा गांव की हैं। वह एक गृहिणी है जो अपने लिए काम करना चाहती थी ताकि वह अपने परिवार का समर्थन कर सके। उसने कृषि व्यवसाय करने पर विचार किया, लेकिन नहर के पानी की कमी थी और उपसतह का पानी खारा था, जिससे भूमि कृषि के लिए अनुपयुक्त हो गई। इसने उन्हें अन्य विकल्पों, विशेष रूप से जलकृषि के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया।

जलकृषि के बारे में अधिक जानने के लिए उन्होंने मत्स्यपालन विभाग, हरियाणा के मार्गदर्शन लिया। उनकी देखरेख में, उन्होंने वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान पी.एम.एम.एस.वाई. के तहत “खारा/क्षारीय सफेद झींगा की कृषि” गतिविधि के लिए आवेदन किया। कुल परियोजना लागत ₹15 लाख थी। उन्हें पी.एम.एम.एस.वाई. के तहत प्रथम वर्ष के इनपुट के रूप में ₹7.94 लाख की वित्तीय सहायता मिली। उसने सफलतापूर्वक 6.63 टन की कुल उत्पादन क्षमता के साथ एक हेक्टेयर क्षेत्र में दो इकाइयों के तालाबों का निर्माण किया। वित्त वर्ष 2021-22 में, उसने 6.8 टन सफेद झींगा का उत्पादन किया, और अपने उत्पादन का 100% बेचा। वर्ष के लिए उसका शुद्ध लाभ ₹15 लाख के व्यय की तुलना में ₹12.20 लाख था।

वह अपने खेत में सर्वोत्तम प्रबंधन प्रथाओं का पालन करती है। झींगा पालन के राजस्व ने उसके जीवन स्तर में सुधार किया है। वह दूसरों को रोजगार देने के लिए अपने परिवार का समर्थन करने की अपनी इच्छा से आगे निकल चुकी है। उसके खेत में अब उसके अलावा चार अन्य लोगों को रोजगार मिलता है। वह भविष्य में प्रजाति विशिष्ट और क्षेत्रीय विशिष्ट आवश्यकता के साथ अपने खेत का विस्तार करने का इरादा रखती है।

लाभार्थी	कुलदीप कौर
जिला	सिरसा
राज्य	हरियाणा
शिक्षा	कक्षा 10
श्रेणी	सामान्य
मोबाइल सं.	9859829700
व्यावसायिक गतिविधि	झींगा पालन
प्रजातियाँ	सफेद झींगा
स्थापना का वर्ष	2021
पद	मालिक
फर्म का नाम	सरपंच झींगा फार्म
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	6.80 टन
वार्षिक कारोबार	₹ 27.20 लाख
रोजगार सृजित	4





मत्स्यपालन एक शानदार पेशा है



नाम	अमृत लाल
जिला और राज्य	सोलन, हिमाचल प्रदेश।
शैक्षिक योग्यता	रसायन शास्त्र में बी. एससी.
श्रेणी	ओ.बी.सी.
व्यवसाय	मत्स्य किसान
मोबाइल सं.	9816428592
स्थापना का वर्ष	2021
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	पॉलीकल्चर मत्स्यपालन
वार्षिक कारोबार	₹7 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	7 टन
रोजगार सृजित	1

श्री अमृत लाल हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले के सूरजमारा गाँव के एक व्यवसायी हैं। अपने व्यापारिक व्यवसाय के लिए बाजार में कम मांग के कारण, वह अपनी आय में सुधार नहीं कर सका, इसलिए, उन्होंने मत्स्यपालन और जलकृषि को व्यवसाय विकल्प के रूप में विचार किया और मत्स्यपालन गतिविधि शुरू करना चाहते थे। मछली पकड़ने की तकनीकों, कृषि तकनीकों और उपलब्ध योजनाओं के बारे में अधिक जानने के लिए वह सोलन के नालागढ़ में मत्स्य कार्यालय पहुंचे। मत्स्यपालन विभाग के अधिकारियों द्वारा जलकृषि की व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के बाद, उन्हें मत्स्यपालन करने के लिए आश्वस्त किया गया। शुरुआत में उन्होंने कुछ जमीन लीज पर ली और प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पी.एम.एम.एस.वाई.) योजना के तहत तालाबों के निर्माण के लिए आवेदन किया। वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान, उन्हें तालाबों के निर्माण के लिए ₹ 2.68 लाख की वित्तीय सहायता और ₹ 6.72 लाख की कुल परियोजना लागत के मुकाबले इनपुट लागत के रूप में ₹ 1.28 लाख की वित्तीय सहायता मिली। उन्होंने बचत से शेष राशि का प्रबंधन किया गया था। इनसे उन्होंने 0.80 हेक्टेयर जल क्षेत्र में फैले तीन तालाबों का निर्माण किया। उन्होंने मछली की कृषि पर व्यावहारिक प्रशिक्षण लिया जिससे उन्हें अपने तालाबों में नई तकनीकों को अपनाने में मदद मिली।

उन्होंने अपने तालाबों में मौजूद कुल खाद्य सामग्री का विवेकपूर्ण उपयोग करने के लिए अपने तालाबों में पॉलीकल्चर को अपनाया और पहली फसल के रूप में 7 टन उत्पादन किया, जिसमें से 5 टन उपज बिक्री के लिए तैयार थी। विभाग से तकनीकी मार्गदर्शन प्राप्त करने और तालाब के पानी की गुणवत्ता और मछली के स्वास्थ्य की निरंतर निगरानी से उन्हें अच्छी फसल प्राप्त करने और पैसा कमाने में मदद मिली है। मत्स्यपालन विभाग, हिमाचल प्रदेश द्वारा तकनीकी जानकारी, वित्तीय सहायता और विस्तार सेवाओं के प्रसार ने उन्हें तकनीकी रूप से अपने खेत का प्रबंधन करने में मदद की जिससे ₹ 4.05 लाख के शुद्ध लाभ के साथ 7 टन का वार्षिक उत्पादन हुआ।

उन्नत उत्पादन तकनीकों और बेहतर प्रबंधन प्रथाओं को अपनाने से, श्री लाल के लिए मत्स्यपालन एक आय-सृजन गतिविधि बन गया था। वह अब आत्मनिर्भर है और अपने खेत पर एक व्यक्ति को रोजगार देता है। मत्स्यपालन करने के बाद उनका मुनाफा दोगुना हो गया है।





बायोफ्लोक - भरपूर रिटर्न

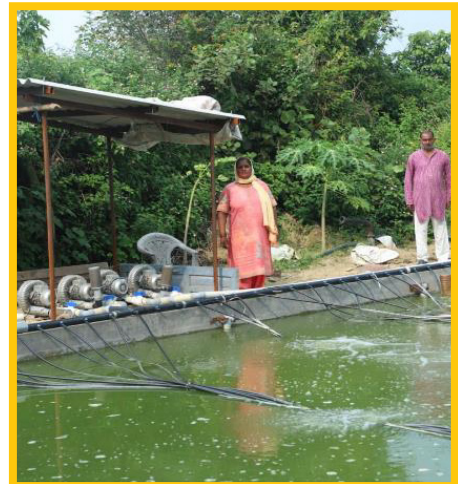


हिमाचल प्रदेश के ऊना जिले के बंगाना प्रखंड के चौकी मन्यार गांव की रहने वाली श्रीमती रेशमा देवी पेशे से दर्जी थीं। इसके अतिरिक्त, वह अपने पति श्री सुभाष चंद के साथ पारंपरिक खेती कर रही थी, जो शारीरिक रूप से दिव्यांग हैं। वे दोनों अपनी सभी गतिविधियों से ₹5,000 की मामूली मासिक आय अर्जित कर सकते थे, लेकिन घरेलू व्यवसाय चलाना मुश्किल था। उनकी उद्यमशीलता की मानसिकता और नई चुनौतियों को स्वीकार करने की प्रवृत्ति ने उन्हें मत्स्यपालन गतिविधि में प्रवेश करने का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने विभिन्न मत्स्यपालन और जलकृषि गतिविधियों के बारे में रुचि से सीखा और विभिन्न प्रौद्योगिकी-प्रेरित पहलों के बारे में अधिक जानने के लिए उन्होंने मत्स्यपालन विभाग, हिमाचल प्रदेश से संपर्क किया। मछली पकड़ने की प्रथाओं और तकनीकों के बारे में अधिक जानने के लिए उन्होंने मत्स्यपालन विभाग द्वारा आयोजित कई प्रशिक्षण सत्रों और कार्यशालाओं में सक्रिय रूप से भाग लिया।

वित्त वर्ष 2018-19 के दौरान, उन्होंने औपचारिक रूप से आकार की एक छोटी पालन इकाई (30 मीटर X 20 मीटर) का निर्माण करके मत्स्यपालन गतिविधि में प्रवेश किया। मत्स्यपालन से अपने उत्पादन और आय को और बढ़ाने के लिए, उन्होंने वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान पी.एम.एम.एस.वाई. योजना के तहत “बायोफ्लोक तालाब का निर्माण” गतिविधि के लिए आवेदन किया और बाद में राज्य मत्स्यपालन विभाग द्वारा एक योग्य लाभार्थी के रूप में चुना गया। उन्हें महिला वर्ग के तहत ₹ 8.40 लाख की वित्तीय सहायता मिली, जो कि ₹ 14 लाख की कुल परियोजना लागत का 60% है। शेष निधि के लिए, उसने बायोफ्लोक फिशपॉन्ड इकाई की स्थापना के लिए केसीसी से ₹ 1.50 लाख और चौकी मन्यार सहकारी समिति से ₹ 0.80 लाख का ऋण लिया।

इनके साथ, उन्होंने कार्यालय कक्ष और चौकीदार की सुविधा जैसी सुविधाओं के साथ 24 सेंट में फैले बायोफ्लोक तालाबों का निर्माण किया। बायोफ्लोक यूनिट 2021 में बनकर तैयार हुई थी और उसने पहली फसल की सफलतापूर्वक हार्वेस्ट कर ली है। जबकि श्रीमती देवी का परिवार गुजारा चलाने के लिए संघर्ष कर रहा था, एक अच्छी फसल ने उनके द्वारा अर्जित प्रतिफल के साथ एक बेहतर जीवन की ओर अग्रसर किया है, और कमाई को कुछ लाख के रूप में गिना जा सकता है; वह सिलाई से जो कमाई कर रही थी, यह उससे कहीं अधिक है। उसने अब पूरी एकाग्रता के साथ आय सृजन के प्राथमिक स्रोत के रूप में मत्स्यपालन को अपनाया है और आगे विस्तार करने की योजना बना रही है।

नाम	रेशमा देवी
जिला और राज्य	ऊना, हिमाचल प्रदेश
शैक्षिक योग्यता	10 वीं कक्षा
श्रेणी	ओबीसी
व्यवसाय	दर्जी
मोबाइल सं.	9805544779
स्थापना का वर्ष	2020
फर्म का नाम	चौधरी मछली फार्म
स्थिति	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	बायोफ्लोक कृषि
वार्षिक कारोबार	₹ 7.23 लाख
वार्षिक मत्स्य बीज उत्पादन	7 टन
रोजगार सृजित	3





शिक्षक से ट्राउट किसान



नाम	हमीदुल्लाह खांडे
जिला और राज्य	अनंतनाग, जम्मू और कश्मीर
शैक्षिक योग्यता	एम.ए., बी.एड.
श्रेणी	सामान्य
व्यवसाय	निजी स्कूल शिक्षक
मोबाइल सं.	9622519202
स्थापना वर्ष	2019
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	ट्राउट पालन इकाई और हैचरी
वार्षिक कारोबार	₹ 17.5 लाख
वार्षिक मत्स्य बीज उत्पादन	3.31 टन
रोजगार सृजित	4

श्री हमीदुल्लाह खांडे जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग जिले के खांगुंड वेरीनाग गांव के रहने वाले हैं। उन्होंने अपना करियर 2011 में एक निजी स्कूल शिक्षक के रूप में शुरू किया था, जिससे उन्हें परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए बहुत ही न्यूनतम आय प्राप्त हो रही थी। एक बार, उन्होंने मत्स्यपालन विभाग द्वारा आयोजित जागरूकता शिविरों में भाग लिया, जिसने उन्हें मत्स्यपालन की ओर प्रेरित किया। नतीजतन, वित्तीय वर्ष 2009-10 के दौरान राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आर.के.वी.वाई.) के तहत उन्होंने 6000 नग फिंगरलिंग्स की उत्पादन क्षमता की दो ट्राउट पालन इकाइयों की स्थापना की। और वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान आठ टैंकों (प्रत्येक में 120 एम 3 मात्रा) का सफलतापूर्वक निर्माण किया। इस योजना के तहत, उन्हें ₹ 4.20 लाख की कुल परियोजना लागत के साथ ₹30 लाख की वित्तीय सहायता प्राप्त हुई।

इतने सारे प्रयोगों और प्रयासों के बाद, वर्ष 2021 के दौरान, उन्होंने 50,000 फिंगरलिंग की क्षमता वाली एक हैचरी इकाई विकसित की, जो दूसरों को भी रोजगार दे रही है। बीज उत्पादन में वृद्धि के साथ, वह 400 किलो ट्राउट/माह बेचने का प्रबंधन कर रहा है। वह और उनका परिवार पहले से बेहतर जिंदगी जी रहे हैं। वह बीज उत्पादन के बारे में और अधिक वैज्ञानिक ज्ञान हासिल करने की योजना बना रहा है और राष्ट्रीय स्तर पर बीज का निर्यात करना चाहता है। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि देश के युवा आगे आएँ और विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों और शिविरों में भाग लेकर मत्स्यपालन में शामिल हों, जो कि भारत सरकार उनके उत्थान के लिए आयोजित कर रही है।





आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी. छात्रों को उद्यमी बनाता है!



ज़रीन गॉरमेट प्राइवेट लिमिटेड तीन दोस्तों रिफत अमीन, सैयद फैज कादरी और सौरव पी. सतीश द्वारा बनाई गई कंपनी है। कंपनी पूरे देश में रेनबो ट्राउट बेचने के लिए कश्मीर घाटी के मत्स्य किसान समुदायों का समर्थन करने पर ध्यान केंद्रित करती है। नरोपा फेलोशिप प्रोग्राम, लद्दाख में प्रशिक्षण अवधि के दौरान उनके दिमाग में यह विचार आया। रेनबो ट्राउट किसानों के सामने आने वाली चुनौतियों को समझने के लिए उन्होंने अनंतनाग, कुलगाम, पुलवामा और कुपवाड़ा जैसे स्थानों की व्यापक यात्रा की। किसानों के सामने आई मुख्य समस्या, उपज को बेचना और लगातार खरीददार ढूंढना थे। यह संयोजकता की कमी और खराब लॉजिस्टिक्स के कारण हुआ, जो दोनों ही सफलता से व्यवसाय करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

इस समस्या के समाधान का पता लगाने और मछली आपूर्ति श्रृंखला की तकनीकी के बारे में जानने के लिए, उन्होंने आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी. में प्रशिक्षण और इंटरनशिप कार्यक्रम में भाग लिया। उन्होंने 6 सप्ताह के इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान मछली पकड़ने, पैकेजिंग, ताजगी और मछली की गुणवत्ता मूल्यांकन आदि की मूल बातें सीखीं। प्रशिक्षित होने के बाद, उन्होंने कश्मीर से कोच्ची तक रेनबो ट्राउट की खेप की एक परीक्षण शिपिंग का प्रयास किया। ये काफी सफल रहा। फिर उन्होंने रेन बो ट्राउट के लिए आकर्षक उपभोक्ताओं को ध्यान में रखते हुए उत्पाद को अखिल भारतीय स्तर पर आगे भेजने का फैसला किया। वे एक B2B (बिजनेस-टू-बिजनेस) मॉडल के साथ आए और विभिन्न महानगरीय शहरों में विभिन्न सीफूड बिजनेस संस्थाओं से जुड़े। वर्ष 2021-22 में, उन्होंने पूरे भारत में लगभग 2.5 टन मछली की आपूर्ति की, जिससे लगभग ₹ 20 लाख की कमाई हुई। आज वे रेनबो ट्राउट को फ्रेश 2होम, लाइसियस, कैप्टनफ्रेश, पेस्काफ्रेश, मेट्रो कैश एंड कैरी, नंदू, स्पार हाइपर मार्केट, स्टार बाजार और बेंगलुरु के कई अन्य सुपर / हाइपर बाजारों जैसे व्यापारिक प्लेटफार्मों को आपूर्ति करते हैं। उनके जोशीले प्रयास से, हिमालयन ट्राउट अब मुंबई, बेंगलुरु और कोच्ची के प्रीमियम रेस्तरां और कैफे में परोसा जाता है।

तकनीकी हस्तक्षेप

लाभार्थी

जिला

राज्य

शैक्षिक योग्यता

श्रेणी

मोबाइल सं.

व्यावसायिक

गतिविधि

स्थापना का वर्ष

पद

फर्म का नाम

वार्षिक मत्स्य

आपूर्ति

वार्षिक कारोबार

रोजगार सृजित

आई.सी.ए.आर.-सी.

आई.एफ.टी.

रिफत अमीन, सैयद फैज

कादरी, सौरव पी. सतीश

श्रीनगर

जम्मू और कश्मीर

बी.कॉम., बी.ए., बी.बी.ए.

क्रमशः

सामान्य

6006179457

रेनबो ट्राउट की आपूर्ति

2020

संस्थापक और निदेशक

ज़रीन गॉरमेट प्राइवेट

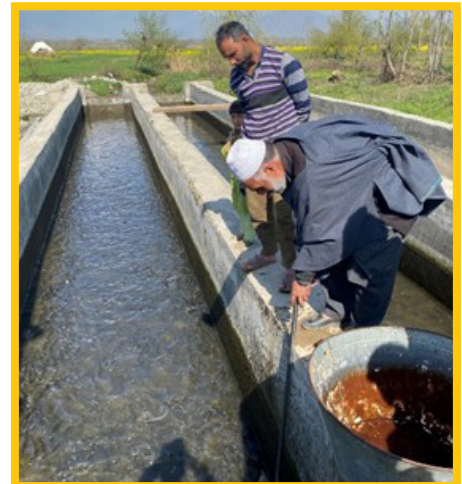
लिमिटेड

2.50 टन

₹ 20 लाख

15 से 20 प्रति व्यावसायिक

इकाई





तालाब कृषि से केज कृषक



नाम	जोधन प्रसाद
जिला और राज्य	हजारीबाग, झारखंड
शैक्षणिक योग्यता	बी.ए. श्रेणी: ओबीसी
व्यवसाय	मत्स्यपालन
मोबाइल सं.	9955585695
स्थापना का वर्ष	2016
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	पंगेशियस की केज कल्चर
वार्षिक कारोबार	₹ 7.12 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	8 टन
रोजगार सृजित	90

झारखंड के हजारीबाग जिले के छेड़ा गांव के रहने वाले श्री जोधन प्रसाद कृषि से मछली पालने वाले बन गए। बीए पूरा करने के बाद, उन्होंने एक छोटे से तालाब में मछली पालना शुरू किया। हालांकि इससे उन्हें प्रति माह ₹ 32,000 कमाने और अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद मिली, लेकिन उन्हें बीमारी के प्रकोप और पूंजी की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इस चरण के दौरान, उन्होंने पिंजड़े की खेती में लगे कई मत्स्य किसानों से मुलाकात की और अपनाई जाने वाली प्रथाओं, उत्पादन और लाभ के बारे में जाना। इसने उन्हें केज की कृषि को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

राज्य मत्स्यपालन विभाग के मार्गदर्शन और तकनीकी सहायता के तहत, उन्होंने वित्तीय वर्ष 2016-17 के दौरान नीली क्रांति योजना के तहत “केज कल्चर” गतिविधि के लिए आवेदन किया और 1.8 x 2.4 x 1.2 एम 3 आयामों के साथ दो केजों से युक्त एक केज बैटरी को सफलतापूर्वक स्थापित किया और ए जमुनिया जलाशय में 12 टन उत्पादन क्षमता है। कुल परियोजना लागत ₹ 3 लाख थी, जिसमें से ₹ 2.7 लाख प्रथम वर्ष की इनपुट लागत के लिए वित्तीय सहायता के रूप में प्राप्त हुए थे और शेष राशि का योगदान स्वयं द्वारा किया गया था।

वह अच्छे प्रबंधन प्रथाओं का पालन करता है, जैसे केज के जाल की नियमित सफाई और उपचार, बेहतर पानी के आदान-प्रदान के लिए एक अंतराल पर केज को स्थानांतरित करना, सर्दियों के मौसम में प्रत्येक केज में चूने की थैली लटकाकर चूने का अनुप्रयोग, फीड प्रबंधन, और उगाई गई मछलियों की समय पर हार्वेस्ट। वह अस्थायी बीज भंडारण के लिए बुनियादी ढांचा विकसित कर रहा है और एक वातन सुविधा, इलेक्ट्रॉनिक वजन मशीन, जीवित मछली परिवहन सुविधा आदि के साथ एक जीवित मछली बिक्री केंद्र विकसित कर रहा है। केज की कृषि उनके लिए आजीविका और नियमित आय का एक प्रमुख स्रोत साबित हुई; इसलिए वह भविष्य में विविध प्रजातियों के साथ कम से कम पांच केज स्थापित करके और प्रति वर्ष दो फसल प्राप्त करके इसका विस्तार करना चाहता है।





मत्स्यपालन में एक सफलता की यात्रा



नवकिशर गोप एक विस्थापित व्यक्ति थे, लेकिन अब झारखंड के सरायकेला जिले के गंगुडीह पुनर्वास गांव के निवासी हैं। उनकी समाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि बहुत खराब थी और उन्हें खाद्य सुरक्षा और बुनियादी सुविधाओं को प्राप्त करने में समस्याओं का सामना करना पड़ा। उनके पास न तो साइकिल है और न ही मोटरसाइकिल। उनके पास तालाब बनाने और मछली पालने के लिए जमीन नहीं है। इन सभी कठिनाइयों और संघर्षों के साथ वह “चांडिल बंध विस्थापित मत्स्य जीवी सहकारी समिति” मछली पकड़ने वाले समाज के सदस्य बनने में कामयाब रहे।

मत्स्यपालन विभाग के मार्गदर्शन में, श्री गोपे ने वित्तीय वर्ष 2017-18 के दौरान प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (पी.एम.एम.एस.वाई.) के अंतर्गत “केज कल्चर” परियोजना के लिए आवेदन किया और इसे मंजूरी दी गई। उन्होंने 5 टन की उत्पादन क्षमता के साथ मत्स्यपालन केज के निर्माण के लिए ₹3 लाख की कुल परियोजना लागत में से ₹51,000 की वित्तीय सहायता प्राप्त की है।

प्रारंभिक चरणों के दौरान, उन्हें मत्स्यपालन प्रथाओं के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी और मछली विपणन सम्बद्धों के बारे में बहुत कम जानकारी थी। परिणामस्वरूप, उसे सीमित शुद्ध लाभ मिला। राज्य मत्स्यपालन विभाग के अधिकारियों के हस्तक्षेप के बाद, वह अब दवा के उपयोग, केज के जाल की मासिक सफाई आदि जैसी सर्वोत्तम प्रथाओं का पालन करता है। इन प्रथाओं को अपनाने से उन्हें मछली मृत्यु दर को कम करने, उत्पादन बढ़ाने और बदले में, जिले का सर्वश्रेष्ठ मत्स्य किसान बनने के लिए मदद मिली। इस गतिविधि को करने से पहले उनकी बहुत कम आय थी। इस गतिविधि को करने से उसे ₹3.20 लाख का लाभ मिलता है। केज कल्चर प्रथा ने उन्हें अपनी वित्तीय स्थिति में सुधार करने में मदद की जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने अपने घर और मोपेड जैसी संपत्तियां बनाईं। वह भविष्य में और अधिक मत्स्यपालन केजों की स्थापना करके अपने व्यवसाय का विस्तार करने की इच्छा रखते हैं।

नाम	नवकिशर गोपे
जिला और राज्य	सरायकेला, झारखंड
शैक्षिक योग्यता	मैट्रिक परीक्षा
श्रेणी	ओ.बी.सी.
व्यवसाय	मत्स्य किसान
मोबाइल सं.	6201189371
स्थापना का वर्ष	2017
फर्म का नाम	चांडिल बंध विस्थापित मत्स्य जीवी सहकारी समिति
पद	सदस्य
व्यावसायिक गतिविधि	केज कल्चर (पंगेशियस)
वार्षिक कारोबार	₹ 5.55 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	6 टन
रोजगार सृजित	2





एक साथ रहना: नदी जलकृषि पर रिटर्न



नाम	गुडू बैठा
जिला और राज्य	रांची, झारखंड
शैक्षिक योग्यता	स्नातक की डिग्री
व्यवसाय	मत्स्यपालन
मोबाइल सं.	7646086847
स्थापना का वर्ष	2020
पद	पार्टनर
व्यावसायिक गतिविधि	तिलापिया और पंगेशियस की केज/पेन कल्चर
वार्षिक कारोबार	₹ 38.50 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	27,500 टन
रोजगार सृजित	50

श्री गुडू बैठा रांची, झारखंड के रहने वाले हैं। वह मछुआरे समुदाय से संबंधित स्नातक डिग्री धारक हैं। यद्यपि वह गेटलसूद बांध में छोटे पैमाने पर मछली पकड़ने की गतिविधि में शामिल था, लेकिन उसे जो आय मिल रही थी वह उसकी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं थी। राज्य मत्स्यपालन विभाग द्वारा आयोजित मत्स्य कृषक गोष्ठी कार्यक्रम उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ बन गया। राज्य मत्स्यपालन विभाग के सहयोग से, श्री बैठा ने मछली पकड़ने में रुचि रखने वाले 16 लोगों की एक टीम बनाई और नीली क्रांति योजना 2019-20 के तहत नदी मत्स्यपालन परियोजना के लिए आवेदन किया और इसे रोल किया।

उन्होंने ₹ 36 लाख की कुल परियोजना लागत के मुकाबले ₹ 8.50 लाख की राशि के साथ परियोजना शुरू की। समूह के ग्यारह सदस्यों ने ₹ 36,000 से ₹ 40,000 तक के केसीसी ऋण का लाभ उठाया जो वित्त वर्ष 2021-22 में स्वीकृत हुए। उन्होंने लगभग 40 एकड़ बंद जल निकाय को कवर करते हुए सुवर्णरेखा नदी में 40 से 50 फीट की गहराई वाले फिश केज और पेन की 120 मीटर लंबाई की 12 इकाइयां स्थापित कीं। खेती की जाने वाली प्रमुख प्रजातियां तिलापिया और पंगेशियस हैं। वित्त वर्ष 2020-21 में उन्होंने जो मत्स्य उत्पादन हासिल किया वह 25 टन था और वित्त वर्ष 2021-22 में यह बढ़कर 30 टन हो गया, जिसके परिणामस्वरूप उनका शुद्ध लाभ ₹ 21.60 लाख से बढ़कर ₹ 27.00 लाख हो गया। फिलहाल वे अपनी उपलब्धि से खुश हैं।

मत्स्यपालन गतिविधि और बेहतर वित्तीय रिटर्न ने उनके जीवन स्तर में सुधार किया और इसके अलावा उन्होंने अपने गांव में लगभग 50 लोगों को रोजगार दिया। वे गांव में लोगों को मछली पकड़ने की गतिविधियों के साथ आने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं।





एक अभिनव कृषि के लिए इंटीरियर डिजाइनर की आंतरिक इच्छा



श्री चेतन राज कर्नाटक के बेंगलूरु अर्बन के आर.आर. नगर गांव के रहने वाले हैं। वह फाइनेंस में एम.बी.ए. के साथ इंटीरियर डिजाइनर हैं। शहर में मछली की उच्च मांग और भारत सरकार की नीली क्रांति योजना ने उन्हें जलकृषि व्यवसाय में उद्यम करने के लिए प्रेरित किया। शुरुआत में उन्होंने छोटे पैमाने पर झींगा की कृषि शुरू की। वह एक लाइव मछली बाजार भी विकसित करना चाहता था ताकि वह अपनी हार्वेस्ट बेच सके और निर्बाध आपूर्ति स्थापित कर सके।

बाद में उन्होंने राज्य मत्स्यपालन विभाग के सहयोग से तिलापिया कृषि की शुरुआत की और यह एक बड़ी सफलता बन गई। इसके बाद उन्होंने वित्तीय वर्ष 2020-21 के दौरान प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पी.एम.एम.एस.वाई.) के अंतर्गत 0.1 हेक्टेयर में “मीठे पानी के बायोप्लोक तालाबों के निर्माण” के लिए आवेदन किया। उन्होंने इस योजना के अंतर्गत मरेल कल्चर के लिए 2 तालाबों का निर्माण किया, जिसकी कुल उत्पादन क्षमता 0.2 हेक्टेयर के कुल क्षेत्रफल में 4 टन है। परियोजना की कुल लागत ₹ 28.00 लाख थी। उन्हें योजना के तहत ₹11.20 लाख की आर्थिक सहायता मिली। वह अपनी उपज की मार्केटिंग ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों से करते हैं। मत्स्यपालन में आने से पहले वह ₹60,000 प्रति वर्ष कमा रहे थे। वर्तमान में जलकृषि करने से उनकी मासिक आय दोगुनी हो जाती है और अब उन्हें ₹1.20 लाख मिलते हैं।

पी.एम.एम.एस.वाई. की पर्याप्त मदद से, वह मरेल कल्चर के लिए आवश्यक महंगे उच्च प्रोटीन वाले महंगे आहार का प्रबंधन कर सके। उनका फार्म अब एक पूर्ण विकसित, सतत फार्म है जहां उन्हें केवल बाहरी आपूर्ति पर निर्भर नहीं रहना पड़ता है। वह अपने फार्म में उभरती प्रौद्योगिकियों का उपयोग करने की योजना बना रहा है ताकि उपज सामान्य तालाब कृषि की तुलना में अधिक हो सके। मत्स्यपालन विभाग के निरंतर समर्थन और युवाओं के लिए योजनाओं ने उन्हें इस क्षेत्र में और अधिक निवेश करने के लिए प्रोत्साहित किया है। उन्होंने बायोप्लोक तकनीक में निवेश करना शुरू किया और पाया कि यह गहन कृषि के लिए और एक छोटी इकाई क्षेत्र से अधिक उत्पादन के लिए एक प्रभावी तरीका है।

नाम	एन. चेतन राज
जिला और राज्य	बेंगलूरु अर्बन कर्नाटक
शैक्षिक योग्यता	एम.बी.ए.
श्रेणी	सामान्य
व्यवसाय	इंटीरियर डिजाइनर
मोबाइल सं.	9620466091
फर्म का नाम	नम्मा बेंगलूरु फिशरीज
स्थापना का वर्ष	2020
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	तिलापिया, मरेल, और झींगा कृषि
वार्षिक कारोबार	₹ 11.5 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	18 टन
रोजगार सृजित	5





एक्का कल्चरिस्ट में बदलता है आर्किटेक्ट



नाम	सौम्या सत्यनारायण
जिला और राज्य	दक्षिण बैंगलोर, कर्नाटक
शैक्षिक योग्यता	आर्किटेक्ट में बी.टेक
श्रेणी	सामान्य
व्यवसाय	एक्कापोनिक किसान और वास्तुकला
मोबाइल सं	9880265330
स्थापना का वर्ष	2020
फर्म का नाम	ग्रो सस्टेनेबल फार्म
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	रीसर्क्युलेटरी एक्काकल्चर सिस्टम (आर.ए.एस.) - (तिलापिया)
वार्षिक कारोबार	₹ 23.7 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	23 टन
रोजगार सृजित	11

श्रीमती सौम्या सत्यनारायण कर्नाटक के दक्षिण बैंगलोर जिले के उत्तरी गाँव की रहने वाली हैं। मत्स्यपालन में प्रवेश करने से पहले, वह एक वास्तुकार थीं। 2014 में, उसने एक्कापोनिक्स शुरू किया और ₹60,000/- मासिक कमाई शुरू कर दी। हालांकि, उसे मार्केटिंग में समस्याएं आईं। बाद में उन्हें रीसर्क्युलेटरी एक्काकल्चर सिस्टम (आर.ए.एस.) के बारे में पता चला।

राज्य मत्स्यपालन विभाग के मार्गदर्शन और समर्थन के तहत, उन्होंने वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान पी.एम.एम.एस.वाई. के तहत “बड़ी आर.ए.एस.” गतिविधि के लिए आवेदन किया और 40 टन उत्पादन क्षमता वाले 20 टैंकों का सफलतापूर्वक निर्माण किया। इस योजना के तहत, उन्हें ₹ 55.94 लाख की कुल परियोजना लागत के मुकाबले प्रथम वर्ष के इनपुट के रूप में ₹30 लाख की वित्तीय सहायता मिली। क्षतिपूर्ति के लिए ₹15 लाख उधार लिए और ₹25.94 लाख स्वयं निवेश किए।

उनके फार्म में मैकेनिकल और बायोफिल्टर, डिगैसिंग और स्लज टैंक, एक प्रयोगशाला सुविधा और मत्स्य फीड के लिए एक स्टोररूम के साथ एक अद्वितीय और अभिनव निस्पंदन (फिल्ट्रेशन) प्रणाली है। वह कम मृत्यु दर प्राप्त करने के लिए मत्स्य फीड और फसल तनाव के अनुकूलन के लिए समय-समय पर ग्रेडिंग करती है। वे अपनी सुविधा में काम करने के लिए 11 लोगों को रोजगार रही हैं। वे कृषि संचालन और पालन-हार्वेस्ट चक्रों को और अधिक अनुकूलित करने की योजना बना रही है ताकि बुनियादी ढांचे से अधिकतम उत्पादन किया जा सके। वर्तमान वर्ष में उनको ध्यान उच्च मूल्य वाली मछलियों को पालने, मछली प्रसंस्करण क्षेत्र में प्रवेश करने और संभावित रूप से अपने स्वयं के ब्रांड “ग्रो” के तहत व्यवसाय-से-उपभोक्ता (बी2सी) व्यवसाय मॉडल लाइन में प्रवेश करने का होगा।





फैशन डिज़ाइनर से मत्स्य किसान की कहानी



श्री आनंद मत्स्यपालन में सातक डिग्री धारक हैं, ये बैंगलोर, कर्नाटक के शहरी क्षेत्र से संबंधित हैं। उन्होंने वर्ष 1998 में कॉलेज ऑफ फिशरीज, मैंगलोर से बी.एफ.एससी पूरा किया। उसके बाद 2 वर्ष के लिए एक झींगा हैचरी में प्रौद्योगिकीविद् के रूप में काम किया। वर्ष 2001 में, वह बॉम्बे रेयॉन फैशन लिमिटेड, बेंगलुरु, कर्नाटक में महाप्रबंधक के रूप में फैशन और परिधान डिजाइनिंग उद्योग में शामिल हुए। 2003 में, उन्होंने बैंगलोर में “एस.ए.पी.पी.एस. इनोवेशन” नाम से फैशन और परिधान डिजाइनिंग में अपनी कंपनी की स्थापना की। कंपनी एक वर्ष की छोटी अवधि के भीतर परिधान व्यवसाय में सफल निर्माताओं और व्यापारियों में से एक बन गई।

वर्ष 2021 में जब “कोविड -19 महामारी” ने पूरे देश को प्रभावित किया, श्री आनंद का परिधान व्यवसाय बुरी तरह प्रभावित हुआ। इस स्थिति को दूर करने के लिए, उन्होंने स्वयं मत्स्यपालन सातक होने के कारण मत्स्यपालन के व्यवसाय में उद्यम करने का निर्णय लिया। कई वर्षों तक मत्स्यपालन के क्षेत्र से अलग रहने के कारण वह सब कुछ शून्य से शुरू करने के लिए मजबूर था। उन्होंने और उनकी पत्नी सौभाग्य ने मत्स्यपालन विभाग, कर्नाटक से संपर्क किया, और इस बारे में और मत्स्यपालन व्यवसाय शुरू करने के लिए आवश्यक जानकारी के बारे में काफी सकारात्मक और उत्साहजनक प्रतिक्रिया प्राप्त की। आवश्यक जानकारी से लैस होकर उन्होंने चन्ना स्ट्रैटस (सेकहेड मरेल) की मत्स्यपालन की शुरुआत की। उन्होंने पास की मछली हैचरी से 3 इंच आकार के रु.12 प्रति बीज की दर से मुरल बीज खरीदा, 0.2 हेक्टेयर तालाब में 10,000 फिंगरलिंग का स्टॉक किया और उन्हें सर्वोत्तम प्रबंधन प्रथाओं को अपनाकर 8 महीने तक पाला। कृषि अवधि के अंत में, वे 0.8 किलोग्राम से 1.2 किलोग्राम तक के आकार के साथ 6.50 टन मुरल लाने में सक्षम थे। उन्होंने स्थानीय मत्स्य बाजार में ₹ 280 से 300 प्रति किलोग्राम मछली की दर से उपज का विपणन किया, जिससे लगभग ₹ 100 प्रति किलोग्राम मछली का लाभ हुआ।

श्रीमती और श्री आनंद मत्स्यपालन से प्राप्त लाभ से काफी खुश और संतुष्ट हैं और उन्होंने अपने व्यवसाय का और विस्तार करने का निर्णय लिया। श्रीमती सौभाग्या ने पी.एम.एम.एस.वाई. के तहत आवेदन किया और हाल ही में मुरल कल्चर के लिए बायोफ्लोक इकाई स्थापित करने के लिए पी.एम.एम.एस.वाई. के तहत ₹16 लाख की वित्तीय सहायता प्राप्त की। बायोफ्लोक तालाब का निर्माण नवीनतम तकनीकों को अपनाकर किया गया था और यह कुशल निगरानी के लिए सी.सी.टी.वी. निगरानी में है। वे अगले वर्ष वनमई कृषि में उद्यम करने की भी योजना बना रहे हैं। मत्स्यपालन के लिए जाने से उनकी आय में वृद्धि हुई और उन्होंने 4 लोगों के लिए रोजगार सृजित किया।

हितधारक	सौभाग्य और आनंद
जिला	बैंगलोर-शहरी
राज्य	कर्नाटक
शैक्षिक योग्यता	बी.एफ.एससी.
श्रेणी	अनुसूचित जाति
व्यवसाय	परिधान के निर्माता और व्यापारी
मोबाइल सं.	9483467528
व्यावसायिक गतिविधि	मत्स्यपालन
स्थापना का वर्ष	2022
पद	मालिक
इकाई का नाम	एस.ए. फार्म
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	6.5 टन
वार्षिक कारोबार	₹ 22 लाख
रोजगार सृजित	6





सीवीड (समुद्री शैवाल) आधारित जैव-सक्रिय और न्यूट्रास्यूटिकल्स का व्यावसायीकरण



तकनीकी हस्तक्षेप	आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी.
संपर्क व्यक्ति	बॉबी किझाकेथारा
जिला	कोचीन
राज्य	केरल
शिक्षा	एम.बी.ए.
श्रेणी	सामान्य
मोबाइल सं.	9446516060
व्यावसायिक गतिविधि	समुद्री खरपतवार आधारित उत्पादों का निर्माण
स्थापना का वर्ष	2020
पद	प्रबंध निदेशक
फर्म का नाम	बोडिना नेचुरल्स प्राइवेट लिमिटेड
उत्पादन	प्रति दिन 1,000 किग्रा
वार्षिक कारोबार	₹ 25 लाख
रोजगार सृजित	60 से अधिक

सीवीड (समुद्री शैवाल) पोषक तत्वों और अन्य लाभकारी यौगिकों का एक उत्कृष्ट स्रोत माना जाता है। भाकृअनुप-केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.एफ.टी.), कोच्चि ने बड़ी आबादी के लाभ के लिए इन सीवीड (समुद्री शैवाल) संसाधनों और वैज्ञानिक रूप से विकसित सीवीड (समुद्री शैवाल) आधारित जैव सक्रिय यौगिकों और न्यूट्रास्यूटिकल्स की जैव सक्रिय और पोषण क्षमता का एहसास किया। इन उत्पादों का अब मेसर्स बोडिना नेचुरल्स प्राइवेट लिमिटेड (बी.एन.पी.एल.) के माध्यम से व्यावसायीकरण किया जाता है, जो पी.पी.पी. मोड में आयुर्वेदिक उत्पादों से लेनदेन करने वाली कंपनी है।

2020 में, BNPL ने संस्थान के सहयोग से कोच्चि, केरल में आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी. द्वारा विकसित सीवीड (समुद्री शैवाल) आधारित उत्पादों के लिए 2,500 वर्ग मीटर क्षेत्र की एक निर्माण इकाई की स्थापना की। यूनिट की उत्पादन क्षमता 1,000 किलोग्राम प्रति दिन है। कुल परियोजना लागत ₹ 50 लाख है। कंपनी को केरल स्टार्ट अप मिशन से “उत्पादीकरण अनुदान 2021” प्राप्त हुआ है। दिसंबर, 2020 में “ZAFORA” के ब्रांड नाम के तहत तीन सीवीड (समुद्री शैवाल)-आधारित उत्पाद अर्थात् ZAFORA सीवीड हैंड सैनिटाइज़र, ZAFORA-360 समृद्ध फ्यूकोइडन कैप्सूल और ZAFORA गार्गल को श्री बोबी किझाकेथारा प्रबंध निदेशक, बी.एन.पी.एल. की उपस्थिति में निदेशक, आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी. द्वारा लॉन्च किया गया था। उत्पादों में एंटीवायरल, पोषण और प्रतिरक्षा नियामक प्रभाव होते हैं और सीवीड (समुद्री शैवाल) से कैरेजेनन, फ्यूकोइडन आदि होते हैं।

इकाई ने 16 लोगों के लिए प्रत्यक्ष रोजगार और 50 से अधिक लोगों के लिए अप्रत्यक्ष रोजगार उत्पन्न किया। अपनी स्थापना के पहले वर्ष में, इकाई ने ₹ 10 लाख का कारोबार किया। अब, कुल वार्षिक कारोबार लगभग ₹ 25 लाख है। उत्पाद को इसकी ब्रांडिंग, गुणवत्ता और पोषण मूल्यों और पैकेजिंग के कारण स्थानीय बाजार में जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली है। अब, कंपनी सीवीड (समुद्री शैवाल) और अन्य न्यूट्रास्यूटिकल्स से नए एफ.एम.सी.जी. उत्पादों को पेश करने का लक्ष्य लेकर चल रही है।





एक युवा उद्यमी की कहानी: फू फूड्स



केरल में कोझीकोड जिला पुराने मालाबार प्रांत की विरासत राजधानी है और मसल्स उत्पादों की प्रामाणिक और उत्तम स्वादिष्टता के लिए प्रसिद्ध है। इसने 21 वर्षीय नवोदित उद्यमी श्री मोहम्मद फवास को मसल्स उत्पादों में अवसर तलाशने के लिए आकर्षित किया। 2018 में, उन्होंने श्री एन. रमेश और श्री एम. इरफान के साथ एक छोटी उत्पादन इकाई स्थापित करने के लिए भागीदारी की और ग्रीन मसल्स उत्पादों के साथ समुद्री भोजन क्षेत्र में कदम रखा। उत्पाद को स्थानीय और विदेशी दोनों बाजारों में अपने जातीय स्वाद के कारण अच्छी मांग मिली, लेकिन खराब पैकेजिंग के कारण यह अपने शेल्फ जीवन को बनाए रखने में विफल रहा। शुरू में उन्होंने स्थानीय रूप से उपलब्ध एल्युमिनियम फॉयल का इस्तेमाल स्टफ्ड मसल्स को पैक करने के लिए किया जो उत्पाद की गुणवत्ता को बनाए रखने में विफल रहे जो भंडारण के कुछ घंटों के भीतर तेजी से सड़ जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप भारी नुकसान होता है। इस स्थिति में, उन्होंने समर्थन के लिए आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी. से संपर्क किया।

आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी. ने उन्हें वैज्ञानिक थर्मल प्रोसेसिंग तकनीक के बारे में सुझाव दिया जो भोजन की गुणवत्ता और पौष्टिकता को बनाए रखने के लिए रेफ्रिजरेशन/प्रिज़र्वेटिव्स/एडिटिव्स का उपयोग किए बिना सामान्य कमरे के तापमान पर उत्पाद के शेल्फ जीवन में सुधार कर सकता है। खाद्य उत्पादों की गुणवत्ता, ताजगी और स्वाद पूरे वर्ष एक जैसा रहेगा। आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी. ने शुरुआती चरण से ही श्री फवास को क्लासिक मालाबार स्नैक 'स्टफ्ड ग्रीन मसल्स' को संसाधित करने के लिए आवश्यक तकनीकी सहायता प्रदान की और इन्क्यूबेशन सुविधा का विस्तार किया। विपणन के सफल परीक्षण के बाद, श्री फवास ने अप्रैल, 2019 में कंपनी को मैसर्स फू फूड्स प्राइवेट लिमिटेड के रूप में पंजीकृत किया। प्रौद्योगिकी को आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी. द्वारा पार्टी के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करके स्थानांतरित किया गया था और उत्पाद को "फू फूड्स" ब्रांड नाम के तहत "कल्लुमक्काया निराचथ" के रूप में लॉन्च किया गया था। यह उत्पाद अब कोझीकोड और मालाबार क्षेत्र के हाइपरमार्केट और सुपरमार्केट में पूरे वर्ष उपलब्ध है, जिसका बाजार मूल्य ₹ 140 प्रति पैक है जिसका वजन 125 ग्राम है।

तकनीकी हस्तक्षेप	आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी.
लाभार्थी	मोहम्मद फवास
जिला	कोझीकोड
राज्य	केरल
शिक्षा	बी.बी.ए.
व्यावसायिक गतिविधि	ग्रीन सीप उत्पादों का निर्माण
स्थापना का वर्ष	2019
पद	संस्थापक
फर्म का नाम	मैसर्स फू फूड्स प्रा. लिमिटेड
वार्षिक उत्पादन	4.5 टन (औसतन)
वार्षिक शुद्ध लाभ	₹ 17.1 लाख (औसतन)





सीवीड (समुद्री शैवाल) कुकीज़ का स्टार्ट-अप



तकनीकी हस्तक्षेप	आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी.
लाभार्थी	नजीब बिन हनीफ
जिला	एर्नाकुलम
राज्य	केरल
शैक्षिक योग्यता	एम.टेक. जैव प्रौद्योगिकी
श्रेणी	ओ.बी.सी.
मोबाइल सं.	9539938147
व्यावसायिक गतिविधि	अल्लाल और सीवीड (समुद्री शैवाल) आधारित खाद्य और पेय पदार्थ
स्थापना का वर्ष	2019
पद	संस्थापक और सी.ई.ओ.
फर्म का नाम	ज़ारा बायोटेक
उत्पादन	450 किलो प्रति दिन
वार्षिक कारोबार	₹ 25 लाख तक
रोजगार सृजित	26

आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी., कोच्चि में स्थापित कृषि-व्यवसाय इनक्यूबेशन (ए.बी.आई.) केंद्र नई प्रौद्योगिकी आधारित उद्योग और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की स्थापना की नींव बढ़ाने के उपाय के रूप में व्यावसायिक परियोजनाओं पर संचालन का समर्थन करता है। ऐसी ही एक कंपनी ए.बी.आई., आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी. द्वारा लाभान्वित जारा बायोटेक है - यह जैव प्रौद्योगिकी स्टार्ट-अप कंपनी सूक्ष्म शैवाल का उपयोग करके ऊर्जा और खाद्य संकट में अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित कर रही है। इस कंपनी की यात्रा कॉलेज के छात्रावास में “सहरदया कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, केरल” के छात्रों के एक समूह ने शैवाल तथा सीवीड (समुद्री शैवाल) और समुद्री शैवाल आधारित उत्पादों के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता तथा अर्थव्यवस्था में सुधार का सपना के साथ 2016 में शुरुआत हुई थी। हालांकि सरकारी तौर पर इसकी स्थापना 2019 में हुई थी। 2016 में उन्होंने ब्रांड नाम “स्पाइरोबाइट” के तहत एक अभिनव समुद्री शैवाल और शैवाल आधारित कुकीज़ गतिविधि को विकसित किया जिसे व्यापक मान्यता मिली।

समूह ने आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी. की अनुसंधान सुविधा में गुणवत्ता और स्वाद जोड़ने वाली अल्लाल-समुद्री शैवाल प्रौद्योगिकी के साथ अपने उत्पादों में सुधार किया। उन्हें बाजार में प्रवेश के विभिन्न चरणों में आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी. से समर्थन मिला और ब्रांड “बी-लाइट कुकीज़” के तहत उन्नत उत्पादों को प्रारम्भ किया। परीक्षण विपणन के लिए इन उत्पादों का प्रारंभिक विनिर्माण आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी. के पायलट संयंत्र में और अंतिम विनिर्माण भारत सरकार के अनुसंधान संस्थान की सुविधा में किया गया था। आज, जारा बायोटेक प्रति दिन 450 किलोग्राम की उत्पादन क्षमता पर चल रही है और आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी., कोच्चि के साथ दो गुणवत्ता आश्वासन प्रयोगशालाओं को शामिल किया गया है।

उनके उत्पाद स्थानीय रूप से ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के माध्यम से बेचे जाते हैं। कंपनी यू.के., जापान, ऑस्ट्रेलिया आदि को भी उत्पादों का निर्यात करती है। कंपनी की व्यावसायिक गतिविधि वर्तमान में फास्ट-मूविंग कंज्यूमर गुड्स (एफ.एम.सी.जी.) क्षेत्र में खाद्य और पेय निर्माण, सौंदर्य प्रसाधन, अनुसंधान और परामर्श सेवाओं, जैव-सूचना विज्ञान, आईटी क्षेत्र में स्वास्थ्य देखभाल, उत्पाद विकास के लिए शैक्षिक मंच, फोटो-बायोरिएक्टर और कृत्रिम पेड़ों का डिजाइन और विकास गतिविधियों में, कंपनी उन्नत तकनीक के आधार पर स्थायी पर्यावरणीय समाधान भी डिजाइन और निर्माण करती है।





सजावटी मत्स्यपालन में निर्माता कंपनी



केरल के मत्स्य किसान अपने पिछवाड़े में बने तालाबों में सजावटी मछलियां उगा रहे हैं। 2009 की सब्सिडी योजना ने राज्य में सजावटी मत्स्यपालन को बढ़ावा दिया है। हालांकि, बिचौलियों के हस्तक्षेप के कारण किसानों को विपणन में बाधाओं का सामना करना पड़ा और बदले में उन्होंने अपनी उपज की कीमत कम कर दी। इस मुद्दे को हल करने के लिए, एर्नाकुलम जिले के कीझीलम के कुछ किसानों ने एम.पी.ई.डी.ए. के मार्गदर्शन और समर्थन में सह्याद्री एक्वेरियम फिश प्रोड्यूसर कंपनी नाम से एक प्रोडक्शन कंपनी बनाई। कंपनी को 2014 में पांच एक्वेरियम मत्स्य किसानों द्वारा संस्थापक सदस्यों के रूप में पंजीकृत किया गया था।

कंपनी एक ऐसे मंच के रूप में कार्य करती है जो किसानों और एक्वेरियम की दुकान के मालिकों को सीधे जोड़ता है और इस प्रकार, बिचौलियों के शोषण को रोकता है। अब कंपनी में 35 स्थायी और 15 संविदा किसान सदस्य हैं। कंपनी ने एक मार्केटप्लेस स्थापित किया जो सप्ताह में एक बार खुला रहता है। किसान और थोक खरीदार/एक्वेरियम की दुकान के मालिक वहां इकट्ठा होंगे और हर मंगलवार को कारोबार करेंगे। वर्तमान में, कंपनी प्रति सप्ताह ₹ 2.5 लाख से ₹ 3 लाख की आय उत्पन्न करती है।

बाजार मछली प्रजातियों के आधार पर ₹ 2/मछली से ₹ 2000/मछली तक सजावटी मछली की कीमतों का एक विविध संग्रह प्रदर्शित करता है। वर्तमान में, 300 एक्वेरियम दुकान के मालिक बाजार का दौरा कर रहे हैं; वे लगभग 600 दुकान मालिकों के साथ व्हाट्सएप समूहों के माध्यम से डिजिटल रूप से जुड़े हुए हैं जिन्होंने सजावटी मछलियों को खरीदने में गहरी रुचि दिखाई है। संस्थापक सदस्यों में से एक श्री थॉमस टी.सी. ने बताया है कि कंपनी मॉडल किसानों और एक्वेरियम की दुकान के मालिकों दोनों के लिए फायदेमंद है। बिचौलियों के माध्यम से मिलने वाली कीमत की तुलना में किसानों को कीमत पर 40% से 60% बढ़ा हुआ मार्जिन मिलता है। एक्वेरियम की दुकान के मालिकों को किसानों से गुणवत्तापूर्ण सजावटी मछली और 24 घंटे की गारंटी मिलती है। सह्याद्री फिश प्रोड्यूसर कंपनी के किसान देश भर में सजावटी मत्स्य किसानों और एक्वेरियम की दुकान के मालिकों को नेटवर्किंग करने और मछली व्यापार के लिए एक मंच बनाते हैं।

नाम	सह्याद्री एक्वेरियम निर्माता कंपनी
जिला और राज्य	एर्नाकुलम, केरल
शैक्षिक योग्यता	लागू नहीं
श्रेणी	सामान्य व्यवसाय: मत्स्यपालन
मोबाइल सं.	9447032517
स्थापना वर्ष	2014
फर्म का नाम	सह्याद्री एक्वेरियम मत्स्य उत्पादन कंपनी
पद	सदस्य
व्यावसायिक गतिविधि	उनके द्वारा खेती की जाने वाली सजावटी मछलियों का विपणन
वार्षिक कारोबार	₹ 13 - 15.6 करोड़
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	लागू नहीं
रोजगार सृजित	लागू नहीं





सोलर हाईब्रिड ड्रायर: आमदनी का जरिया



तकनीकी हस्तक्षेप	भा.कृ.अनु.प.-सी.आई.एफ.टी.
लाभार्थी	सुनीर वी. ए.
जिला	एर्नाकुलम
राज्य	केरल
शिक्षा	स्नातक डिग्री
श्रेणी	ओ.बी.सी.
मोबाइल सं.	9633459759
व्यावसायिक गतिविधि	सूखे समुद्री भोजन का निर्माण और विपणन
स्थापना का वर्ष	2020
पद	मालिक
फर्म का नाम	द ओशन हार्बर
वार्षिक उत्पादन	1 टन
वार्षिक कारोबार	₹ 20 लाख
रोजगार सृजित	12

भा.कृ.अनु.प.-सी.आई.एफ.टी. ने मछली के स्वच्छ सुखाने के लिए सौर ड्रायर के कई प्रकार और क्षमता विकसित की है। ऐसा ही एक फिश ड्रायर सी.आई.एफ.टी.-हाइब्रिड प्रकार का सोलर ड्रायर है जो प्रतिकूल मौसम की परिस्थितियों में भी एलपीजी, बायोमास और/या बिजली का बैकअप हीटिंग स्रोतों के रूप में उपयोग करके मछली को निर्बाध रूप से सुखाने की सुविधा प्रदान करता है। इन ड्रायरों में 10 से 500 किलोग्राम की सीमा में सूखी मछली का उत्पादन करने के लिए 6 से 110 वर्ग मीटर तक सतह क्षेत्र फैला हुआ है। सी.आई.एफ.टी. द्वारा डिजाइन किए गए ये पर्यावरण के अनुकूल और ऊर्जा कुशल सोलर हाइब्रिड ड्रायर मछुआरों और ड्राई फिश बिजनेस स्टार्ट-अप के बीच समान रूप से लोकप्रिय हो रहे हैं।

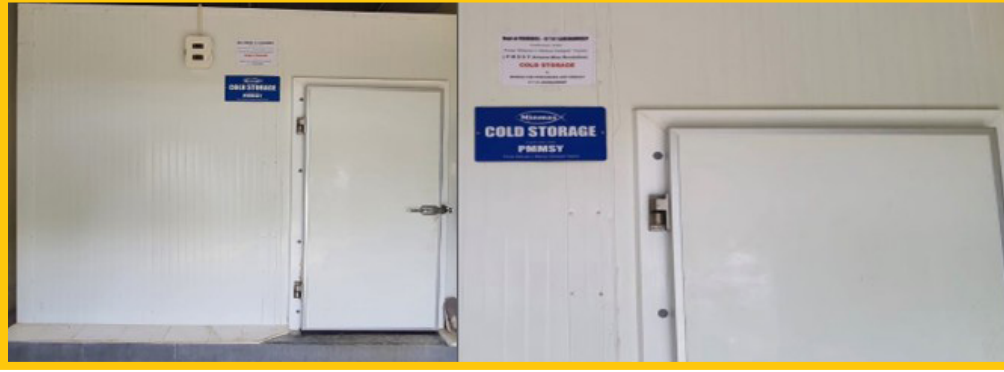
श्री सुनीर वी.ए. ने सौर मछली सुखाने की तकनीक के लिए आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.टी.-ए.बी.आई. इनक्यूबेटी ₹5 लाख की कुल लागत पर 1,000 वर्ग मीटर क्षेत्र में सी.आई.एफ.टी. सौर-विद्युत हाइब्रिड ड्रायर की एक ऐसी इकाई स्थापित की और सूखी मछली क्षेत्र में एक नया स्टार्टअप लॉन्च किया। ड्रायर की दैनिक उत्पादन क्षमता 1,000 किलोग्राम है। सूखे उत्पादों का विपणन 'द ओशन हार्बर' ब्रांड नाम से किया जाता है और इन्हें ₹ 600 प्रति किलोग्राम की कीमत पर बेचा जाता है।

इस तकनीक को अपनाकर, उन्होंने 20 से अधिक सुपरमार्केट, थोक विक्रेताओं और खुदरा दुकानों में अपनी साझेदारी का विस्तार किया और ऑर्डर निष्पादित करने की अपनी क्षमता में सुधार किया। वे मछली और झींगा के अचार के साथ-साथ अन्य मूल्य वर्धित उत्पादों को जोड़कर कंपनी द्वारा उत्पादित उत्पादों की विविधता में विविधता लाने की योजना बना रहे हैं।





शिक्षक से निर्यातक बनना



श्रीमती वी.बी. हव्वा मिनिक्कॉय द्वीप, लक्षद्वीप के ओमागु गाँव से एक सेवानिवृत्त शिक्षक है। सेवानिवृत्ति के बाद वह खाली नहीं बैठना चाहती थी। उन्होंने महसूस किया कि गाँव में मछली के भंडारण की कोई सुविधा नहीं है। इससे उन्हें एक कोल्ड स्टोरेज की सुविधा शुरू करने के लिए प्रेरित किया।

2007 में, उन्होंने अपने गांव में न्यूनतम क्षमता के साथ एक कोल्ड स्टोरेज स्थापित किया। बाद में 2021 में, मत्स्यपालन विभाग (डी.ओ.एफ.), लक्षद्वीप के समर्थन से उन्होंने 10 टन क्षमता का एक बड़ा कोल्ड स्टोरेज स्थापित किया। उन्होंने ₹.90 लाख की कुल परियोजना लागत में से, पी.एम. एम.एस.वाई. के तहत अनुदान के रूप में ₹ 16.29 लाख और बैंक से ऋण के रूप में ₹ 53.70 लाख का लाभ उठाया। उसने अन्य स्रोतों से ₹20 लाख की शेष राशि का प्रबंध किया। हाल ही में उन्होंने डिब्बाबंदी सुविधा और ताजा मछली निर्यात भी शुरू किया। अपनी सुविधा में, वे टूना से मस्मिन जैसे मूल्य वर्धित उत्पादों का निर्माण करती हैं। उन्होंने अन्य मूल्य वर्धित उत्पादों के निर्माण और टिकाऊ व्यापार संचालनों के लिए एक अनुसंधान और विकास सुविधा भी स्थापित की है।

अब वे औसतन ₹.400 प्रति किलो की दर से मस्मिन, ₹.110 प्रति किलो डिब्बाबंद टूना और ₹.100 प्रति किलो की दर से ताजा मछली बेचती हैं। कोल्ड स्टोरेज की स्थापना से पहले उनकी वार्षिक आय केवल ₹ 3 लाख थी। कोल्ड स्टोरेज की स्थापना और कामकाज के साथ, उसकी आय और जीवन स्तर में काफी सुधार हुआ है। इसके अतिरिक्त, इसने स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार और आय सृजन के अवसर पैदा किए।

नाम	हव्वा
जिला	लक्षद्वीप
केंद्र शासित प्रदेश	लक्षद्वीप
शैक्षिक योग्यता	कक्षा 10
श्रेणी	अनुसूचित जनजाति
व्यवसाय	शिक्षण (सेवानिवृत्त)
मोबाइल सं.	9447722341
स्थापना का वर्ष	2007
पद	मालिक
इकाई का नाम	मिनिक्कॉय द्वीप नोवेल्टी मास निर्माता सोसाइटी लिमिटेड
व्यावसायिक गतिविधि	कोल्ड स्टोरेज, मत्स्य निर्यात और मूल्य वर्धित उत्पाद विनिर्माण
प्रजातियां	स्किपजैक टूना, येल्लोफिन टूना और लगून मछलियों
वार्षिक कारोबार	₹ 18.50 लाख
रोजगार सृजित	10





गृहिणी से एकाफार्मर



नाम	अमीना बेगम गिंदियाल
जिला और राज्य	कारगिल, लद्दाख
शैक्षिक योग्यता	निरक्षर
वर्ग	एसटी
व्यवसाय	किसान
मोबाइल सं.	9419855157
स्थापना का वर्ष	2018
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	रेसवे में रेनबो ट्राउट कल्चर
वार्षिक कारोबार	₹ 4.40 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	1.12 टन
रोजगार सृजित	1

श्रीमती अमीना बेगम गिंदियाल लद्दाख के कारगिल जिले के मजीदाम गांव की रहने वाली हैं। वे एक गृहिणी हैं और वे खेती करके अपनी आर्थिक स्थिरता में सुधार करना चाहती थी। अपने इलाके की प्रतिकूल, कठोर और ठंडी जलवायु परिस्थितियों के कारण, जो सबसे ठंडे बसे हुए स्थान के मामले में साइबेरिया के बाद दूसरे स्थान पर है, वह फ्लो-थ्रू सिस्टम में ट्राउट कृषि के अलावा कोई भी खेती शुरू नहीं कर सकी। ताजा खेती वाली मछली की उच्च मांग ने भी उन्हें ट्राउट कृषि करने के लिए प्रेरित किया।

भारत सरकार द्वारा प्रदान किए गए अवसर के साथ, उन्होंने वित्तीय वर्ष 2017-18 में नीली क्रांति योजना के तहत “रेसवे में ट्राउट कृषि गतिविधि” के लिए आवेदन किया। सरकार के समर्थन से, उसने 0.35-0.50 टन और भंडारित 300 रेन बो ट्राउट फिंगरलिंग की उत्पादन क्षमता वाले एक रेसवे का निर्माण किया।

उन्हें कुल परियोजना लागत ₹ 4.50 लाख के मुकाबले प्रथम वर्ष की इनपुट लागत के लिए ₹ 3.60 लाख की वित्तीय सहायता मिली। शेष राशि का समायोजन उसके द्वारा किया गया था।

ट्राउट की कृषि ने नियमित आजीविका सहायता सुनिश्चित करते हुए उनकी सामाजिक आर्थिक स्थितियों को उभारा है। वह अतिरिक्त रेसवे का निर्माण करके अपने व्यवसाय का विस्तार करना चाहती है जिसके लिए वह पी.एम.एम.एस.वाई. योजना के तहत ही वित्तीय सहायता का विकल्प चुनेगी। इकाई के माध्यम से उत्पन्न परिणाम ने उनके पति की रुचि को आकर्षित किया और इकाई के प्रबंधन में उसकी मदद करना शुरू कर दिया। उनके छोटे-छोटे प्रयासों से, अब ट्राउट कृषि क्षेत्र में लोकप्रियता प्राप्त कर रही है और परिवार को स्थायी आय प्रदान कर रही है।





प्रतिभा के कारण ट्राउट कृषि की ओर

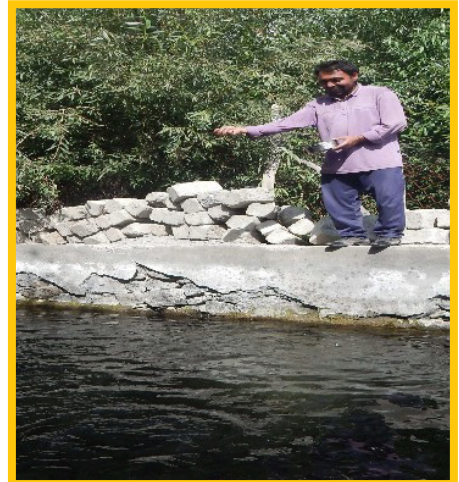


मोहम्मद इलियास अहमद लद्दाख के कारगिल जिले के मजीदाम गांव के रहने वाले हैं। शिक्षित होने के कारण, वे सरकारी या निजी नौकरियों का विकल्प चुन सकते थे, लेकिन उन्होंने मत्स्यपालन को चुना। यद्यपि वे किसी प्रकार की खेती शुरू करना चाहता थे, लेकिन लद्दाख की प्रतिकूल कठोर ठंडी जलवायु परिस्थितियों के कारण ऐसा नहीं कर सके। उन्होंने पाया कि मत्स्यपालन से कम मेहनत में अधिक आय अर्जित की जा सकती है। इसने उन्हें अपने वित्तीय मुद्दों को दूर करने के लिए मत्स्यपालन को चुनने के लिए प्रेरित किया।

मत्स्यपालन विभाग द्वारा प्रदान किए गए अवसर के तहत, उन्होंने वित्तीय वर्ष 2017-18 में नीली क्रांति के तहत “रेसवे में ट्राउट कृषि” गतिविधि के लिए आवेदन किया। योजना के तहत प्राप्त वित्तीय सहायता से, उन्होंने 0.35-0.50 टन की उत्पादन क्षमता के साथ एक रेसवे का निर्माण किया और 300 रेनबो ट्राउट फिंगरलिंग का स्टॉक किया। उन्हें ₹4.50 लाख की कुल परियोजना लागत की तुलना में इनपुट लागत के लिए ₹3.60 लाख की वित्तीय सहायता मिली और बाकी का निवेश स्वयं किया गया। ट्राउट की कृषि ने उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थितियों को सुधारा है, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को कई गुना बढ़ा दिया है, और इसे आजीविका समर्थन और प्रोटीन सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए इसमें बदल दिया है।

यह उद्यमिता का एक उदाहरण है क्योंकि उन्होंने पी.एम.एम.एस.वाई. योजना के तहत एक अतिरिक्त रेसवे का निर्माण करके अपनी इकाई का विस्तार करने का इरादा व्यक्त किया। इस काम की प्रगति को देखकर उसके माता-पिता उसे इकाई के प्रबंधन में मदद करते हैं। वे रोजगार प्रदान करते हैं और बेरोजगार युवाओं को मत्स्यपालन क्षेत्र में व्यवसाय शुरू करने के लिए मार्गदर्शन करके उनकी सहायता करते हैं।

नाम	मोहम्मद इलियास अहमद
जिला और राज्य	कारगिल, लद्दाख
शैक्षणिक योग्यता	12वीं कक्षा
व्यवसाय	किसान
मोबाइल सं.	9469730457
स्थापना का वर्ष	2018
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	रेसवे में ट्राउट का पालन
वार्षिक कारोबार	₹ 4.28 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	1.12 टन
रोजगार सृजित	2





फल विक्रेता से फलदायी हैचरी मालिक



नाम	कैलाश चंद्र वर्मा
जिला और राज्य	धार, मध्य प्रदेश
शैक्षिक योग्यता	बी.एससी. श्रेणी: ओ.बी.सी.
व्यवसाय	खेती और बीज उत्पादन
मोबाइल सं.	9993461204
स्थापना वर्ष	1989
फर्म का नाम	रमेश चंद्र वर्मा कैलाश चंद्र वर्मा मत्स्य बीज उत्पादन केंद्र
पद	सह-संस्थापक
व्यावसायिक गतिविधि	मछली बीज उत्पादन, मछली फीड आपूर्ति, और सजावटी मत्स्य उत्पादन
वार्षिक कारोबार	₹3 करोड़
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	वार्षिक मत्स्य उत्पादन - 5000 लाख स्पॉन और 100 लाख फ्राई
रोजगार सृजित	50

श्री कैलाश चंद्र वर्मा और उनका परिवार फल बेचने का व्यवसाय करता था। उनके पिता द्वारा अर्जित आय बहुत कम थी, इस विचार ने कैलाश और उनके भाइयों को विभिन्न व्यावसायिक अवसरों का पता लगाया। उन्होंने अपने जिले में मत्स्य बीज उत्पादन इकाइयों के बारे में जानकारी एकत्र करना शुरू कर दिया और इस तथ्य को महसूस किया कि उनके जिले में आपूर्ति की जाने वाली मत्स्य बीज पश्चिम बंगाल से आ रही थी। यह उनके लिए अपने गांव में मत्स्य बीज उत्पादन इकाई शुरू करने का एक बड़ा अवसर प्रतीत हुआ। 1989 में, उन्होंने बैंक ऑफ महाराष्ट्र से ₹ 2.18 लाख का ऋण लिया और मिट्टी के दो तालाबों का निर्माण किया। उन्होंने तालाब में पश्चिम बंगाल से लाए गए मत्स्य बीज का स्टॉक किया। सबसे पहले उन्होंने कटला, रोहू, मृगल और कॉमन कार्प को स्पॉन से फ्राई अवस्था तक पालना शुरू किया। स्पॉन से फ्राई अवस्था तक पालने के बाद, उन्होंने उन्हें स्थानीय मत्स्य किसानों को बेचना शुरू कर दिया। पश्चिम बंगाल से फ्राई लाने और खरीदने के बजाय, मत्स्य किसानों को उनसे खरीदने के वित्तीय लाभों का एहसास होने लगा, जिससे उनके लिए मछली व्यवसाय शुरू करने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

उन्होंने अपने व्यवसाय का विस्तार करने और मत्स्य उत्पादन बढ़ाने का फैसला किया। इसलिए, उन्होंने 2006 में ₹ 13 लाख का अतिरिक्त ऋण लिया और एक एकड़ जमीन खरीदी। उन्होंने 40 नए सीमेंट तालाब और 4 ऊष्मायन तालाब बनाए। इसके परिणामस्वरूप प्रतिवर्ष 1500 लाख का स्पॉन उत्पादन और 700 लाख का फ्राई उत्पादन बढ़ा। 2010-11 में उन्होंने स्पॉन उत्पादन बढ़ाकर 5000 लाख और फ्राई करके 1100 लाख कर दिया।

वर्तमान में, वह मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र राज्यों के जिलों में कतला, कॉमन कार्प, रोहू, मृगल, सिल्वर कार्प और ग्रास कार्प के स्पॉन, फ्राई और फिंगरलिंग की आपूर्ति करते हैं। 2017-18 में नीली क्रांति के तहत, उन्होंने एक फिश फीड मिल की स्थापना की और 40% सब्सिडी का लाभ उठाया। वर्तमान में, उनका खेत 12 हेक्टेयर है जिसमें 12 ऊष्मायन तालाब, 110 पालन टैंक और 25 ब्रूडर टैंक हैं। उनका भविष्य में फिश मिल्ट क्रायोप्रेजर्वेशन यूनिट स्थापित करने का भी लक्ष्य है। उनकी औसत वार्षिक आय लगभग ₹25 लाख है। उनकी दूरदृष्टि और कड़ी मेहनत के कारण, श्री वर्मा को विश्व मात्स्यिकी दिवस -2020 पर राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड (एन.एफ.डी.बी.) द्वारा “सर्वश्रेष्ठ मत्स्य उत्पादक”, “भारतीय उपलब्धि पुरस्कार” और “सर्वश्रेष्ठ फिनफिश हैचरी” से सम्मानित किया गया।





उत्सुक कृषक से एक अद्भुत मत्स्य किसान



श्रीमती कमला अजबराव कुरवाडे महाराष्ट्र के अमरावती जिले के मोरशी गांव की रहने वाली हैं। वह एक कृषक थी, जो अपने परिवार की आजीविका का प्रबंधन करती थी। हालांकि, अनियमित बारिश पैटर्न और बाजार दरों में उतारचढ़ाव के कारण, उन्हें वित्तीय संकट का सामना करना पड़ा। उस समय के दौरान, उन्होंने अमरावती में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम और रत्नागिरी में तीन दिवसीय सूचना कार्यक्रम में भाग लिया, जो मत्स्यपालन विभाग द्वारा आयोजित किया गया था, और मत्स्यपालन करने के लिए प्रेरित हुईं। इस बीच, उसने पाया कि उसका खेत, जो उसके घर से 1.5 किलोमीटर दूर है, मत्स्यपालन के लिए उपयुक्त है क्योंकि पास में काफी पानी है और खेत में अच्छी गुणवत्ता वाली मिट्टी है।

राज्य मत्स्यपालन विभाग के अधिकारियों के मार्गदर्शन और समर्थन के साथ, उन्होंने वित्तीय वर्ष 2020-21 के दौरान प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (पी.एम.एम.एस.वाई.) के अंतर्गत गतिविधि “नए ग्रो आउट तालाब का निर्माण” परियोजना के लिए आवेदन किया और 0.60 हेक्टेयर भूमि पर 20-25 टन की उत्पादन क्षमता वाला एक तालाब का निर्माण किया। कुल परियोजना लागत ₹ 14.5 लाख थी। उन्हें पी.एम.एम.एस.वाई. के अंतर्गत वित्तीय सहायता के रूप में ₹ 2.56 लाख की राशि मिली। अन्य ₹ 6.80 लाख ऋण के रूप में स्वीकृत किए गए। बाकी रकम खुद निवेश की थी।

आजकल, वह ठीक से फीड(फीड) और मछली की गुणवत्ता का प्रबंधन करती है। उसने केवल उन्हीं प्रजातियों की कृषि करना सीखा जिनकी मांग अधिक है ताकि उन्हें निकटतम बाजार में अच्छा बाजार मूल्य मिल सके। इससे उनकी आय में काफी वृद्धि हुई है और उन्हें प्रति माह ₹ 6.0 लाख मिलते हैं जो कि कृषि से प्राप्त होने वाली आय से बहुत अधिक है। वह अपनी उपज की गुणवत्ता में सुधार के लिए निकट भविष्य में अच्छी प्रबंधन प्रथाओं को अपनाने की योजना बना रही है।

नाम	कमला अजबराव कुरवाडे
जिला और राज्य	अमरावती, महाराष्ट्र
शैक्षिक योग्यता	चौथी कक्षा
श्रेणी	नोमेडिक जनजाति - बी
व्यवसाय	कृषि किसान
मोबाइल सं.	9561968792
स्थापना का वर्ष	2020
फर्म का नाम	जीरो माइल फिश फार्म
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	ग्रो-आउट तालाब कृषि (आई.एम.सी. और पंगेशियस)
वार्षिक कारोबार	लगभग ₹ 25 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	22 टन
रोजगार सृजित	16 प्रत्यक्ष और 20 अप्रत्यक्ष





ब्यूटीशियन से ओर्नामेंटल किसान



नाम	पल्लवी दीपक पानझाडे
जिला और राज्य	वाशिम, महाराष्ट्र
शैक्षणिक योग्यता	12वीं
श्रेणी	अनुसूचित जाति (एस.सी.)
व्यवसाय	एक्वेरियम और ओर्नामेंटल मछली की दुकान
मोबाइल सं.	9028437900
स्थापना का वर्ष	2022
फर्म का नाम	पानझाडे फिश एक्वेरियम
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	ओर्नामेंटल मछली और एक्वेरियम बेचना और उसकी सर्विसिंग
वार्षिक कारोबार	₹ 5 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	5 टन
रोजगार सृजित	2

श्रीमती पल्लवी दीपक पानझाडे महाराष्ट्र राज्य के वाशिम जिले से ताल्लुक रखती हैं। स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद, उन्होंने एक ब्यूटीशियन के रूप में अपना कैरियर शुरू किया। हालांकि, वह लगभग सोलह वर्ष पहले ओर्नामेंटल मछली क्षेत्र में चली गई। शुरुआत में, उसने अपने घर पर एक एक्वेरियम स्थापित करके इसे एक शौक के रूप में शुरू किया। दुर्भाग्य से, ज्ञान की कमी के कारण उसके पहले कुछ परीक्षण बुरी तरह विफल रहे। शुरुआती दिनों में उसका एक्वेरियम लीक हो गया और बहुत सारी मछलियां मर गईं। कई परीक्षणों और त्रुटियों के बाद, वह एक एक्वेरियम स्थापित करने में सफल रही। उन्हें बड़े आकार के एक्वेरियम को बेचने में भी समस्याओं का सामना करना पड़ा क्योंकि वे लीक हो गए या टूट गए और बदले में, उन्हें पूरी राशि वापस करनी पड़ी। एक समय था जब श्रीमती पानझाडे और उनके पति रात में एक्वेरियम की सर्विसिंग के लिए अपनी दुकान बंद करके साइकिल से जाते थे। एन.एफ.डी.बी. और स्थानीय मत्स्यपालन विभाग द्वारा आयोजित एक संगोष्ठी में भाग लेने के बाद उन्हें अपनी सभी समस्याओं का समाधान मिला

उनकी कड़ी मेहनत, असफलताओं और परिस्थितियों ने उन्हें इतना मजबूत बना दिया कि वह अपने घर से ही एक छोटा सा एक्वेरियम व्यवसाय शुरू कर सकी। वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान उन्होंने आखिरकार प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (पी.एम.एम.एस.वाई.) के अंतर्गत एक ओर्नामेंटल मछली कियोस्क खोला और 500 मछलियों की कुल क्षमता के साथ 100 वर्ग फुट क्षेत्र की एक इकाई स्थापित की। अब व्यवसाय फल-फूल रहा है, और इसने उन्हें ऐसी क्षमता प्रदान की है कि वे अब 2 लोगों को रोजगार दे सके। पी.एम.एम.एस.वाई. के अंतर्गत, श्रीमती पानझाडे ने ₹ 6 लाख की वित्तीय सहायता प्राप्त की। इस इकाई की स्थापना के लिए पहले वर्ष में कुल शुद्ध लाभ ₹ 5 लाख है। अब पानझाडे फिश एक्वेरियम अपने आप में एक ब्रांड है और इस क्षेत्र में सबसे अच्छी एक्वेरियम की दुकान के रूप में जाना जाता है। श्रीमती पानझाडे अच्छी गुणवत्ता वाले मत्स्य बीज, मत्स्य फीड, और जलकृषि दवाओं का उपयोग करती हैं। इकाई उचित स्वच्छता और सफाई के साथ “अच्छी संचालन प्रथाओं” का पालन करती है। इससे फर्म के कुल निर्यात और ब्रांड मूल्य में सुधार हुआ।

उनकी कड़ी मेहनत के साथ-साथ उनके पति और परिवार के समर्थन ने उन्हें व्यवसाय में आगे बढ़ने और एक सफल उद्यमी बनने के लिए प्रेरित किया। उनकी भविष्य की योजना मत्स्यपालन क्षेत्र में लोगों को पहुँचाने और फ्रेंचाइजी खोलकर व्यवसाय का विस्तार करने की है।





मूल्य संवर्द्धन: मूल्य जोड़ना

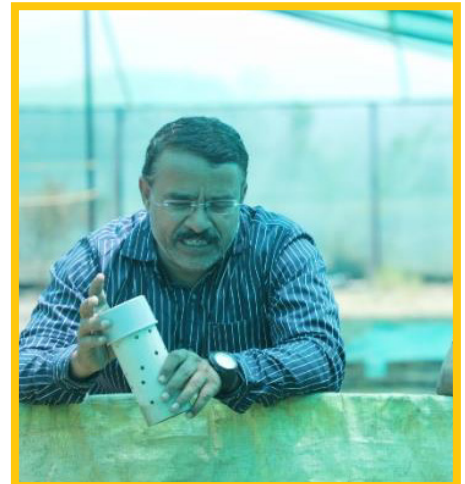


श्री रमेश नारायणराव पवार महाराष्ट्र के सतारा जिला के छिंदवली गांव के रहने वाले हैं। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद, उन्होंने कई व्यवसायों की कोशिश की, लेकिन प्रकृति और कृषि के अपने जुनून के कारण, उन्होंने अपने आसपास के किसानों के लिए कुछ करने की ठानी। इसलिए, कुछ समय तक कृषि करने के बाद उन्होंने इसकी अपार वित्तीय क्षमता के कारण जलकृषि सीखी। उन्होंने केवीके बारामती में एन.एफ.डी.बी. द्वारा बायोफ्लोक पर आयोजित प्रशिक्षण में भाग लिया और 2019 में बायोफ्लोक गतिविधि शुरू की।

कुल परियोजना लागत ₹ 36 लाख थी, जिसमें से वह दूसरों से व्यक्तिगत ऋण, बैंक ऋण के रूप में कुछ राशि प्राप्त करने में सफल रहे, और ₹ 16 लाख स्वयं द्वारा निवेश किए गए थे। उन्होंने 2019 में 25 टैंक (4 मी. x 1 मी.), 12 टैंक (6 मी. x 1.2 मी.), और 5 तालाब (100 मी.3) और 2020 में 0.35 हेक्टेयर में फैले एक तालाब (1200 मी.3) का निर्माण किया। प्रौद्योगिकी के लिए एक नौसिखिया के रूप में, उन्होंने टैंकों में कम वातन, उच्च मृत्यु दर, अच्छी गुणवत्ता वाले बीज की अनुपलब्धता, अमोनिया के स्तर में वृद्धि आदि जैसी कुछ चीजों को समझने में चुनौतियों का सामना करना पड़ा। जैसे-जैसे उन्होंने व्यवसाय में प्रगति की, उन्होंने डायफ्राम पंप की पूरी वातन प्रणाली को रिंग ब्लोअर से बदल दिया। और आगे पानी के मुद्दों से निपटने के लिए बायोफ्लोक पर ऑनलाइन लेखों का अध्ययन किया। नतीजतन, वह अपने व्यवसाय में सफल हुए और किसानों को अपने खेत पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करके इसे सीखने के लिए प्रोत्साहित किया। एक वर्ष के भीतर उन्होंने 25 से अधिक किसानों को प्रशिक्षित किया जिन्होंने लगभग 200 बायोफ्लोक इकाइयां शुरू कीं।

वह कीचड़ को हटाने के लिए एयरलिफ्ट तकनीक का उपयोग करता है क्योंकि यह पानी की बर्बादी को कम करने में मदद करता है। आस-पास के किसान जो कृषि में घाटे का सामना कर रहे थे, उनकी प्रगति को देखकर धीरे-धीरे जलकृषि में स्थानांतरित हो गए हैं। वह एक अच्छी गुणवत्ता वाली बीज हैचरी बनाने की योजना बना रहा है और एक फीड मिल स्थापित करने का इरादा रखता है जो ब्लैक सोल्जर फ्लाई (कीट प्रोटीन) का उपयोग करके फीड का निर्माण करेगी, जो कम लागत वाली पहल होगी। पिछले 3 वर्षों में, वह आर्थिक रूप से स्थिर रहे हैं और लोगों में मछली प्रोटीन की खपत के बारे में जागरूकता पैदा की है।

नाम	रमेश नारायणराव पवार
जिला और राज्य	सतारा, महाराष्ट्र
शैक्षिक योग्यता	बी.कॉम
वर्ग	सामान्य
व्यवसाय	किसान
मोबाइल सं.	9130017808
फर्म का नाम	गोल्डन फिश फार्म
स्थापना का वर्ष	2019
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	बायोफ्लोक
वार्षिक कारोबार	₹ 32 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	48 टन
रोजगार सृजित	5





कांटेक्टर से केज एक्वाकल्चरिस्ट बनना



नाम	संगिनी सीताराम घायल
जिला और राज्य	पुणे, महाराष्ट्र
शैक्षिक योग्यता	बी.कॉम.
श्रेणी	सामान्य
व्यवसाय	इंटीरियर कांटेक्टर (ठेकेदार)
मोबाइल सं.	9890003498
स्थापना वर्ष	2019
फर्म का नाम	केज कल्चर प्रोजेक्ट
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	आनुवंशिक रूप से उन्नत नस्ल के तिलापिया (जी.आई.एफ.टी.) की केज कल्चर
वार्षिक कारोबार	₹44.1 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	31.5 टन
रोजगार सृजित	8

श्रीमती संगिनी सीताराम घायल पुणे, महाराष्ट्र की रहने वाली हैं। उन्होंने बी.कॉम की पढ़ाई पूरी करने के बाद एक इंटीरियर कांटेक्टर (ठेकेदार) के रूप में काम किया। केज कल्चर व्यवसाय करने का विचार उन्हें 2018 में क्षेत्रीय उपायुक्त मत्स्यपालन, पुणे के कार्यालय की दौरा करने पर आया, जहाँ उन्हें जिला मत्स्यपालन अधिकारियों से मिलने का मौका मिला। जिला अधिकारियों के साथ विस्तृत चर्चा के बाद, उन्होंने पाया कि भविष्य में केज कल्चर एक आकर्षक व्यवसाय हो सकता है। इस तरह केज कल्चर प्रोजेक्ट की उनकी यात्रा शुरू हुई। प्रारंभ में, छह महीने के लिए उन्होंने हैदराबाद में मत्स्यपालन विभाग और राजीव गांधी एक्वाकल्चर केंद्र (आर.जी.सी.) द्वारा आयोजित विभिन्न व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया और मत्स्यपालन पर काफी ज्ञान प्राप्त किया।

उन्होंने केज कल्चर की शुरुआत ₹.89 लाख की कुल परियोजना लागत से की थी। उन्हें पी.एम.एम.एस.वाई. योजना के तहत वित्तीय सहायता के रूप में ₹ 32.4 लाख मिले, और शेष राशि के लिए उन्होंने बैंक से ऋण लिया। वित्तीय वर्ष 2019-20 में उन्होंने 1.5 टन प्रति केज की उत्पादन क्षमता वाले 24 केज स्थापित किए। कृषि के शुरुआती दिनों में, उन्हें कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा जैसे कि, उच्च फीड की कीमतें, कोविड -19 के कारण बाजार मूल्य में कमी आई। अपनी वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के लिए उसने अपनी पैतृक संपत्ति बेच दी और उतनी ही राशि व्यापार में लगा दी। वित्तीय वर्ष 2021-22 में, उन्हें ₹18.00 लाख शुद्ध लाभ के साथ 31.5 टन का वार्षिक उत्पादन प्राप्त हुआ। इस वित्तीय वर्ष 2022-23 में वे ₹70.00 लाख वार्षिक कारोबार के साथ 50 टन उत्पादन की उम्मीद कर रही हैं।

उन्होंने अपने गांव के युवाओं को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विपणन में रोजगार देकर उनके लिए रोजगार भी पैदा किया। अपने सभी विक्रेताओं और आपूर्तिकर्ताओं से समग्र सकारात्मक प्रतिक्रिया के साथ, वे साढ़े तीन वर्ष से इस परियोजना को सफलतापूर्वक चला रही हैं।





मत्स्य सखी का परामर्शदाता में बदलना



महाराष्ट्र के यवतमाल जिले में रालेगांव गांव कई प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न है। 2015 में, आदिवासी महिला किसानों के तीन समूहों ने 70 की संख्या में एन.जी.ओ. जलजीविका द्वारा प्रदान किए गए मुफ्त बीज का भंडारण करके लगभग 70 तालाबों में मत्स्यपालन शुरू किया। उनके पालन-पोषण के पहले वर्ष के दौरान शुद्ध लाभ ₹ 1.2 लाख था। सर्वोत्तम प्रबंधन प्रथाओं को अपनाने और मत्स्य बीज पालन के लिए छोटे मौसमी जल निकायों के उपयोग के कारण दूसरे वर्ष से लाभ में वृद्धि हुई। आजकल, वे मुख्य रूप से मोनोसेक्स तिलापिया कृषि करते हैं। तालाब के वैज्ञानिक प्रबंधन से तालाब की उत्पादकता 3-4 टन से बढ़कर 5-6 टन प्रति हेक्टेयर हो गई। 2020 में, ₹6 लाख के कारोबार के साथ शुद्ध लाभ ₹4.5 लाख था।

2016 में, उन्होंने छह मौसमी तालाबों में भारतीय मेजर कार्प के बीज उत्पादन के लिए अपनी हैचरी शुरू की। पहले वर्ष के दौरान, मत्स्य बीज का उत्पादन केवल 60,000 से 65,000 फिंगरलिंग का था, लेकिन 2020 में यह बढ़कर 20 लाख रुपये हो गया। लगभग 150 मत्स्य किसानों को मत्स्य बीज बेचकर, उन्होंने और ₹4.5 लाख कमाए।

अब मत्स्य किसानों के पहले बैच की महिलाएं गांव में विस्तार एजेंट के रूप में काम कर रही हैं और नए किसानों की सहायता कर रही हैं। “कृषि मंगल कार्यक्रम” के तहत - सिस्को इंडिया सीएसआर और सोशल अल्फा की एक संयुक्त पहल, जलजीविका ने आसपास के लगभग 577 छोटे आकार के तालाब मालिकों को ज्ञान और सहायता प्रदान करने के लिए “मत्स्य सखी” नाम की 15 महिला विस्तार एजेंटों की मदद की। “मत्स्य सखी” के इस निरंतर परामर्श-आधारित हस्तक्षेप के दौरान, औसत घरेलू आय ₹ 22,000 से बढ़कर ₹ 65,000 प्रति वर्ष हो गई। वर्तमान में, इन 15 महिलाओं के एक समूह ने मत्स्य बीज, फीड, चूना और अन्य आदानों की बिक्री का साहसिक कार्य किया। इसके अतिरिक्त, महिलाओं ने पी.एम.एम.एस.वाई. योजना के तहत प्रति दिन 2 टन क्षमता की फीड मिल के लिए आवेदन किया है। उन्होंने पी.एम.एम.एस.वाई. योजना के तहत केज कल्चर प्रोजेक्ट और रेफ्रिजरेटेड वाहनों के लिए आवेदन करने की भी योजना बनाई है।

स्थापना	महिला सामूहिक
राज्य	महाराष्ट्र
लाभार्थी	आदिवासी महिलाएं
गतिविधि	मोनोसेक्स तिलापिया और आईएमसी की संस्कृति, कृषि आदानों का विस्तार और बिक्री
हस्तक्षेप	जलजीविका





मूल्य संवर्द्धन: मूल्य जोड़ना



स्थापना	मूल्य वर्धित मत्स्य उत्पादों के लिए पायलट स्केल प्लांट
जिला और राज्य	नंदुरबार, महाराष्ट्र
स्थापना वर्ष	2021
लाभार्थी	नव जीवन आदिवासी मछुआरे सहकारी समिति, खैरवे
संपर्क व्यक्ति	श्री दिनेश वसावे
फोन नंबर	9359131262
व्यावसायिक गतिविधि	मूल्य वर्धित मछली उत्पादों की तैयारी और बिक्री
तकनीकी हस्तक्षेप	आईसीएआर-सीआईएफई

नव जीवन आदिवासी मछुआरा सहकारी समिति खैरवे, नवापुर बहुत सक्रिय है और हाल ही में उन्होंने 6 केजों की बैटरी में पंगेशियस की केज कल्चर शुरू किया है। केजों से औसत वार्षिक मत्स्य उत्पादन लगभग 12 टन है। केज कल्चर गतिविधियों में उनके उत्कृष्ट योगदान को ध्यान में रखते हुए, मत्स्यपालन विभाग, नंदुरबार ने इस आदिवासी मछुआरे सहकारी समिति को मूल्य वर्धित मछली उत्पादों के लिए एक पायलट प्लांट सुविधा स्थापित करने की सिफारिश की।

तदनुसार, आईसीएआर-सीआईएफई, मुंबई की जनजातीय उप योजना (टीएसपी) योजना के तहत प्रति दिन 200 किलोग्राम क्षमता का एक पायलट प्लांट स्थापित किया गया। इस सुविधा का उद्घाटन 16 सितंबर, 2021 को नव जीवन आदिवासी मछुआरा सहकारी समिति, खैरवे में किया गया था। तब से, भाकृअनुप-सीआईएफई, मुंबई के विशेषज्ञों द्वारा मूल्य वर्धित मछली उत्पादों की तैयारी पर चार प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिससे 200 आदिवासी महिलाओं को लाभ हुआ। इसके अलावा, 200 लाभार्थियों में से लगभग 24 आदिवासी महिलाओं को उनकी रुचियों और उनके कौशल को बढ़ाने के आधार पर चुना गया था। उन्होंने मार्च 2022 में अंशकालिक गतिविधि के रूप में मूल्य वर्धित मछली उत्पादों का उत्पादन और बिक्री शुरू की। वे गतिविधि पर प्रतिदिन 2 से 3 घंटे व्यतीत करते हैं। अब तक, समूह ने शुद्ध आय के रूप में ₹ 16,000/प्रति माह अर्जित किया है।

समूह उत्पादन बढ़ाने की प्रक्रिया में है, जिससे इसकी निवल संपत्ति में और वृद्धि होगी। इससे यह सुनिश्चित होगा कि प्रत्येक आदिवासी महिला या युवा को कम से कम ₹500 प्रतिदिन मिले। यह वर्तमान में क्षेत्र में आठ घंटे काम करने के बाद अर्जित ₹ 100 से ₹150 प्रतिदिन की आय की तुलना में है। वे ₹500 पाने की उम्मीद कर रहे हैं, जो निश्चित रूप से उनके जीवन स्तर को बढ़ाएगा।





लाभदायक मत्स्यपालन के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण



श्री कीफा अखम मरिंग मणिपुर के चंदेल जिले के एक छोटे से पहाड़ी गांव काजीफंग के मूल निवासी हैं। माध्यमिक शिक्षा पूरी करने के बाद, उन्होंने धान की खेती को अपनी आजीविका के रूप में लिया क्योंकि उनके परिवार का प्राथमिक व्यवसाय धान की खेती था। प्रारंभ में, उन्होंने दूसरे के कृषि क्षेत्रों में मजदूर के रूप में काम किया। इनसे परिवार अपने दिन-प्रतिदिन के घरेलू खर्च का प्रबंधन मुश्किल से कर पाता था।

मणिपुर में कई किसानों ने गरीबी और असमानता से लड़ने के लिए मत्स्यपालन को आय विविधीकरण के स्रोत के रूप में अपनाया है। श्री मरिंग ने महसूस किया कि काजीफंग गांव एक निचली भूमि पर स्थित है और धान की खेती के बजाय जलकृषि करने के लिए अत्यधिक उपयुक्त है। उन्होंने तुरंत अपनी जमीन पर 0.5 हेक्टेयर के एक छोटे से क्षेत्र में तालाब मत्स्यपालन किया। राज्य मत्स्यपालन विभाग के अधिकारियों के तकनीकी मार्गदर्शन से, उन्होंने धीरे-धीरे जलकृषि गतिविधियों के अपने क्षेत्र का विस्तार किया। वित्तीय वर्ष 2017-18 के दौरान, उन्हें “समग्र मछली कृषि प्रणाली” के लिए नीली क्रांति योजना के तहत पात्र लाभार्थियों में से एक के रूप में चुना गया था। उन्हें ₹ 0.90 लाख की वित्तीय सहायता प्राप्त हुई, जिसका उपयोग करके उन्होंने 2 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले हुए ग्रीनहाउस तालाबों का निर्माण किया। वर्तमान में, वह भारतीय मेजर कार्प, ग्रास कार्प और कॉमन कार्प की ग्रीनहाउस कल्चर में लगे हुए हैं। उनकी दो नर्सरी में, स्थानीय खेतों से प्राप्त फ्राई और छोटी फिंगरलिंग को उन्नत फिंगरलिंग के चरण तक उगाया जाता है और फिर उगाए गए (ग्रीनहाउस) तालाबों में रखा जाता है। वित्त वर्ष 2020-21 में उन्होंने ₹2.55 लाख के शुद्ध लाभ के साथ 4.15 टन मछली का उत्पादन किया।

आज मत्स्यपालन श्री मरिंग की कमाई का प्राथमिक स्रोत है। जलकृषि में उनका प्रयास उनके परिवार के लिए पर्याप्त आय प्रदान करता है। उन्होंने कुछ लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान किए।

नाम	कीफा अखम मरिंग
जिला और राज्य	चंदेल, मणिपुर
शैक्षणिक योग्यता	10वीं कक्षा
श्रेणी	अनुसूचित जाति
व्यवसाय	मत्स्य किसान
मोबाइल सं.	8414828087
स्थापना का वर्ष	2015
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	आई.एम.सी., ग्रास कार्प और कॉमन कार्प की कृषि विकसित करें
वार्षिक कारोबार	₹ 2.55 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	4.15 टन
रोजगार सृजित	4





दिल की समस्याओं की चिकित्सा के लिए मछली की कृषि



नाम	जेवियर नेंगखानलाम
जिला और राज्य	चुराचांदपुर, मणिपुर
शैक्षिक योग्यता	बी.ए.
श्रेणी	एस.टी.
व्यवसाय	मत्स्य किसान
मोबाइल सं.	8119980156
स्थापना का वर्ष	2017
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	मत्स्य उत्पादन – आई.एम. सी.
वार्षिक कारोबार	₹ 60,000
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	375 किलो
रोजगार सृजित	2

श्री जेवियर नेंगखानलाम थिंगकांगफाई गांव, चुराचनपुर जिला, मणिपुर के रहने वाले हैं। उन्होंने कला में स्नातक किया और व्यवसाय करना शुरू कर दिया और प्रति माह ₹ 15,000 कमा रहे थे। रेड मीट के सेवन से वहाँ रहने वाले अधिकांश निवासियों को हृदय की समस्याओं का खतरा था। यहां तक कि मिस्टर जेवियर को भी मधुमेह था और वह रेड मीट का सेवन करते थे। उन्होंने पाया कि लाल मांस को बदलने के लिए मछली सबसे अच्छा भोजन हो सकती है। इसने उन्हें मछली के स्वास्थ्य मूल्य को जानने के लिए गंभीरता से विचार किया। शोध करते समय, उन्होंने देखा कि मत्स्य व्यवसाय का विस्तार हो रहा है और वे इसमें शामिल हो सकते हैं। इससे उन्हें अपने पारंपरिक कटाव को छोड़ने और झूम की खेती को जलाने में मदद मिली क्योंकि इसने पारिस्थितिकी को तबाह कर दिया और वनों की हार्वेस्ट का कारण बना। धीरे-धीरे, उन्होंने मत्स्यपालन को आगे बढ़ाने का फैसला किया जो उन्हें अधिक स्थिर आय प्रदान कर सके और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार पैदा कर सके।

मत्स्यपालन विभाग, मणिपुर के मार्गदर्शन और तकनीकी सहायता से उन्होंने 0.2 टन उत्पादन क्षमता वाले तीन तालाबों का निर्माण किया। उन्होंने एनईसी के तहत ₹ 4.50 लाख की कुल परियोजना लागत के मुकाबले ₹ 1.42 लाख की वित्तीय सहायता प्राप्त की, और श्री नेंगखानलाम ने शेष राशि को समायोजित किया। उन्होंने 2019 के दौरान मत्स्यपालन कॉलेज, केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, लेम्बुचेरा, त्रिपुरा राज्य में 250 घंटे के ऑन-हैंड प्रशिक्षण जैसे जलकृषि पर विभिन्न कक्षाओं और पाठ्यक्रमों में भाग लिया।

उन्होंने प्रत्येक तालाब में 700 फिंगरलिंग के भंडारण घनत्व पर विभिन्न प्रजातियों, मुख्य रूप से रोहू, कतला, मृगल, ग्रास कार्प और कॉमन कार्प की खेती की। उन्होंने बीएमपी की प्रक्रियाओं का पालन किया, जैसे पानी की मात्रा की नियमित जांच, गाय का गोबर, चूना, आदि जैसी खाद; हालांकि, पूरक आहार उपलब्ध कराना उसके लिए वहनीय नहीं था। उन्होंने तालाब के पानी के डीओ स्तर को बढ़ाने के लिए स्थानीय रूप से निर्मित जलवाहक की खरीद की। वह हर दो महीने में एक बार मछली के वजन और शरीर की लंबाई का भी निरीक्षण करता है और 8 से 12 महीने की अवधि में फसल की हार्वेस्ट करता है। उन्होंने अधिक कौशल हासिल किया और सीखा कि दूसरों को कैसे प्रेरित किया जाए। वह बायोप्लोक यूनिट शुरू करने की योजना बना रहे हैं।





धनेश्वर दढ़ संकल्प के परिणामस्वरूप अच्छी आजीविका हुई



1960 के दशक में, पड़ोसी राज्य असम के मछली व्यापारी दुधनाई और कृष्णाई जैसे पड़ोसी गाँवों से गाँव के किसानों से मछलियाँ खरीदकर गुवाहाटी और शिलांग तक मछलियाँ ले जाते थे। व्यापारी मत्स्य बीज को ₹ 3/किलोग्राम खरीद कर गुवाहाटी और शिलांग ले जाते थे। इसे और अपने साथी ग्रामीणों द्वारा अर्जित लाभ को देखकर, श्री धनेश्वर राभा के पिता ने अपने खर्च पर 0.5 हेक्टेयर का एक तालाब का निर्माण किया और मत्स्यपालन शुरू किया। इससे पहले, वह एक कृषि किसान थे।

श्री राभा मछली तालाब बनाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने वित्तीय और तकनीकी सहायता के लिए राज्य मत्स्यपालन विभाग से संपर्क किया। 1983 में, उन्हें ₹300 की सब्सिडी मिली। प्रारंभिक चरण में, खुद को प्रासंगिक कौशल से लैस करने के लिए, उन्हें मत्स्यपालन से संबंधित किसी भी प्रशिक्षण पाने का कोई अवसर नहीं मिला। हालांकि, मत्स्यपालन शुरू करने की उनकी इच्छा फीकी नहीं पड़ी; इसके बजाय, इसने उन्हें 0.5 हेक्टेयर के क्षेत्र में फैली अपनी मछली कृषि को जारी रखने में मदद की। उनकी मत्स्यपालन की सफलता को देखते हुए, मत्स्यपालन विभाग ने उन्हें वित्तीय वर्ष 2018-19 के दौरान नीली क्रांति के तहत कुल परियोजना लागत ₹ 5 लाख के मुकाबले प्रथम वर्ष की इनपुट लागत के रूप में ₹ 3 लाख की सहायता की। यह सहायता उनके पुत्र श्री भास्कर राभा को एक हेक्टेयर के तालाब के निर्माण के लिए प्रदान की गई थी। वर्तमान में उनके पास 1.5 हेक्टेयर कृषि क्षेत्र है।

किए गए हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप, वह ₹ 1.5 लाख/वर्ष का अतिरिक्त राजस्व अर्जित कर रहा है। अब, वह युवाओं को आय सृजन के लिए मत्स्यपालन को एक पेशे के रूप में अपनाने के लिए सलाह देते हैं। वह तैयार फ़ीड के साथ उचित आहार प्रथाओं का उपयोग करता है और मछली के स्वास्थ्य की निगरानी करता है। चूंकि उनके क्षेत्र में सस्ता और अच्छी गुणवत्ता वाला बीज आसानी से उपलब्ध नहीं होता है और इसे पड़ोसी राज्य से आयात करना पड़ता है, श्री राभा ने जल्द ही मत्स्य बीज उत्पादन के लिए एक हैचरी स्थापित करने का निर्णय लिया है। उन्होंने हैचरी संचालन के साथ-साथ एकीकृत मत्स्यपालन में भी अपनी रुचि व्यक्त की।

नाम	धनेश्वर राभा
जिला और राज्य	उत्तरी गारो हिल्स, मेघालय
शैक्षिक योग्यता	5वीं कक्षा
वर्ग	अनुसूचित जनजाति
व्यवसाय	मत्स्य किसान
मोबाइल सं.	9612834168
स्थापना वर्ष	2021
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	आई.एम.सी. और विदेशी कार्प तालाब की कृषि
वार्षिक कारोबार	₹ 2.25 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	81,000 टन
रोजगार सृजित	3





बीज उत्पादन और कृषि से परिवार की सहायता



नाम	ग्रिती अरेंच
जिला और राज्य	दक्षिण पश्चिम खासी हिल्स, मेघालय
शैक्षिक योग्यता	कोई औपचारिक शिक्षा नहीं
श्रेणी	एसटी
व्यवसाय	गृहिणी और मत्स्य किसान
मोबाइल सं.	9862703391
स्थापना का वर्ष	2018
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	मत्स्यपालन और बीज उत्पादन
वार्षिक कारोबार	₹ 1.5 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	विकसित तालाब से 1 टन और फिंगरलिंग से 300 किलोग्राम
रोजगार सृजित	35

श्रीमती ग्रिती अरेंच मेघालय के दक्षिण पश्चिम खासी हिल्स जिले के लोअर राजपन गांव की रहने वाली हैं। वह एक गृहिणी हैं और वित्तीय संकट का सामना कर रही थी और अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए कुछ करना चाहती थी। वह बांग्लादेश से सटे सीमा क्षेत्र में रहती हैं, जहाँ की जलवायु जलकृषि के लिए अनुकूल है। राज्य के मत्स्यपालन विभाग के मार्गदर्शन और तकनीकी सहायता और अपने परिवार की सहायता करने की इच्छा के साथ, श्रीमती अरेंच ने मत्स्यपालन की यात्रा शुरू की।

नीली क्रांति 2018-19 के तहत, उन्होंने ₹ 8.5 लाख की कुल परियोजना लागत के साथ ग्रो-आउट और पालन तालाबों के निर्माण के लिए आवेदन करके अधिक तालाब विकसित करने के लिए मत्स्यपालन में उद्यम किया। मत्स्यपालन के अपने साप्ताहिक कार्य के प्रारंभिक चरण में उसने 200-300 किलोग्राम मछली हार्वेस्ट की। 2021 में, उसने स्टॉकिंग दरों में वृद्धि की और 800-1000 किलोग्राम फसल का प्रबंधन कर सकी। वह फार्म गेट पर मछली की मार्केटिंग करती थी जिससे कई लोगों को फार्म के बारे में पता चलता था। उसने मत्स्यपालन से फिंगरलिंग और टेबल के आकार की मछली बेचकर अच्छा लाभ कमाया। उन्होंने रोहू, कतला, सिंधी, पंगा, चाइना पुटी और चितोल की कृषि की। उसके सुव्यवस्थित तालाबों और उसे मिलने वाली आय का पड़ोस पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। उसकी अधिकांश फसल फोटोकरोह और बलात बाजारों के साथ-साथ खेत में भी बेची जाती है। तालाब बहुत सारे एंगलर्स को आकर्षित करते हैं। हालांकि, मछली पकड़ने को प्रोत्साहित नहीं किया जाता है और केवल कुछ को ₹.500 प्रति मछली पकड़ने वाली छड़ी प्रति दिन की दर से अनुमति दी जाती है।

मत्स्यपालन के अलावा, वह मत्स्य बीज भी बेचती हैं और उनका उद्देश्य आसपास के गांवों को अच्छा मत्स्य बीज उपलब्ध कराना है। वह एकीकृत खेती का अभ्यास करती हैं जिससे उसे अपने तालाबों को फीड उपलब्ध कराने की लागत कम करने में मदद मिलती है। सृजित आय का उपयोग परिवार और घरेलू खर्चों को पूरा करने के लिए किया जाता है।





रिलियन ने विश्वसनीय मत्स्यपालन को चुना



श्रीमती रिलियन नोंगलांग मेघालय के पश्चिम खासी जिले के जाखोंग गांव की रहने वाली हैं। मत्स्यपालन का अभ्यास करने से पहले, वह कृषि में लगी हुई थी। पक्की सड़कों और परिवहन जैसे बुनियादी ढांचे की कमी के कारण, उनके लिए कृषि उपज का विपणन करना कठिन हो रहा था; इसलिए उसने आय के वैकल्पिक स्रोत के बारे में सोचा। उन्होंने मत्स्यपालन विभाग से संपर्क किया और मत्स्यपालन में एक गतिविधि शुरू करने की इच्छा व्यक्त की। मत्स्यपालन विभाग के मार्गदर्शन एवं सहयोग से उन्होंने वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत 0.25 एकड़ क्षेत्र में एक तालाब का निर्माण किया। उन्हें ₹ 1.24 लाख की कुल परियोजना लागत के मुकाबले प्रथम वर्ष के इनपुट के रूप में ₹ 0.74 लाख की वित्तीय सहायता मिली और शेष राशि का निवेश स्वयं किया गया।

उसने 1000 नग का स्टॉक किया। एक टन मछली हार्वेस्ट की और अपने गांव में उसे ₹300/ किलोग्राम पर बेच दिया। उसने सभी प्रकार के तालाब प्रबंधन प्रथाओं, यानी प्री-स्टॉकिंग, स्टॉकिंग और पोस्ट-स्टॉकिंग प्रबंधन प्रथाओं का उपयोग किया। श्रीमती नोंगलांग अपने तालाब में मत्स्यपालन को अपनी सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार लाने और अपने जीवन स्तर में सुधार करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रही हैं। वह अपने पड़ोसियों के लिए मत्स्यपालन करने और रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए एक प्रेरणा बन गई हैं।

नाम	रिलियन नोंगलांग
जिला और राज्य	पश्चिम खासी हिल्स, मेघालय
शैक्षिक योग्यता	निम्न प्राथमिक
वर्ग:	अनुसूचित जनजाति
व्यवसाय	किसान
मोबाइल सं.	8837362876
स्थापना वर्ष	2021
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	मत्स्य कृषि
वार्षिक कारोबार	₹ 30,000
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	1 टन
रोजगार सृजित	3





शौक को पेशे में बदलना



नाम	एफ. लालडिंगलियाना
जिला और राज्य	चम्पाई, मिजोरम
शैक्षणिक योग्यता	स्नातक
वर्ग	अनुसूचित जनजाति
व्यवसाय	मत्स्य किसान
मोबाइल सं.	8414962807
स्थापना का वर्ष	2017
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	मत्स्य कृषि
वार्षिक कारोबार	₹7 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	2 टन
रोजगार सृजित	8

श्री एफ. लालडिंगलियाना मिजोरम के चम्पाई जिले के कहरवत गांव के रहने वाले हैं। वह अपने ग्राम परिषद के सदस्य हैं। मत्स्यपालन शुरू करने से पहले, वह एक कृषि किसान थे, जो खेती से बहुत कम आय अर्जित करते थे। अपनी भूमि पर, उन्होंने केवल कृषि का अभ्यास किया; और अपनी आय बढ़ाने के लिए उन्होंने जलकृषि को अपनाया। मछली के स्वास्थ्य लाभ और उचित बाजार मूल्य मत्स्यपालन में स्थानांतरित करने के लिए उनकी प्राथमिक प्रेरणा थी।

उन्होंने वित्तीय वर्ष 2017 के दौरान नीली क्रांति योजना के तहत “नए तालाबों के निर्माण” गतिविधि के लिए आवेदन किया और उन्होंने 2 हेक्टेयर क्षेत्र में 19 तालाबों का सफलतापूर्वक निर्माण किया। ₹ 8 लाख की कुल परियोजना लागत की तुलना में, उन्हें प्रथम वर्ष के इनपुट के रूप में ₹ 1.73 लाख की वित्तीय सहायता प्राप्त हुई और लाभार्थी द्वारा ₹ 6.27 लाख का निवेश किया गया।

पिछले पांच वर्षों में, कुल मत्स्य उत्पादन ₹ 10 लाख के कुल व्यय के साथ 8 टन था, जिसमें ₹ 31 लाख का रिटर्न मिला और उसे ₹ 21 लाख का शुद्ध लाभ हुआ। मत्स्यपालन के 5 वर्षों के अभ्यास के बाद, उन्होंने कॉमन कार्प प्रजनन में अपने ज्ञान में सुधार किया, इससे उन्होंने अपनी जलकृषि गतिविधि को बनाए रखने में मदद की। उन्होंने अपने फार्म में मिश्रित मत्स्यपालन तकनीक को अपनाया।

श्री लालडिंगलियाना मत्स्यपालन से अतिरिक्त आय अर्जित कर रहे हैं जिससे उनकी बचत में सुधार हुआ है। उन्होंने आठ मछुआरों को रोजगार के अवसर प्रदान किए। उनका उद्देश्य बेहतर आजीविका के लिए मत्स्यपालन में सुधार करना है। उन्हें 2019 में सर्वश्रेष्ठ मत्स्य किसान पुरस्कार (पूर्वोत्तर राज्यों से) मिला।





एकीकृत कृषि से मॉडल मत्स्यपालन तक का सफर

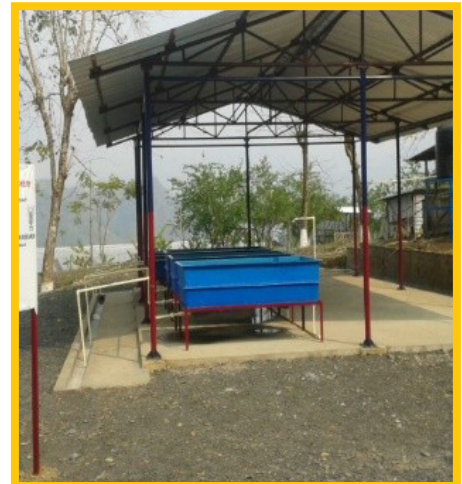


श्री डम्रातोशी नागालैंड के मोकोकचुंग जिले के लोंगकॉंग गांव के रहने वाले हैं। 2010 में, उन्होंने कुछ ग्रीनहाउस तालाबों और सुअर पालन, और एक वनस्पति उद्यान के साथ एकीकृत मत्स्यपालन शुरू किया। गतिविधि में एक नौसिखिया के रूप में, उन्हें नुकसान हुआ और वित्तीय संकट का सामना करना पड़ा। जब उन्होंने नुकसान पर मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए मत्स्यपालन विभाग से संपर्क किया, तो उन्हें पता चला कि मत्स्यपालन क्षेत्र की आय अन्य कृषि गतिविधियों से उत्पन्न आय की तुलना में बहुत अधिक है।

मत्स्यपालन विभाग, नागालैंड के मार्गदर्शन और समर्थन से उन्होंने वित्तीय वर्ष 2017-18 के दौरान नीली क्रांति के तहत ग्रीनहाउस तालाब और महासीर के लिए एक हैचरी इकाई के लिए आवेदन किया। महासीर के प्रजनन के लिए उन्हें भाकृअनुप-शीत जल मात्स्यिकी अनुसंधान निदेशालय, भीमताल से तकनीकी सहायता मिली। वर्तमान में उनके पास 12 ग्रीनहाउस तालाब हैं। उसके पास पानी का एक अच्छा स्रोत है जहां वह अपने लिए बिजली पैदा करता है और पड़ोसी किसानों को भी बिजली मुहैया कराता है। उन्होंने अपने खेत में मछली पकड़ने और अन्य मनोरंजक गतिविधियों को प्रदान करके मत्स्य-आधारित पर्यावरण-पर्यटन शुरू किया है।

वर्तमान में, उनके खेत को जिले के लिए एक मॉडल फार्म के रूप में माना जाता है और मान्यता प्राप्त है और वह इसे उत्तर पूर्वी भारत के सर्वश्रेष्ठ इको-टूरिज्म फार्मों में से एक के रूप में भी लाने की योजना बना रहे हैं। मछली पालन, सुअर पालन, सब्जी की खेती और मत्स्य आधारित इको-टूरिज्म के कारण पिछले दो वर्षों के दौरान, उनका वार्षिक कारोबार ₹ 20 लाख है, जिसमें शुद्ध लाभ ₹ 12 लाख है। अपनी प्रथाओं और प्रयासों के परिणामस्वरूप उन्होंने अपनी आर्थिक स्थिति का उत्थान किया है और दूसरों को रोजगार प्रदान किया है। उन्होंने अपने मौजूदा फार्म को मॉडल फिश फार्म के रूप में स्थापित करने की योजना बनाई है।

नाम	डम्रातोशी
जिला और राज्य	चम्फाई, नागालैंड
शैक्षिक योग्यता	मैट्रिकुलेट
वर्ग	अनुसूचित जनजाति
व्यवसाय	किसान
मोबाइल सं.	8837098298
स्थापना का वर्ष	2017
फर्म का नाम	सुदातलोआंडन फिश फार्म
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	ग्रीनहाउस पॉन्ड कल्चर
वार्षिक कारोबार	₹ 20 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	2 टन
रोजगार सृजित	17





एकीकृत कृषि लाभकारी कृषि



नाम	अर्नपूर्णा नायक
जिला और राज्य	खोरधा, ओडिशा
शैक्षिक योग्यता	हाई स्कूल
श्रेणी	सामान्य व्यवसाय: खेती
मोबाइल सं.	7008799926
स्थापना का वर्ष	2016
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	मत्स्यपालन, बागवानी और मुर्गी पालन
वार्षिक कारोबार	₹ 2.5 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	1200 किलो
रोजगार सृजित	5

श्रीमती अर्नपूर्णा नायक ओडिशा के खोरधा जिले के गांव पुरोहितपुर की रहने वाली हैं। वह एक गृहिणी हैं और अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए कृषि खेती करती हैं। उन्हें अनियमित वर्षा, गुणवत्तापूर्ण बीज सामग्री की अनुपलब्धता और खराब घरेलू आय जैसी विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ा। इसे कम करने के लिए, उसने मत्स्यपालन के लिए अपने कृषि क्षेत्र को बदलने का फैसला किया। उन्होंने 2016 में आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.ए. द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की एक श्रृंखला में भाग लिया। उन्होंने एक एकड़ भूमि के एक तालाब का निर्माण किया और चार एकड़ के एक और तालाब का निर्माण करके अपने कृषि फार्म का विस्तार किया।

2017 में, उन्होंने एक एकड़ में एक बागवानी फार्म और 1.10 एकड़ में एक पोल्ट्री फार्म शुरू किया। अपने व्यवसाय के विस्तार और अधिक खेतों के निर्माण के लिए, उसने ₹18 लाख का निवेश किया। वित्त वर्ष 2022 में, उन्हें जलकृषि से ₹ 2.5 लाख का रिटर्न मिला और ₹ 1.50 लाख का शुद्ध लाभ मिला। सभी गतिविधियों से उसका कुल रिटर्न ₹ 8.24 लाख था। उसने पांच लोगों को रोजगार दिया। एक एकड़ के तालाब से वार्षिक कारोबार लगभग ₹ 2.50 लाख है।

अपनी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए, वह अपने गांव में व्यावसायिक स्तर पर जलकृषि गतिविधि का विस्तार करने की योजना बना रही है।





गतिविधियों का एकीकरण - उद्यमी मॉडल का उदाहरण



ओडिशा की श्रीमती झिना परिदा ने मत्स्यपालन क्षेत्र में उद्यम करने के लिए एक ठोस दृढ़ संकल्प के साथ अपनी उद्यमशीलता की यात्रा शुरू की। उन्होंने भागबनपुर में “माँ बुद्धि जगुलेई फिश सीड हैचरी” की स्थापना की और भाकृअनुप-सीफा के तकनीकी सहयोग से 20 लाख कॉमन कार्प बीजों का उत्पादन किया। पहले वर्ष में, उसने ₹7 लाख का शुद्ध लाभ कमाया। श्रीमती परिदा की व्यवसाय में सुधार की इच्छा और उत्साह ने एक नए जुड़ाव को जन्म दिया जब उन्हें एन.एफ.डी.बी.-एन.एफ.एफ.बी.बी. द्वारा संवृद्धित बीजों की उन्नत किस्मों के बारे में पता चला। उसने एन.एफ.डी.बी.-एन.एफ.एफ.बी.बी. से अमूर कार्प बीज खरीदा। एक वर्ष में, अमूर कॉमन कार्प ने 1.50 से 2.50 किलोग्राम तक की जबरदस्त वृद्धि दिखाई। उन्होंने अमूर फ्राई को फिंगरलिंग स्टेज तक भी पाला और 150 किसानों को 15,000 फिंगरलिंग बेचे। तब से, उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा और अगले वर्ष उसका शुद्ध लाभ बढ़कर ₹ 11 लाख हो गया। आज की तारीख में, उसके पास 32 एकड़ बीज पालन इकाइयाँ हैं।

अब फार्म में 3000 किसानों का एक नेटवर्क है, जिसके लिए वे न केवल मत्स्य बीज की आपूर्ति करते हैं, बल्कि मत्स्य किसानों को तकनीकी सहायता सेवाएं प्रदान करने के लिए हैचरी में एन.एफ.डी.बी. और फिशकॉपफेड के सहयोग से एक्वावन केंद्र की स्थापना करके उनको तकनीकी सहायता भी प्रदान करते हैं।

वह एक छोटे मत्स्य बीज उत्पादक से एक उद्यमी कोने की अपनी यात्रा का श्रेय देती हैं। अब वह आनुवंशिक प्रोटोकॉल को बनाए रखते हुए “अमूर कॉमन क्रेप” बीज के उत्पादन पर ध्यान केंद्रित कर रही है। लाभ से मछली रोगों के निःशुल्क उपचार और सीफा के सहयोग से निःशुल्क शिविर आयोजित करने के लिए “किसान कल्याण कोष” बनाया गया।

उन्होंने जलकृषि करके प्रसिद्धि प्राप्त की। भविष्य में, उनका लक्ष्य नर्सरी क्षेत्र को 50 एकड़ तक विस्तारित करना, बीज परिवहन वाहन खरीदना और अधिक महिलाओं को इस प्रकार के उद्यमों को लेने के लिए प्रोत्साहित करना है।

नाम	झिना परिदा
जिला और राज्य	भगवानपुर, ओडिशा
शैक्षिक योग्यता	उच्च माध्यमिक शिक्षा मैट्रिक
श्रेणी	सामान्य
व्यवसाय	कृषि उद्यमी (एक्वाकल्चर)
मोबाइल सं.	9777637276
फर्म का नाम	माँ बुद्धि जगुलेई फिश सीड हैचरी
स्थापना का वर्ष	2016
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	हैचरी और एक्वा वन सेंटर (जीआई आईएमसी)
वार्षिक कारोबार	₹ 1.5 करोड़
वार्षिक मत्स्य बीज उत्पादन	80 मिलियन
रोजगार सृजित	3000 प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष





निर्बाध व्यवसाय: बीज व्यवसाय



नाम	सपन कुमार पाला
जिला और राज्य	बोलांगीर, ओडिशा
शैक्षणिक योग्यता श्रेणी	एम.एफ.एससी. मत्स्यपालन सामान्य
व्यवसाय	एक्वाप्रेन्योर
मोबाइल सं.	9437240655
स्थापना का वर्ष	2000
फर्म का नाम	सपन फिश सीड्स फार्म
पोजीशन	प्रोपराइटर
व्यावसायिक गतिविधि	मीठे पानी की कार्प हैचरी और मत्स्य बीज, दवाएं, अन्य जलकृषि आदानों आदि का व्यापार।
वार्षिक कारोबार	₹1.5 करोड़
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	20 करोड़ स्पॉन, 2 करोड़ फ्राई, 1 करोड़ फिंगरलिंग, 10 टन ईयरलिंग और 10 टन टेबल फिश
रोजगार सृजित	20 स्थायी परिवार और 50 मौसमी कर्मचारी

श्री सपन कुमार पाला के पिता श्री प्रभाकर पाला द्वारा एक छोटे पैमाने पर जलकृषि परियोजना पर, सपन मत्स्य बीज फार्म शुरू किया गया था। मछली की प्रजातियां जैसे- रोहू, कतला, मृगल, कॉमन कार्प, ग्रास कार्प, सिल्वर कार्प, जयंती रोहू और अमूर कार्प हैचरी में पाले जा रहे हैं। अपने पिता के व्यवसाय को और अधिक ऊंचाइयों तक ले जाने और जलकृषि में अधिक ज्ञान प्राप्त करने की दृष्टि से, उन्होंने मत्स्य विज्ञान में स्नातकोत्तर किया और उसके बाद वे अपने पिता के व्यवसाय में शामिल हो गए। यह फार्म 15 हेक्टेयर के क्षेत्र में फैला हुआ है, जिसमें एक चीनी गोलाकार हैचरी, एक पालन इकाई और एक पैकिंग इकाई है।

उन्होंने तालाब निर्माण के लिए जैसे मत्स्य किसान विकास एजेंसी (एफ.एफ.डी.ए.) से ₹ 2 लाख, तालाब निर्माण के लिए नीली क्रांति योजना के तहत ₹ 4.50 लाख, मत्स्य पोखरी योजना के तहत ₹ 4 लाख, और वित्तीय वर्ष 2020-21 के दौरान गतिविधि 'हैचरी का निर्माण' के लिए पी.एम. एम.एस.वाई. योजना के तहत ₹ 15 लाख और विभिन्न स्रोतों से वित्तीय सहायता प्राप्त की। वर्तमान में, उनके खेत में 3 बड़े ब्रूड स्टॉक टैंक, 28 पालन तालाब और 20 नर्सरी टैंक हैं जो नर्सरी तालाबों के रूप में उपयोग किए जाते हैं।

उन्होंने स्वस्थ ब्रूड स्टॉक विकसित करने और बीमारियों के प्रसार को कम करने के लिए सर्वोत्तम प्रबंधन प्रथाओं (बी.एम.पी.), प्रोबायोटिक-आधारित जैव सुरक्षा उपायों, चूने के अनुप्रयोग और अर्ध-गहन वैज्ञानिक और पोषण फ्रीड प्रबंधन आदि को लागू किया। एन.एफ.डी.बी. की वित्त पोषित एक्वा वन सेंटर परियोजना के तहत फिशकोफेड के सहयोग से एक छोटी प्रयोगशाला परीक्षण सुविधा स्थापित की गई थी। पॉली-ऑक्सीजन पैकेजिंग के लिए एक पैकेजिंग शेड और बीज और ब्रूड परिवहन के लिए एक वातित पिकअप वैन स्थापित की गई है। 2019 में, उन्होंने हैचरी के नेटवर्क का हिस्सा बनने और अमूर कार्प, जयंती रोहू और बेहतर कटला के उन्नत ब्रूड्स विकसित करने के लिए नेशनल फ्रेशवाटर फिश ब्रूड बैंक (एन.एफ.डी.बी.-एन.एफ.एफ.बी.बी.), भुवनेश्वर के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए, वह नवीनतम तकनीकों का उपयोग करने, नई प्रजातियों के प्रजनन और एक्वा उद्योग में नए रुझान विकसित करने और युवाओं को प्रशिक्षित करने की योजना बना रहा है। वह ओडिशा और छत्तीसगढ़ में किसानों को स्पॉन, फिंगरलिंग और फ्राई प्रदान करते हैं और इसके सदस्य के रूप में 2,200 से अधिक किसान हैं। इसके अतिरिक्त, कृषि विश्वविद्यालयों के छात्रों के अध्ययन दौरे, स्वयं सहायता समूहों और किसानों के प्रदर्शन दौरे और अन्य गतिविधियाँ उनके फार्म पर की जा रही हैं।





महिला उद्यमी मात्स्यिकी में मूल्य शृंखला को पुनः आकार देते हुए



ऑरोफिश मछली और मत्स्य उत्पादों का एक ब्रांड है जिसका स्वामित्व एक महिला उद्यमी श्रीमती अनीता मुथुवेल के स्वामित्व में है, जो जी.ई.एफ. / विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित और बी.ओ.बी. पी. द्वारा कार्यान्वित ओशन पार्टनरशिप प्रोजेक्ट के समर्थन से है। 2018 में पुडुचेरी के वैथिकुप्पम गांव में उनके पैतृक घर और बगल की जमीन को बदलकर एक आधुनिक मछली प्रसंस्करण इकाई स्थापित की गई थी। ऑरोफिश को एक अभिनव मॉडल के रूप में शुरू किया गया था ताकि मछुआरों को जिम्मेदारी से मछली के स्रोत के लिए प्रोत्साहित किया जा सके और यह सुनिश्चित किया जा सके कि कैच एक स्वच्छ स्थिति में उपभोक्ता तक पहुंचे। इसके लिए, श्रीमती मुथुवेल ने वैथिकुप्पम और नादुकुप्पम गांवों से छोटी एफ.आर.पी. नावों के मालिक 20 मछुआरों का एक सहकारी नेटवर्क बनाया। अपने मछुआरों की टीम को टूना की हार्वैस्ट के बाद की हैंडलिंग में प्रशिक्षित करने के बाद, वह जिम्मेदारी से पकड़ी गई और स्वच्छ परिस्थितियों में वितरित मछली के लिए दोगुनी कीमत देने पर सहमत हुई; ऐसा करने में, उसने इस लोकप्रिय धारणा को खारिज कर दिया कि “अधिक मछली का अर्थ है अधिक आय”। उसने मछुआरों को आश्वासित किया कि “यदि मछली के संभावित मूल्य का एहसास हो जाता है, तो कम मछली भी अधिक आय प्राप्त कर सकती है”

ऑरोफिश ने धीरे-धीरे साशिमी-ग्रेड अही टूना लोन्स (येलोफिन टूना), और अन्य उत्पादों की आपूर्ति करने का उपक्रम किया और जापानी निर्यात बाजार का दोहन किया। इस बीच, ऑरोफिश ने घरेलू बाजार में भी कदम रखा है और होटलों, रेस्तरां और उच्च श्रेणी के सुपरमार्केटों को खुदरा और थोक मूल्यों पर सर्वोत्तम प्रीमियम ग्रेड के ताजे समुद्री भोजन की आपूर्ति की है।

इसके अलावा, ऑरोफिश ने शहरी क्षेत्रों में वैक्यूम-पैक ज़िप-टॉप बैग के अंदर रेडी-टू-कुक उत्पादों का विपणन शुरू किया। मछली और मछली उत्पादों को ठंडा परिस्थितियों में 2-4 डिग्री सेल्सियस पर आइस जेल से भरे थर्मो बॉक्स में तब तक संग्रहीत किया जाता है जब तक कि वे अंतिम उपभोक्ताओं तक नहीं पहुंच जाते। ऑरोफिश अब भारत के अन्य महानगरीय क्षेत्रों में फैल गई है। याला में इसने न केवल कई प्रशंसाएं जीती हैं, बल्कि इसकी मूल्य शृंखला में शामिल लगभग 400-500 लोगों के लिए एक बेहतर भविष्य भी बनाया है। श्रीमती मुथुवेल द्वारा प्रदान की गई सेवा के सम्मान में, पिछले कुछ वर्षों में कई सम्मान प्राप्त हुए हैं। उनमें कुछ इंडिया बायोडायवर्सिटी अवार्ड्स- 2021, चिदंबरम मेमोरियल एनुअल अवार्ड- 2021, आदि हैं और उन्हें एक वीडियो फिल्म में दिखाया गया है: ‘अनीता मुथुवेल - एक मत्स्यपालन उद्यमी ज्वार (टाइड) को बदल देता है (https://youtu.be/IQh6ZOdW9_E) .

नाम	अनीता मुथुवेल
जिला और राज्य	पुडुचेरी, पुडुचेरी
शैक्षणिक योग्यता	बी.ए.
श्रेणी	ओबीसी
व्यवसाय	मछली प्रसंस्करण और ताजा और तैयार मछली उत्पादों का विपणन
मोबाइल सं.	9786147288
फर्म का नाम	ऑरोफिश
स्थापना का वर्ष	2018
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	समुद्री खाद्य संसाधक और आपूर्तिकर्ता
वार्षिक कारोबार	₹ 10 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	8.50 टन
रोजगार सृजित	5 प्रत्यक्ष और 50 अप्रत्यक्ष





झींगा कृषि के विकल्प के रूप में



नाम	अवतार सिंह
जिला और राज्य	सुभान, पंजाब
शैक्षिक योग्यता	बी.ए.
श्रेणी	सामान्य
व्यवसाय	कृषक
मोबाइल सं.	9653534545
फर्म का नाम	जे एस झींगा फार्म
स्थापना का वर्ष	2019
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	झींगा पालन
वार्षिक कारोबार	₹ 20 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	5 टन
रोजगार सृजित	2

पंजाब के सुभान। उन्होंने कला में स्नातक की पढ़ाई पूरी की। वे एक किसान हैं जो कृषि में लगा हुआ थे। पानी की खराप के कारण उसे बहुत कम रिटर्न मिल रहा था। भूमि की खरा प्रभावित प्रकृति ने पिछले 10 वर्षों में कृषि उपज को काफी कम कर दिया था, इस प्रकार, उसके पास रोजगार के बेहतर अवसर तलाशने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था। अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए, उन्हें एक अतिरिक्त आय अर्जित करनी पड़ी, जिसके कारण उन्हें 2019-2020 में गैर-सब्जि वाली भूमि पर झींगा जलकृषि शुरू करनी पड़ी, जो 2021-22 में 1.6 एकड़ अतिरिक्त भूमि तक विस्तारित हो गई।

चूंकि वह झींगा पालन में एक व्यवसाय शुरू करना चाहते थे, उन्होंने पंजाब राज्य के मत्स्यपालन अधिकारियों से सब्सिडी से संबंधित मामलों पर उचित मार्गदर्शन, प्रशिक्षण और अन्य जानकारी प्राप्त करने के लिए संपर्क किया। इस समय के दौरान, उन्होंने सरकार से वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए पी.एम.एम.एस.वाई. योजना के तहत वित्तीय सब्सिडी के लिए आवेदन किया। इस योजना ने विभिन्न घटकों जैसे उत्खनन, नलकूप, जलवाहक, जनरेटर, और भौतिक-रासायनिक मापदंडों की जांच के लिए नमूना किट के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की। उन्होंने केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान क्षेत्रीय केंद्र, रोहतक, हरियाणा से भी प्रशिक्षण प्राप्त किया।

उन्होंने पी.एम.एम.एस.वाई. योजना और के.सी.सी के तहत वित्तीय सहायता प्राप्त की। उन्होंने वित्त वर्ष 2019-20 में झींगा पालन के लिए लगभग 1.5 एकड़ तालाब से शुरुआत की और वित्त वर्ष 2021-22 में इसे और 1.6 एकड़ तक विस्तारित किया। जब उन्होंने झींगा पालन शुरू किया, तो उत्पादन 4 टन था, जो बाद में बढ़कर 5 टन प्रति वर्ष हो गया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने अपने तालाबों को जैव-सुरक्षा उपायों के संदर्भ में एक असाधारण तरीके से प्रबंधित किया क्योंकि आसपास के कई तालाब सफेद मल रोग से प्रभावित थे लेकिन उनका खेत प्रभावित नहीं हुआ था। उन्होंने नियमित अंतराल पर अपने पानी की जांच करवाकर और प्री-बायोटिक्स लगाकर पानी के भौतिक-रासायनिक मापदंडों को बनाए रखा। उनकी मासिक आय में कई गुना वृद्धि हुई, जिसका उनके जीवन स्तर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। उसने अपने खेत में दो लोगों को रोजगार भी दिया था।





जनजातीय मछुआरों के लिए आजीविका मॉडल



राजस्थान के उदयपुर संभाग में आदिवासी आबादी प्रमुख है। इससे पहले, तीन बड़े जलाशयों, अर्थात् 7235 हेक्टेयर के जयसमंद (उदयपुर), 13300 हेक्टेयर के माही बजाजसागर (बांसवाड़ा) और 4000 हेक्टेयर के कड़ाना बैकवाटर (डूंगरपुर) का उपयोग वर्ष 2013-14 से पहले अनुबंध के आधार पर मछली पकड़ने की गतिविधियों के लिए किया जा रहा था।

वर्ष 2013-14 में, राज्य सरकार ने तीन बड़े जलाशय जयसमंद (उदयपुर), माही बजाजसागर (बांसवाड़ा), और कड़ाना बैक वाटर (डूंगरपुर) आदिवासी मछुआरों को बिना किसी लाइसेंस शुल्क के मछली पकड़कर आजीविका कमाने के लिए देकर उनकी आर्थिक बेहतरी, नियमित रोजगार और आदिवासी मत्स्य समाज के उत्थान के लिए एक शून्य-राजस्व मॉडल की शुरुआत की। इस मॉडल के तहत, उनके लिए उचित बाजार मूल्य सुनिश्चित करने के लिए, मत्स्यपालन विभाग, राजस्थान ने इन मछुआरों के लिए उचित बाजार मूल्य को अंतिम रूप देने के लिए निविदा जारी की। इस प्रक्रिया के माध्यम से आदिवासियों को न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रदान किया गया। मछली की प्रजाति एवं आकार के अनुसार विभाग द्वारा सीधे आदिवासी मछुआरों को ₹ 170.52/किग्रा से ₹ 180.27/किलोग्राम का भुगतान किया जा रहा है।

वर्तमान में कुल 57 आदिवासी मत्स्य उत्पादक सहकारी समितियां कार्यरत हैं, जिनमें 6218 सदस्य इस मॉडल के माध्यम से नियमित रोजगार और आय प्राप्त कर रहे हैं। आजीविका मॉडल के तहत आदिवासी मछुआरों को लगभग 2324 नई नावें और 49040 किलोग्राम मछली पकड़ने के जाल वितरित किए गए हैं। इसके अलावा, बांध जैसम में 50 टन क्षमता का आधुनिक मछली लैंडिंग केंद्र और राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत ₹ 75.50 लाख में बनाया गया था। इसके अलावा, जलाशयों में मछली पकड़ने की नई प्रथाओं को अपनाने के लिए राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड, हैदराबाद की वित्तीय सहायता से नियमित कौशल विकास और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। जैसा कि इस मॉडल के तहत अनुमान लगाया गया था, आदिवासी मछुआरों को अपने परिवारों के लिए बेहतर स्वास्थ्य स्थिति, नियमित आय प्राप्त करने और मछली के लिए एक सुनिश्चित प्रीमियम मूल्य हेतु मछली प्रोटीन के रूप में नियमित मुख्य भोजन मिल रहा है, जो देश में सबसे अधिक है।

स्थापना	मछली उत्पादक सहकारी समितियां
राज्य	राजस्थान
लाभार्थी	आदिवासी मछुआरे और महिलाएं
गतिविधि	मछली पकड़ना
हस्तक्षेप	राजस्थान सरकार





राजस्थान के प्रगतिशील पर्ल किसान



नाम	विनोद कुमावत
जिला और राज्य	सीकर, राजस्थान
शैक्षणिक योग्यता	सातक
श्रेणी	ओबीसी
व्यवसाय	किसान
मोबाइल सं.	7023706942
स्थापना का वर्ष	2015
फर्म का नाम	भारती मोती पालन केंद्र
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	मोती/पर्ल कृषि
वार्षिक कारोबार	₹39 लाख
वार्षिक मोती उत्पादन	25000 मोती
रोजगार सृजित	20

श्री विनोद कुमावत राजस्थान के सीकर जिले के बे गांव के रहने वाले हैं। सातक स्तर की पढ़ाई के बाद, उन्होंने अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए अपनी जमीन पर कृषि का अभ्यास करना शुरू कर दिया। मुश्किल से उन्होंने ₹10,000 कमाए, जो परिवार चलाने के लिए काफी नहीं थे। बाद में बेहतर नौकरी पाने के लिए उन्होंने कंप्यूटर साइंस में डिप्लोमा और नर्सरी मैनेजमेंट में एंटरप्रेन्योरशिप डिप्लोमा किया। उसके बाद उन्होंने अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए अपनी जमीन पर नर्सरी फार्म शुरू किया। एक दिन उसने पर्ल की कृषि पर एक ऑनलाइन लेख पढ़ा और खुद की पर्ल की कृषि शुरू करने के बारे में सोचा। उन्होंने भारत सरकार द्वारा आयोजित किसानों के मेलों में भाग लिया, पर्ल कृषि तकनीकों का अध्ययन किया, और 2015 में अपना पर्ल फार्म शुरू करने से पहले पर्ल की कृषि का प्रशिक्षण लिया।

पर्ल की कृषि में अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए, उन्होंने राजस्थान के राज्य मत्स्यपालन विभाग से संपर्क किया और उनसे तकनीकी मार्गदर्शन प्राप्त किया। फिर उन्होंने वित्तीय वर्ष 2016-17 के दौरान नीली क्रांति योजना के तहत “पर्ल की कृषि” गतिविधि के लिए आवेदन किया और पांच तालाबों का सफलतापूर्वक निर्माण किया। उन्होंने 0.013 एकड़ में 500 सीपों के साथ अपना पर्ल फार्म शुरू किया और 1000 पर्लों का उत्पादन किया। वर्ष 2021 में, उन्होंने अपने पर्ल फार्म का विस्तार 1.03 एकड़ तक किया और सफलतापूर्वक 25,000 पर्लों का उत्पादन किया, और ₹ 39 लाख का कारोबार किया।

29.25 लाख व्यय किया और ₹ 9.75 लाख का शुद्ध लाभ अर्जित किया। उन्होंने 20 लोगों को अपने फार्म में रोजगार देकर लाभान्वित किया और राज्य के पहले सफल और प्रगतिशील पर्ल किसान बने। पर्ल की कृषि ने उन्हें अपनी सामाजिक आर्थिक स्थिति के उत्थान में मदद की। उन्होंने गरीब किसानों, मजदूरों, बेरोजगार युवाओं और गृहणियों को उद्यमिता विकास कौशल योजना या किसी अन्य योजना के तहत पर्ल पालन का मुफ्त प्रशिक्षण देने की योजना बनाई है।





ट्राउट कृषि ने बदल दी आजीविका



श्री दा नोरबू शेरपा सिक्किम के पश्चिम सिक्किम जिले में स्थित अपर रंबुक गांव के मूल निवासी हैं। वह मध्यमवर्गीय पारिवारिक पृष्ठभूमि से आते हैं और केवल 8वीं कक्षा तक ही शिक्षा प्राप्त कर सके थे। परिवार की आवश्यकता को पूरा करने के लिए वह फसल की खेती के अपने परिवार के पेशे में शामिल हो गए, फिर भी कमाई ₹ 5,000 थी जो कि आजीविका निर्वाह के लिए पर्याप्त नहीं थी। वह उच्च रिटर्न प्राप्त करने के लिए और अधिक अवसर तलाश रहा था ताकि उसके लिए अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करना आसान हो जाए। उन्होंने मत्स्यपालन विभाग, सिक्किम द्वारा आयोजित जागरूकता कार्यक्रमों में भाग लिया और मत्स्यपालन शुरू करना चाहते थे।

मत्स्यपालन निदेशालय, सिक्किम ने श्री शेरपा को ट्राउट कल्चर करने के लिए चुना और 2017 में, नीली क्रांति के तहत, उन्हें इनपुट के लिए और ट्राउट रेसवे के निर्माण के लिए ₹ 4 लाख की कुल लागत की तुलना में ₹ 2.40 लाख की वित्तीय सहायता प्राप्त हुई। बाद में 2019 में, उन्होंने 17मी. x 2मी. x 1.5मी. लंबे एक और रेसवे का निर्माण किया, जो एक टन की उत्पादन क्षमता के साथ 34 मी.2 क्षेत्र में फैला था। ट्राउट की कृषि के शुरुआती दिनों में, उन्होंने देखा कि जब तक यह उन्नत फिंगरलिंग के स्तर तक नहीं पहुंच जाता, तब तक मृत्यु दर 30% तक थी। इसका समाधान करने के लिए, उन्होंने हर दिन दो घंटे के अंतराल पर जिगर, अंडे की जर्दी और स्टार्टर फीड के साथ फिंगरलिंग को खिलाना शुरू कर दिया, जब तक कि यह उन्नत फिंगरलिंग के चरण तक नहीं पहुंच गया, उन्होंने दिन में दो बार उन्हें शरीर वजन के 2% पर पेलेटेड फ्लोटिंग ट्राउट फीड खिलाया। नतीजतन, उन्होंने 2020 और 2021 में प्रत्येक में छह किंटल ट्राउट मछली की सफलतापूर्वक हार्वेस्ट की, जिससे उन्होंने प्रत्येक वर्ष ₹ 3.30 लाख का शुद्ध लाभ कमाया और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार करने में योगदान दिया।

मत्स्यपालन विभाग, सिक्किम से वित्तीय सहायता और तकनीकी सहायता ने उन्हें ट्राउट की कृषि करने में मदद की जिसके परिणामस्वरूप उत्पादन में सुधार हुआ है। नतीजतन, श्री शेरपा अपनी इकाई में 2 महिलाओं और एक पुरुष को रोजगार देते हैं। ट्राउट की कृषि ने उनके जीवन स्तर में सुधार करने में मदद की है और अब उनके पास एक घर है और वे परिवार की आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम हैं।

नाम	दा नोरबू शेरपा
जिला और राज्य	सिक्किम
शैक्षणिक योग्यता	8वीं कक्षा
वर्ग	अनुसूचित जनजाति
व्यवसाय	मत्स्य किसान
मोबाइल सं.	9547222650
स्थापना का वर्ष	2017
फर्म का नाम	अपर रंबुक ट्राउट फिश फार्म
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	रेसवे
वार्षिक कारोबार	₹ 3.30 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	600 किलोग्राम
रोजगार सृजित	3





रेनबो ट्राउट - जीवन में रंग भरे



नाम	काल बहादुर गुरुंग
जिला और राज्य	सोरेंग, सिक्किम
शैक्षिक योग्यता	चौथा पास
वर्ग	ओ.बी.सी.
व्यवसाय	मत्स्य किसान
मोबाइल सं.	9593771184
फर्म का नाम	रेनबो ट्राउट फार्म
स्थापना का वर्ष	2018
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	रेसवे में ट्राउट हैचरी और ट्राउट कृषि
वार्षिक कारोबार	₹ 30.70 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	1.8 टन टेबल साइज ट्राउट और 1.36 लाख नग। ट्राउट बीज
रोजगार सृजित	6

अपर श्रीबदम गांव के श्री काल बहादुर गुरुंग के पास प्रचुर मात्रा में भूमि और जल संसाधन थे। अच्छी भूमि और जल संसाधन होने के कारण उन्हें ट्राउट कृषि में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने इस संबंध में जिला मत्स्य अधिकारियों से परामर्श किया और उनके मार्गदर्शन से उन्होंने दो रेसवे का निर्माण किया, जिनमें प्रत्येक की माप 15मी. x 215मी. x 1.515मी. थी। एक रेसवे पूरी तरह से उनके अपने खर्च पर बनाया गया था, और दूसरे रेसवे के लिए, उन्हें एक रेसवे के लिए राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आर.के.वी.वाई.) के तहत इनपुट (बीज और फीड) के साथ 50,000 रुपये की 50% सब्सिडी मिली। राज्य मत्स्य निदेशालय द्वारा प्रदान किए गए तकनीकी प्रशिक्षण और अधिकारियों के लगातार दौरे से उन्हें ट्राउट खेती में आवश्यक ज्ञान प्राप्त करने में मदद मिली। 2016-17 में, उन्होंने अपने खर्च पर एक और रेसवे का निर्माण किया और नीली क्रांति योजना के तहत एक और ट्राउट रेसवे के लिए आवेदन किया और निर्माण के लिए ₹ 1.2 लाख की 60% सब्सिडी प्राप्त की। फिर से, 2019-20 में, उन्होंने नीली क्रांति योजना के तहत दो और रेसवे के लिए आवेदन किया और इनपुट के लिए सहायता प्राप्त हुई।

वह अच्छी मात्रा में ट्राउट की हावैस्ट कर रहा है और उसकी अधिकांश उपज फार्म गेट पर बेची जाती है। वह आस-पास के शहर में रिसॉर्ट्स को और ऑनलाइन ऑर्डर के माध्यम से ट्राउट की आपूर्ति करता है जिसे उसके इलाके में एक युवक द्वारा नियंत्रित किया जाता है। वह अपने उत्पाद को बढ़ावा देने के लिए नियमित रूप से मछली मेलों और त्योहारों में भाग लेते हैं।

उनके सामने मुख्य बाधा गुणवत्तापूर्ण बीज और चारे की उपलब्धता थी। बीज की उपलब्धता की बढ़ती समस्या के कारण उन्होंने अण्डे पालने का कार्य प्रारंभ किया तथा अस्थायी हैचरी का निर्माण कर प्रजनन कार्य प्रारंभ किया। तब से वह बीज की आवश्यकता के मामले में आत्मनिर्भर हैं। 2018-19 में, वह 1, 36, 000 संख्या का ट्राउट फिंगरलिंग्स का उत्पादन कर सका। उन्होंने स्थानीय किसानों को ₹10- 20/अंशों में बेच दिया और अच्छी कमाई की। फीड प्राप्त करने की समस्या एक निरंतर चुनौती थी जिसके लिए उन्हें राज्य मत्स्यपालन विभाग से परामर्श करना पड़ा। मत्स्यपालन विभाग के निर्देशानुसार उन्होंने सीधे उत्पादकों से ट्राउट फीड खरीदना शुरू कर दिया। अब वह न केवल अपने लिए फीड खरीदता है बल्कि जरूरत पड़ने पर स्थानीय सीमांत ट्राउट किसानों, जो समय-समय पर फीड खरीदने का खर्च नहीं उठा सकते हैं, को कम मात्रा में फीड भी बेचता है। ट्राउट कृषि उनकी प्राथमिक आजीविका बन गई है, जिसने उन्हें उपज और आय में वृद्धि करके अपने जीवन में काफी बदलाव के लिए आत्मनिर्भर मार्ग प्रशस्त किया। उनका निकट भविष्य में प्रति वर्ष कम से कम 5 मिलियन फिंगरलिंग और 8-10 मिलियन आंखों वाले अंडाणु का उत्पादन करने के लिए एक हैचरी शुरू करने का प्रस्ताव है।





ट्राउट पालन के माध्यम से जीवन को नवीकरण करना



श्री सुभाष राय पाकयोंग, सिक्किम के रहने वाले हैं। वे एक स्थानीय सहकारी समिति के सदस्य हैं। अपना खुद का व्यवसाय करने की इच्छा से, उन्होंने सुअर पालन, मुर्गी पालन आदि कई गतिविधियों में निवेश किया, लेकिन अधिक लाभ नहीं कमा सके। यह सब करते हुए, उन्होंने देखा कि उनके कुछ पड़ोसी ट्राउट की कृषि कर रहे थे और अच्छी आय अर्जित कर रहे थे। यह तब था जब श्री राय ने ट्राउट की कृषि शुरू करने का फैसला किया क्योंकि उनके पास पहले से ही प्रचुर मात्रा में भूमि और जल संसाधन थे। 2017 में उन्होंने जिला मत्स्यपालन अधिकारियों की तकनीकी सहायता से ट्राउट कृषि शुरू की। उन्होंने 17 मी. X 2 मी. X 1.5 मी. माप के छह रेसवे का निर्माण किया। एक रेसवे के निर्माण की कुल लागत ₹ 2.0 लाख थी। उन्हें प्रत्येक रेसवे के लिए ₹ 1,20,000 की राशि का 60% आर्थिक सहायता मिली। उन्हें प्रथम वर्ष के लिए नीली क्रांति योजना के अंतर्गत इनपुट भी प्रदान किया गया था। प्रारंभ में, उन्हें राज्य मत्स्यपालन विभाग द्वारा तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान किया गया था। आवश्यक तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए अधिकारी नियमित रूप से उनके फार्म का दौरा करते थे। धीरे-धीरे उन्होंने आवश्यक ज्ञान प्राप्त किया और ट्राउट की कृषि अच्छे से करने लगा।

उनके सामने मुख्य बाधा गुणवत्तापूर्ण बीज और चारे की उपलब्धता थी। बीजों की कमी की बढ़ती चुनौती के कारण, उन्होंने वर्ष 2018 में एक समकालीन हैचरी का निर्माण करके ब्रूड स्टॉक का पालन शुरू किया और प्रजनन गतिविधियों की शुरुआत की। तब से, वह अपनी बीज आवश्यकता में आत्मनिर्भर है। उनके सामने एक और समस्या स्थानीय बाजार में ट्राउट फीड की अनुपलब्धता है। हाल ही में उन्होंने कुछ प्रतिष्ठित कंपनियों से ट्राउट फीड खरीदने के लिए अन्य प्रगतिशील किसानों के साथ करार किया। वर्ष 2021-22 के दौरान, उन्होंने अपनी व्यावसायिक गतिविधि से लगभग 1.5 टन ट्राउट मछली का हार्वेस्ट किया, जिसे उन्होंने स्थानीय बाजार में बेचा। वर्ष 2021-22 में मछली मेलों, प्रदर्शनियों आदि जैसे विभिन्न आयोजनों में उनकी भागीदारी ने उन्हें अच्छी कमाई करने में मदद की।

हर वर्ष ट्राउट मछली के उत्पादन में वृद्धि और ट्राउट फिंगरलिंग के उत्पादन के कारण उनकी आय में काफी वृद्धि हुई है। उन्होंने निस्संदेह अपने परिवार के जीवन स्तर में सुधार किया है। इसके अलावा उसने अपने गांव में 2 लोगों को रोजगार भी दिया है। उनकी भविष्य की योजना रेसवे की संख्या बढ़ाकर अपने फार्म का विस्तार करने की है। वह अधिक बीज पैदा करने के लिए अपनी हैचरी का विस्तार करने की भी योजना बना रहा है ताकि वह स्थानीय ट्राउट किसानों की बढ़ती बीज मांग को पूरा कर सके।

नाम	सुभाष राय
जिला और राज्य	पाकयोंग, सिक्किम
शैक्षिक योग्यता	मैट्रिक परीक्षा
श्रेणी	ओ.बी.सी.
व्यवसाय	किसान और चालक
मोबाइल सं.	7679742224
स्थापना वर्ष	2017
फर्म का नाम	ट्राउट कृषि
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	रेसवे कल्चर (ट्राउट)
वार्षिक कारोबार	₹ 21.60 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	1500 कि.ग्रा.
रोजगार सृजित	2





सी बास द्वारा लाया गया समुद्री परिवर्तन : आई.सी.ए.आर.- सी.आई.बी.ए.



तकनीकी क्षेत्र	आई.सी.ए.आर.-सी.आई.बी.ए.
लाभार्थी	महिला एस.एच.जी. 1. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम मगलीर मीन वलारपु कुझू, 2. डॉ. मुथुलक्षी रेड्डी मगलीर मीन वलारपु कुझू, 3. अन्नई थेरेसा मगलीर मीन वलारपु कुझू
जिला	चेंगलपट्ट
राज्य	तमिलनाडु
शैक्षिक योग्यता	उच्चतर माध्यमिक
श्रेणी	अनुसूचित जाति
व्यवसाय	सीप मांस संग्रह
संपर्क व्यक्ति	श्रीमती अंजुगम
मोबाइल सं.	918610206340
व्यावसायिक गतिविधि	नर्सरी पालन और यो-आउट कृषि
प्रजातियां	सी बास
स्थापना का वर्ष	2021
वार्षिक उत्पादन	50,000 फिंगरलिंग और 1 टन टेबल मछली
कारोबार (1 साइकिल)	₹ 4.20 लाख
रोजगार सृजित	50

एशियाई सी बास भारत में आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण खाद्य मछली है। इसकी कृषि के विस्तार के लिए मुख्य बाधा स्टॉक के लिए 'इष्टतम आकार' की फिंगरलिंग की उपलब्धता है। इससे निपटने और जीवित रहने की दर में वृद्धि पाने के लिए, भा.कृ.अनु.प.-सी.आई.बी.ए. के मत्स्यपालन विभाग ने सी बास फिंगरलिंग के लिए एक बेहतर वैज्ञानिक पालन विधि विकसित की है। इस तकनीक को अनुसूचित जाति उप योजना (एस.सी.एस.पी.) कार्यक्रम के तहत बढ़ावा दिया गया है, ताकि मछुआरों की महिलाओं के लिए आजीविका के अतिरिक्त अवसर पैदा किए जा सकें। इससे पहले कोट्टाडुकाडु तमिलनाडु मछुआरों की महिलाएं अपनी आय के लिए पूरी तरह से सीप के मांस के संग्रह पर निर्भर थीं। आई.सी.ए.आर.-सी.आई.बी.ए. ने इन्हें नर्सरी पालन और सी बास - खारे पानी की केज कल्चर पर प्रशिक्षित किया और आवश्यक उपकरणों के साथ उन्हें समर्थन दिया और एस.सी.एस.पी. के तहत ₹ 6.50 लाख की वित्तीय सहायता दी। एस.एच.जी. ने खुद उनके द्वारा दी जा रही सेवाओं के रूप में ₹ 3.50 लाख स्वयं खर्च किये।

उन्होंने बैकवाटर में एक क्रेब बाड़ (30 मीटर x 60 मीटर, जाल आकार 25 मि.मी.) स्थापित किया जहां सी बास के नर्सरी पालन की योजना बनाई गई थी। 2 x 1.5 x 1 मीटर³ (एल एक्स एच एक्स डब्ल्यू) आकार के कुछ हापा को बाड़ की चार दीवारी के भीतर स्थापित किया गया था और 300 प्रति हापा की दर से फिंगरलिंग (3-4 से.मी., 1.2-1.5 ग्राम) के साथ स्टॉक किया गया था। कुल मिलाकर, 12,000 फिंगरलिंग्स को स्टॉक किया गया था और 45 दिनों के एक साइकिल के लिए तैयार फीड (क्रूड प्रोटीन 45% और क्रूड फैट 10%) के साथ दिन में दो या तीन बार खिलाया गया था। नरभक्षण को रोकने के लिए फिंगरलिंग की साप्ताहिक ग्रेडिंग की गई थी। अवधि के अंत में, फिंगरलिंग ने 4-5 इंच और 13.5 ग्राम के आकार को प्राप्त किया। महिलाओं ने इन्हें ₹40 प्रति फिंगरलिंग की दर से बेचकर अच्छा मुनाफा कमाया। इसके अतिरिक्त, वे 30 मीटर³ आकार के तीन जी.आई. केज में केज कृषि द्वारा टेबल मछली उत्पादन में भी लगे हुए हैं।

आई.सी.ए.आर.-सी.आई.बी.ए. के हस्तक्षेप के कारण, मछुआरा महिलाएं अब अपनी आय में सुधार करने में सक्षम हैं, और बदले में, अपने जीवन स्तर को बढ़ा सकती हैं। प्रत्येक सदस्य की आय सीप संग्रह से ₹ 4,000-5,000 प्रति माह से बढ़कर नर्सरी पालन के लिए अतिरिक्त ₹ 12,000 प्रति साइकिल हो गई।



सीवीड (समुद्री शैवाल): सतत आय का स्रोत



जया लक्ष्मी, जया, थंगम और कालेश्वरी तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले के मंडपम गांव की हैं। ये महिलाएं ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं हैं और गरीब परिवारों से ताल्लुक रखती हैं। वे बिना किसी अतिरिक्त आय के गृहिणी थीं और इस प्रकार पूरी तरह से अपने पति की आय पर निर्भर थीं। हालांकि उनके लिए परिवार का खर्च और बच्चों की पढ़ाई जका खर्चा चलाना काफी मुश्किल था। फिर इन दोस्तों ने अपने नियमित खर्चों का पूरा करने के लिए खुद एक व्यवसाय शुरू करने का फैसला किया। एक बार जब तमिलनाडु के राज्य मत्स्यपालन विभाग ने सीवीड (समुद्री शैवाल) की कृषि पर जागरूकता अभियान और प्रशिक्षण की व्यवस्था की, तो उन्होंने भाग लिया और सीवीड (समुद्री शैवाल) की कृषि की मूल बातें, इसके लाभों और योजनाओं को सीखा जो उन्हें इस संबंध में लाभान्वित करती हैं। उन्होंने पी.एम.एम.एस.वाई. योजना के अंतर्गत सीवीड (समुद्री शैवाल) की कृषि शुरू की। कुल परियोजना लागत ₹ 67,500 थी। उन्होंने स्वयं ₹27,000 का निवेश किया। टैफकोफेड से अल्पकालिक ऋण के रूप में ₹ 5,000 की वित्तीय सहायता प्राप्त हुई। उन्हें पी.एम.एम.एस.वाई. योजना के अंतर्गत सीवीड (समुद्री शैवाल) की कृषि परियोजना के लिए 60% सब्सिडी भी मिली। एक बार जब उन्होंने सीवीड (समुद्री शैवाल) की कृषि शुरू कर दी, तो उन्हें चक्रवात, सीवीड (समुद्री शैवाल) संवर्धन स्थानों के लिए पोषक तत्वों की कमी, और नावों की आवाजाही, जलवायु परिस्थितियों, विपणन समस्या, अपर्याप्त पौध आपूर्ति आदि के कारण राफ्ट को नुकसान जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इन सभी चुनौतियों के बावजूद वे 36000 टन का गीला वजन उत्पादन कर सके।

इसने उन्हें न केवल आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाया बल्कि उन्हें अपने आत्म-सम्मान में सुधार करने और दूसरों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने में भी मदद की। इस कृषि की गतिविधि ने कई मछुआरे-महिलाओं को रोजगार दिया है, जिससे उनकी आजीविका का उत्थान हुआ है। इन महिलाओं ने एक अच्छा उदाहरण स्थापित किया है और अपने इलाके की अनपढ़ या कम शिक्षित महिलाओं को अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने और सीवीड (समुद्री शैवाल) उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है।

नाम	जया लक्ष्मी, जया, थंगम, कालेश्वरी
जिला और राज्य	मंडपम, तमिलनाडु
शैक्षणिक योग्यता	12वीं कक्षा
श्रेणी	ओ.बी.सी.
व्यवसाय	गृहिणी
मोबाइल सं.	9025446269
स्थापना वर्ष	2017
फर्म का नाम	लागू नहीं
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	सीवीड (समुद्री शैवाल) की कृषि
वार्षिक कारोबार	₹ 3.78 लाख
वार्षिक उत्पादन	गीला वजन में 36000 टन
रोजगार सृजित	6





अपशिष्ट से धन: स्वस्थ व्यवसाय



नाम	टी. केनित राज
जिला और राज्य	चेन्नई, तमिलनाडु
शैक्षिक योग्यता	8वीं कक्षा
श्रेणी	अन्य पिछड़ा वर्ग
व्यवसाय	स्वयं सहायता समूह के सदस्य
मोबाइल सं.	9940252803
स्थापना का वर्ष	2016
फर्म का नाम	नंबिककाई मत्स्य किसान एस.एच.जी.
पद	सदस्य
व्यावसायिक गतिविधि	मछली अपशिष्ट प्रसंस्करण
वार्षिक कारोबार	₹ 8 लाख
वार्षिक उत्पादन	13 टन
रोजगार सृजित	7

श्री केनित राज चेन्नई में मरीना समुद्र तट के पास, नांबिककै नगर में रहने वाले एक मछुआरे हैं। उनका पेशा मछली पकड़ना और स्थानीय मछली बाजार में मछली बेचना था। वह मछली के कचरे को आसपास के इलाके में एक आम जगह पर डंप करता था जहां अन्य मछुआरे भी मछली के कचरे का निपटान करते थे। इससे प्रतिकूल गंध और अस्वच्छ रहने की स्थिति पैदा हो गई जिससे आसपास रहने वाले मछुआरों का जीवन मुश्किल हो गया। 2014 में, प्रधान मंत्री द्वारा स्वच्छ भारत अभियान ने स्वच्छता की दिशा में राष्ट्र को आह्वान किए गए, मछली अपशिष्ट प्रबंधन गतिविधियों को शुरू करने के लिए नांबिककै नगर में मछुआरा समुदाय को प्रेरित किया। श्री केनित राज ने स्वेच्छा से कचरा साफ किया और मदद के लिए कई लोगों से संपर्क किया, लेकिन कोई भी आगे नहीं आया। हालांकि, पंचायत अध्यक्ष के रूप में उनका पूर्व अनुभव इस कठिन समय में काम आया। जब वे सहायता की तलाश कर रहे थे, वे मार्गदर्शन और सहायता के लिए सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ़ खाराकिशवाटर एक्वाकल्चर (सी.आई.बी.ए.) के अधिकारियों से जुड़े।

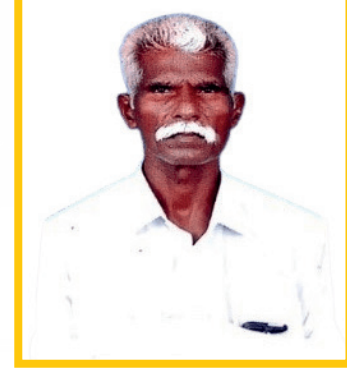
2016 में, श्री केनित राज ने कुछ मत्स्य किसानों को इकट्ठा करके नंबिककाई मत्स्य किसान स्वयं सहायता समूह (एस.एच.जी.) का गठन किया और अपने घर पर कचरे का पुनर्चक्रण शुरू किया। आई.सी.ए.आर.-सी.आई.बी.ए. ने 18 फरवरी, 2019 को “फिश वेस्ट प्रोसेसिंग यूनिट” स्थापित करने में इस एसएचजी का समर्थन करने के लिए आगे आया। इस इकाई का संचालन स्वच्छ भारत पहल के तहत प्लैंकटन प्लस और हॉर्टी प्लस जैसे मूल्य-वर्धित उत्पादों का उत्पादन करने वाले नांबिककैई एसएचजी द्वारा किया जा रहा है। इस मछली अपशिष्ट प्रसंस्करण इकाई की प्रति माह 2,000 लीटर की प्लैंकटन प्लस की उत्पादन क्षमता है। एक इकाई का वार्षिक कारोबार ₹ 4.56 लाख के शुद्ध लाभ के साथ ₹ 16.80 लाख है। एक निजी कंपनी के साथ समझौते के बाद, समूह ने 4,500 लीटर प्लैंकटन प्लस और 550 किलोग्राम हॉर्टी प्लस का उत्पादन किया और ₹ 2.78 लाख प्राप्त किए।

उनके शब्दों में, नांबिककाई एसएचजी सदस्यों की दूरदृष्टि और दृढ़ता एक स्वच्छ समाज की ओर बढ़ रही है। उनके समर्पित प्रयासों के परिणामस्वरूप “अपशिष्ट से धन” की अवधारणा से वैकल्पिक आजीविका का निर्माण करके समावेशी विकास और टिकाऊ जीवनयापन हुआ। उनके प्रयासों के लिए, वर्ष 2020 में भारत सरकार द्वारा नांबिककाई मत्स्य किसान समूह को “सर्वश्रेष्ठ स्वयं सहायता समूह” के रूप में सम्मानित किया गया।





केज कल्चर - मछुआरों के लिए एक विकल्प



श्री एम. रायप्पन और श्री एम. मुथैया तमिलनाडु के थूथुकुडी जिले के सिप्पीकुलम गांव के निवासी हैं। वे मछुआरे समुदाय से ताल्लुक रखते हैं और बहुत कम आय (₹ 10,000 प्रति माह) कमा रहे थे। तमिलनाडु सरकार ने समुद्री मछुआरों के लिए वैकल्पिक आजीविका के लिए केजों में मत्स्यपालन को बढ़ावा देने के लिए विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित सतत आजीविका (फिमसूल-II) परियोजना के लिए मत्स्यपालन प्रबंधन के तहत एक मॉडल पायलट परियोजना की घोषणा की।

परियोजना के तहत, मछुआरों हेतु एक प्रदर्शन के लिए 100% सब्सिडी पर ₹ 5 लाख (पिंजड़ों के निर्माण के लिए ₹ 1.25 लाख और परिचालन लागत के लिए ₹ 3.75 लाख) की इकाई लागत के साथ वर्ष 2018-19 के लिए थूथुकुडी जिले के लिए एक पिंजरा आवंटित किया गया था। उन लाभार्थियों की पहचान करने के लिए सार्वजनिक घोषणाएं की गईं जो अपनी आजीविका के रूप में मछली पकड़ने और मत्स्यपालन में रुचि रखते थे। थूथुकुडी जिले के सिप्पीकुलम मछली पकड़ने के गांव के तीन इच्छुक मछुआरों को लाभार्थियों के रूप में चुना गया था, और उन्हें आईसीएआर-सीएमएफआरआई, मंडपम में खुले समुद्र में केज की खेती पर प्रशिक्षण दिया गया था। श्री रायप्पन और श्री मुथैया उनमें से थे। प्रशिक्षण के बाद, वे ओपन सी केज कल्चर प्रोग्राम में शामिल होने के लिए सहमत हुए। 2.5 टन उत्पादन क्षमता वाले 6 मीटर व्यास का एक पिंजरा आईसीएआर-सीएमएफआरआई के अधिकारियों के तकनीकी सहयोग से सिप्पीकुलम मछली पकड़ने के गांव में स्थापित किया गया था, लेकिन आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई. को कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जैसे। मछुआरों के बीच खुले समुद्र में पिंजड़े की खेती के बारे में जागरूकता की कमी, उबड़-खाबड़ समुद्र और केज कल्चर के लिए समुद्री पंख मत्स्य बीज की अनुपलब्धता। दो केजों में से, ₹3 लाख 12 महीनों में शुद्ध लाभ के रूप में अर्जित किए गए। आमतौर पर, एक केज को 4-5 महीनों के बाद काटा जाता है, और जीवित रहने की दर 88% तक होती है।

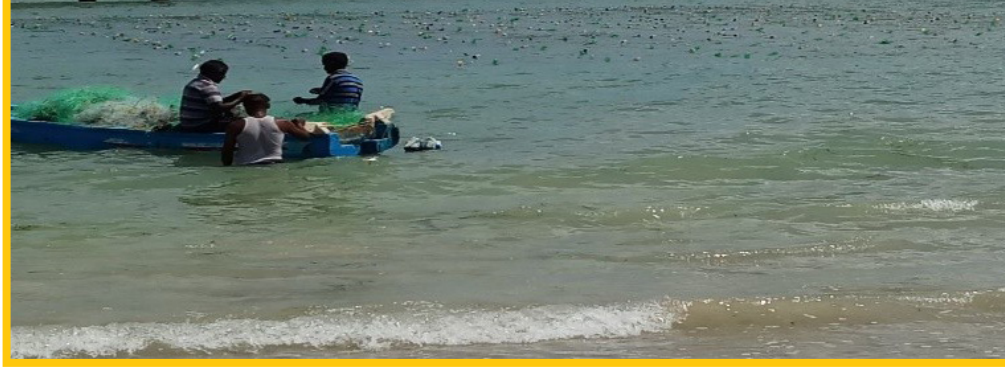
फिलहाल इनकी तीन यूनिट हैं। उन्होंने अनुभव प्राप्त किया और अब अपने जिले में केज कल्चर करने के लिए आश्वस्त हैं। श्री रायप्पन और श्री मुथैया केज की खेती में बहुत रुचि रखते हैं क्योंकि यह उनकी आजीविका के लिए एक वैकल्पिक आय स्रोत है, और उन्होंने आसपास के गांव के मछुआरों को प्रेरित किया। भारतीय जलकृषि के लिए समुद्री फिनफिश और अपतटीय मत्स्यपालन की मांग बढ़ रही है। इसलिए, वे अपतटीय समुद्री कृषि करने और मत्स्य बीज पैदा करने की योजना बना रहे हैं।

नाम	थ.एम.रायप्पन और थ.एम. मुथैया
जिला और राज्य	थूथुकुडी, तमिलनाडु
शैक्षणिक योग्यता	10वीं कक्षा
श्रेणी	ओबीसी
व्यवसाय	मछुआरे
मोबाइल सं.	9786488292
स्थापना का वर्ष	2016
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	ओपन सी केज कल्चर (सीबास और लॉबस्टर)
वार्षिक कारोबार	₹ 8 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	2.5 टन
रोजगार सृजित	27





स्टेला की तारकीय सीवीड(समुद्री शैवाल) कृषि



नाम	स्टेला मैरी
जिला और राज्य	थूथुकुडी, तमिलनाडु
शैक्षिक योग्यता	10 वीं कक्षा
श्रेणी	ओबीसी
व्यवसाय	मछुआरे
मोबाइल सं.	9791666459
स्थापना का वर्ष	2006
व्यावसायिक गतिविधि	मोनो-लाइन विधि द्वारा समुद्री शैवाल संवर्धन
वार्षिक कारोबार	₹ 60,000
वार्षिक सीवीड उत्पादन	10 टन (गीला वजन)
रोजगार सृजित	12

श्रीमती स्टेला मैरी तमिलनाडु के थूथुकुडी जिले के पुथियाथुरईमुगम गांव की रहने वाली हैं। वे एक मछुआरिन हैं जो आय के अतिरिक्त स्रोत की तलाश में हैं। उसने महसूस किया कि सीवीड (समुद्री शैवाल) संवर्धन आय उत्पन्न करने का एक वैकल्पिक तरीका है जो पूरे वर्ष चल सकता है। 2006 में, उन्होंने एक्वाग्री प्रोसेसिंग प्राइवेट लिमिटेड की वित्तीय सहायता से समुद्री शैवाल की खेती शुरू की। उसे फर्म से ₹ 6,000/- की मासिक आय प्राप्त होगी। उन्होंने आई.सी.ए.आर.-केंद्रीय समुद्री मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई.) और राज्य मत्स्यपालन विभाग, तमिलनाडु द्वारा आयोजित सीवीड (समुद्री शैवाल) कृषि पर एक प्रशिक्षण प्राप्त किया। एक दशक के बाद, सी एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड द्वारा सीवीड (समुद्री शैवाल) किसानों को उनकी गतिविधि में प्रोत्साहित किया गया।

2022 में, उन्होंने प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (पी.एम.एम.एस.वाई.) योजना के तहत “मोनोलिन विधि द्वारा समुद्री शैवाल कृषि” गतिविधि के लिए आवेदन किया और 10 टन (गीले वजन) की उत्पादन क्षमता के साथ कृषि शुरू की। प्रथम वर्ष की इनपुट लागत के रूप में ₹ 9,600 की वित्तीय सहायता के साथ कुल परियोजना लागत ₹ 16,000 थी और उसके द्वारा ₹ 6,400 का निवेश किया गया था।

वह 35-45 दिनों की कल्चरल अवधि का अभ्यास करती है। समुद्री शैवाल की अच्छी माला और गुणवत्ता विकसित करने के लिए नियमित निगरानी की जाती है। इसमें विकास दोषकारी कारकों को रोकने के लिए कल्चर रस्सियों की साप्ताहिक जाँच और समुद्री शैवाल के पूर्ण नुकसान को रोकने के लिए लंगर का निरीक्षण शामिल है। वह कुल नुकसान से बचने के लिए नियमित रूप से लंगर का निरीक्षण करती है। वह बेकार पड़ी प्लास्टिक की बोतलों और पेय की बोतलों को फ्लोट के रूप में और पत्थरों को सिंकर के रूप में इस्तेमाल करती है ताकि लागत कम हो सके। अधिक आय अर्जित करने के लिए विकास पैटर्न की भी नियमित रूप से निगरानी की जाती है। कटा हुआ सीवीड (समुद्री शैवाल) या तो साफ और सूखे रूप में या गीले रूप में सी6 एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड को बेचा जाता है। चूंकि यह एक पायलट परियोजना है, इसलिए 10 मछुआरे महिलाएं व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने और दो मछुआरों को राफ्ट बनाए रखने और संचालित करने के लिए गतिविधि में लगी हुई हैं। श्रीमती स्टेला जलकृषि के लिए उपयुक्त नीतियां बनाने में स्थानीय समुदाय को शामिल करने की योजना बना रही हैं।





स्वयं सहायता समूह से आत्मनिर्भर महिलाएं



लगभग दो दशक पहले, हैदराबाद के मछुआरे के लिए अपने परिवार के लिए रोटी कमाना एक चुनौतीपूर्ण काम था। मुसी नदी के तट पर स्थित हैदराबाद शहर कृत्रिम झीलों के आसपास प्रदूषित हो गया था और मछुआरों को मछली पकड़ने की गतिविधि में मुश्किल से आजीविका मिलती थी। मछुआरे मुख्य रूप से शहर की सड़कों के फुटपाथों पर ताजा मछली की बिक्री पर निर्भर थे, भले ही शहर भारत के सबसे तेजी से बढ़ते महानगरीय शहरों में से एक है और ताजा मत्स्य विपणन और मछली आधारित मूल्य वर्धित उत्पादों के लिए काफी संभावनाएं हैं। इन मछुआरे महिलाओं को हार्वेस्ट से पहले और बाद के कार्यों और मूल्य वर्धित प्रसंस्करण उत्पादों का अच्छा ज्ञान था, लेकिन वे बिखरी हुई थीं और उनके पास कोई समर्थन प्रणाली नहीं थी। हालांकि मछुआरा सहकारी समितियां मौजूद थीं, मछुआरा महिलाओं पर ज्यादा जोर नहीं दिया गया था।

2000 में, मत्स्यपालन विभाग के फील्ड अधिकारियों ने उनसे संपर्क किया और फिशरवुमन कोऑपरेटिव सोसाइटीज (एफ.सी.एस.) में संगठित होने के लाभों के बारे में बताया। जल्द ही, उन्होंने महसूस किया कि संस्था को बनाए रखने के लिए एक बाध्यकारी कारक और प्रबंधनीय आकार होना चाहिए। इस सोच ने मत्स्य मिला समूह: स्वयं सहायता समूह और 10-20 सदस्यों वाली विभिन्न समितियों के गठन की अवधारणा को बुन दिया। आज तक, 1069 मछुआरे और 84 मत्स्य मिला समूह (स्वयं सहायता समूह) की सदस्यता के साथ 21 एफ.सी.एस. का गठन किया गया है और एक दशक से अधिक समय से कार्य कर रहे हैं। संबंधित समूहों का समाज समूहों के नियमित कामकाज की निगरानी करता है और विभिन्न लाभों तक पहुंचने के लिए बाहरी वित्तीय संस्थानों और सरकारी विभागों के साथ संबंध स्थापित करता है। दोनों ने मिलकर हैदराबाद में सफलतापूर्वक मत्स्य भवन की स्थापना की, जहां वे मछली के खाद्य पदार्थ बेचते हैं और अच्छा मुनाफा कमाते हैं। वे मत्स्यपालन विभाग के सहयोग से प्रदर्शनियों और नुमाइशों में मछली के स्टाल लगा रहे हैं। उन्होंने तेलंगाना सरकार और सोसाइटी फॉर इंडियन फिशरीज एंड एक्वाकल्चर द्वारा आयोजित एक्वाएक्स इंटरनेशनल फिशरीज एक्सपो में एक फिश फूड स्टॉल भी लगाया। समूह ने मत्स्य खाद्य पदार्थों की 20 किस्मों को तैयार किया और उन्हें बेच दिया इस प्रकार ₹ 2.50 लाख का कारोबार प्राप्त हुआ लाभ यानी बिक्री से प्रति महिला ₹.50000 अर्जित किए जाते हैं।

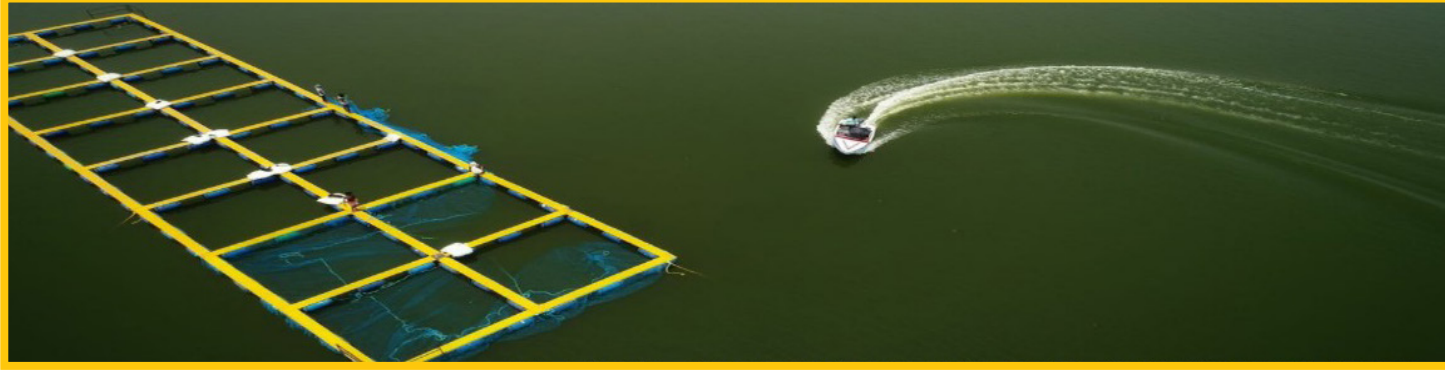
मछली की खपत बढ़ाने के इरादे से, उन्होंने एन.एफ.डी.बी. की वित्तीय सहायता से 2020 में एन.टी. आर. स्टेडियम में 3 दिवसीय “फिश फूड फेस्टिवल” का आयोजन किया। आयोजन के दौरान, 13 मछुआरे और महिला मछुआरे सहकारी समितियां और 106 मछुआरे से 22 स्टाल स्थापित किए गए थे। हैदराबाद जिले की समितियों ने भोजन तैयार करने और परोसने में भाग लिया। 3 दिनों में कारोबार ₹25.88 लाख था और ₹ 7.18 लाख का लाभ कमाया। वे हैदराबाद में मछली खाद्य कियोस्क, प्रसंस्करण इकाइयों और खुदरा और थोक बाजारों की स्थापना करके मछली आधारित आजीविका में विशाल अवसरों का पता लगाने की इच्छा रखते हैं।

स्थापना	मछुआरा सहकारी समितियां और स्वयं सहायता समूह
राज्य	तेलंगाना
लाभार्थी	मछुआरे
गतिविधि	प्रदर्शनी स्टॉल, मेला आदि।





केज कल्चर में सहकारी का सामूहिक प्रयास



जिला	खम्मम
राज्य	तेलंगाना
लाभार्थी	मछुआरा सहकारी समिति
व्यावसायिक गतिविधियाँ	केज कल्चर
तकनीकी सहायता	आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.आर.आई.

पलेयर जलाशय, एक बारहमासी जल निकाय, अपने मीठे पानी के झींगा उत्पादन के लिए तेलंगाना राज्य में सर्वोपरि है। यह कुसुमांची मंडल में स्थित एन.एस.पी नहर के लिए एक प्रमुख संतुलन जलाशय है, जिसमें 1748 हेक्टेयर पानी फैला हुआ क्षेत्र है और यह अपने आसपास के मछुआरों के लिए काफी आजीविका प्रदान करता है। मछुआरा सहकारी समिति, पलेयर, का गठन और पंजीकरण 1977 में किया गया था। सोसायटी में 18 गांवों से 1200 सदस्य हैं, जिसमें नलगोंडा जिले के छह गांव और खम्मम जिले के 12 गांव शामिल हैं। जलाशय लाइसेंस योजना के तहत है और जलाशय मत्स्यपालन से (1200) से अधिक मछुआरों के परिवार सीधे लाभान्वित होते हैं। मार्केटिंग, नेट मेकिंग और खुदरा बिक्री के माध्यम से लगभग 300 को अप्रत्यक्ष लाभ मिल रहा है।

वित्तीय वर्ष 2015-16 के दौरान, पालेयर जलाशय का चयन पायलट आधार पर केज कल्चर के लिए किया गया था। मछुआरा सहकारी समिति, पलेयर के 13 मछुआरों के एक कार्यकारी समूह को राज्य मत्स्यपालन विभाग द्वारा झारखंड राज्य के चांडिल जलाशय में एक एक्सपोजर टॉर के लिए भेजा गया था। पलेयर जलाशय में 12 केजों की एक बैटरी लगाई गई थी। इन केजों में 50,000 पंगेशियस और 25,000 तिलापिया बीज रखे गए थे। प्रशिक्षित मछुआरों ने केजों का प्रबंधन किया और फीड, जाल की सफाई, मछली के स्वास्थ्य की निगरानी आदि जैसी गतिविधियाँ कीं। नीलामी के माध्यम से मछली को ₹ 80/किलोग्राम की दर से बेचा गया। ₹ 15.54 लाख मूल्य की लगभग 19.77 टन कटी हुई मछली बेची गई। अगली फसल से, पिंजरा इकाई को कार्य समूह में स्थानांतरित कर दिया गया। वर्ष 2016-17 के दौरान उक्त समूह ने 60000 पंगेशियस मत्स्य बीज का स्टॉक किया। 10 महीने की कल्चर अवधि के बाद, उन्होंने 22 टन मछली की हार्वेस्ट की और ₹ 17.60 लाख का लाभ कमाया। वर्ष 2017-18 के दौरान, नीली क्रांति की योजना के तहत पलेयर जलाशय में चार केजों को स्थापित कर 10 प्रति समूह की दर से 40 सदस्यों को आवंटित किया गया था। प्रति बैटरी यूनिट लागत ₹ 30.00 लाख थी और सहायता का पैटर्न भारत सरकार द्वारा 50% सब्सिडी था। (भारत सरकार और राज्य द्वारा साझा), इसमें राज्य सरकार द्वारा अतिरिक्त 30%, और लाभार्थियों से 20% योगदान। दिसंबर 2017 में केजों में कुल ₹ 2.40 लाख पंगेशियस मत्स्य बीज का स्टॉक किया गया था और औसतन 24 टन / बैटरी के साथ लगभग 96 टन मछली हार्वेस्ट किया गया था।



इसके अलावा, सी.एम.एफ.आर.आई. से तकनीकी सहायता के साथ, 4 बैटरियां स्थापित की गईं और पलेयर में 40 लाभार्थियों को आवंटित की गईं, जिनमें प्रत्येक बैटरी 16 केज वाली थी। इन केजों में, पंगेशियस के साथ-साथ अच्छी बाजार मांग वाली वैकल्पिक प्रजातियों की खेती की जाती थी। जलाशय की उत्पादकता बढ़ाने के लिए इन केजों का उपयोग उन्नत फिंगरलिंग (100 मि.मी. और उससे अधिक के मत्स्य बीज) को बढ़ाने के लिए भी किया गया था। अब, ये केज 93 सदस्यों को प्रत्यक्ष आजीविका सहायता प्रदान कर रहे हैं। महिलाएं सड़क किनारे मछली बेच रही हैं और उन्हें ₹ 20 प्रति किलो का मुनाफा हो रहा है। 16 केजों से 210 टन अतिरिक्त मत्स्य उत्पादन होता है। औसतन, प्रत्येक महिला प्रतिदिन 30 किलो मछली बेचती है और प्रतिदिन ₹ 600 कमाती है। इस परियोजना ने इलाके में वर्ष भर ताजा और स्वच्छ मछली की उपलब्धता के लिए एक बाजार तैयार किया है।



प्रौद्योगिकी के एका इंजीनियरिंग के लिए सिविल इंजीनियर



श्रीमती वाई. शांति श्री रामपल्ली, मेडचल-मलकाजगिरि, तेलंगाना की निवासी और पेशे से एक सिविल इंजीनियर हैं। उसने देखा कि तेलंगाना राज्य आंध्र प्रदेश से मछली का आयात करता है। चूंकि मछली एक खराब होने वाला उत्पाद है, इसलिए उसने शहरी ग्राहकों को ताजी और जीवित मछली देने का फैसला किया, उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन और विटामिन युक्त मछली को सुनिश्चित किया। इसलिए, उसने ₹ 80 लाख की कुल परियोजना लागत के साथ ब्लू-क्रांति के तहत “रीसर्चुलेटिंग एक्वाकल्चर सिस्टम (आर.ए.एस.)” गतिविधि के लिए आवेदन किया और ₹ 30 लाख की वित्तीय सहायता प्राप्त की, और बाकी का निवेश स्वयं द्वारा किया गया था। प्राप्त सहायता से, उसने सफलतापूर्वक 0.15 हेक्टेयर में फैले 8 टैंकों का निर्माण किया और 40 टन उत्पादन क्षमता प्राप्त कर सकी।

आर.ए.एस. परियोजना के माध्यम से, उसे वर्ष भर ताजी, उगाई गई मछली मिलती है और वह अपने ग्राहकों तक इसे पहुंचाने में सक्षम है। अब, मौसमी विविधताओं, स्थानों, जलवायु और पर्यावरणीय परिस्थितियों से स्वतंत्र उपलब्धता के मामले में उसके पास स्थिर मत्स्य उत्पादन है। वह इनडोर टैंकों में फूड ग्रेड (SS304) स्टेनलेस स्टील का उपयोग करके उच्च घनत्व वाले कल्चर में तिलापिया, पंगेशियस और मरेल का पालन कर रही है, जिसमें पानी को चार चरणों में शुद्ध किया जाता है और पुनः उपयोग किया जाता है, जिससे पानी की खपत कम हो जाती है। उन्होंने अपने आर.ए.एस. सिस्टम को इस तरह से डिजाइन किया कि नर्सरी टैंकों से मत्स्य बीज को स्वचालित रूप से कल्चर टैंक में स्थानांतरित कर दिया जाता है। वह ठोस अपशिष्ट पृथक्करण के लिए एक कॉम्पैक्ट बायो-रिएक्टर, ड्रम निस्पंदन, और यूवी नसबंदी प्रक्रियाओं का उपयोग करती है जो सिस्टम का हिस्सा हैं। ये सब करके उन्हें बेहतर प्रोडक्शन मिला।

उन्होंने पानी की गुणवत्ता के मापदंडों की लगातार निगरानी जैसी सर्वोत्तम प्रथाओं का इस्तेमाल किया; रोगों पर आवधिक प्रशिक्षण/अध्ययन; सही बीज और फीड की सोर्सिंग; उपकरण निवारक रखरखाव, आदि, जिसने उसे व्यवसाय को जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल बनाने में मदद की। वह जीवित मछली के लिए एक आपूर्ति श्रृंखला विकसित करने, झींगा और केकड़े पर काम करने और सौर संयंत्र और एक्वापोनिक्स स्थापित करने की योजना बना रही है।

नाम	वाई. शांति श्री
जिला और राज्य	मेडचल-मलकाजगिरि, तेलंगाना
शैक्षिक योग्यता	उन्नत शिक्षा संस्थान
श्रेणी: सामान्य	सिविल इंजीनियर
व्यवसाय	
मोबाइल सं.	8008866778
फर्म का नाम	एका फॉना
स्थापना का वर्ष	2019
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	तिलापिया, पंगासियस और मरेल के आर.ए.एस.
वार्षिक कारोबार	₹ 28 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	20 टन
रोजगार सृजित	4





आकर्षक मत्स्यपालन: कैटफिशिंग



नाम	अजीत दास
जिला और राज्य	दक्षिण त्रिपुरा, त्रिपुरा
शैक्षिक योग्यता	स्नातक की डिग्री
वर्ग: अनुसूचित जाति व्यवसाय	किसान
मोबाइल सं.	8729898163
फर्म का नाम	मैसर्स मनशा फिशरी एंड कंपनी
स्थापना का वर्ष	2020
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	कैटफिश का प्रजनन और बीज उत्पादन; बीजों का विपणन
वार्षिक कारोबार	₹ 1.65 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	संख्या में 55,000
रोजगार सृजित	2

श्री अजीत दास त्रिपुरा के दक्षिण त्रिपुरा जिले के दुर्गापुर गांव के रहने वाले हैं। कैटफिश और हवा में सांस लेने वाली मछलियाँ जैसे पाबड़ा, मगर, सिंधी, और कोई अपनी औषधीय विशेषताओं के कारण बाजार में अच्छी मांग में हैं, और उनकी प्रजातियाँ विषम परिस्थितियों में आसानी से विकसित हो सकती हैं और अच्छे बाजार मूल्य प्राप्त कर सकती हैं। इसलिए, उन्हें मत्स्यपालन शुरू करने के लिए प्रेरित किया गया। इसके बाद उन्होंने राज्य मत्स्यपालन विभाग के अधिकारियों के साथ कैटफिश, विशेष रूप से मगर, सिंधी और कोई के प्रजनन और बीज पालन शुरू करने के लिए चर्चा की क्योंकि इलाके में कैटफिश के बीज की भारी मांग है। वह पिछले 7 वर्षों से मत्स्यपालन कर रहे हैं, लेकिन पिछले दो वर्षों से कैटफिश कृषि में लगे हुए हैं और अब 0.24 हेक्टेयर क्षेत्र के साथ कैटफिश तालाब की 2 इकाइयों के मालिक हैं।

वित्त वर्ष 2020-21 में, उन्होंने राष्ट्रीय मत्स्य बीज फार्म, दक्षिण त्रिपुरा में कैटफिश के प्रजनन के व्यावहारिक एक्सपोजर का अनुभव करने के बाद प्रेरित प्रजनन के माध्यम से मगर के बीज उत्पादन को अपनाया। बाद में, उन्होंने अपने खेत में मगर का प्रजनन शुरू किया, जिससे 10,000 मगर का उत्पादन हुआ और लगभग 30,000 रुपये का लाभ हुआ।

वित्त वर्ष 2021-22 में, मत्स्यपालन विभाग ने पी.एम.एम.एस.वाई. के तहत “पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्थानीय रूप से महत्वपूर्ण स्वदेशी मछली प्रजातियों के लिए प्रजनन इकाइयों की स्थापना” गतिविधि को प्रायोजित किया, जिसकी परियोजना लागत ₹ 2.0 लाख थी जिसमें उन्हें इनपुट लागत के लिए ₹ 1.20 लाख की वित्तीय सहायता के.सी.सी. ऋण के रूप में ₹ 20,000 और शेष स्वयं द्वारा निवेश किया गया था। नतीजतन, उसने 20,000 मगर और 5,000 नग सिंधी बीज का उत्पादन किया और प्रत्येक को प्रति 3 रुपये प्रति फ्राई में बेचा और स्थानीय स्तर पर बीज बेचकर लगभग 40,000 का लाभ प्राप्त किया।

वह सरसों के तेल की खली, चावल की भूसी, सूखी मछली के पाउडर आदि के साथ स्व-तैयार फ्रीड के साथ पेलेटेड फ्रीड का उपयोग करता है। इसके अलावा, वह मैगूर लार्वा के लिए जूंप्लंकटन उत्पादन के लिए एक जैविक रस मिश्रण का उपयोग करता है। श्री दास बेलोनिया सब-डिवीजन में एक प्रगतिशील मत्स्य किसान हैं। वह अपने खेत में पाबड़ा, कैटफिश और आईएमसी प्रजनन के प्रजनन को आगे बढ़ाने के लिए अधिक संख्या में प्रजनन और पालन टैंक जोड़ने की योजना बना रहा है।





छोटे मत्स्य किसान से मत्स्य ब्रीडर



श्री मधुसूदन भट्टाचार्य कुंजाबन जीपी, त्रिपुरा के एक प्रगतिशील मत्स्य किसान हैं। उसके पास 4 हेक्टेयर के कुल क्षेत्रफल के 11 मछली तालाब हैं। इन 11 तालाबों में से, वह 1979 से 4 तालाबों (1.44 हेक्टेयर) में मिश्रित मत्स्यपालन का अभ्यास कर रहे हैं। हाल ही में, उन्होंने मछली के प्रेरित प्रजनन में रुचि विकसित की और अपने खेत में मछली का प्रजनन शुरू किया। वर्तमान में, वह रोहू, कतला, मृगल, सिल्वर कार्प, ग्रास कार्प, कॉमन कार्प और पुंटियस जावानिकस की प्रेरित प्रजनन करते हैं।

पहले वह पारंपरिक तरीके से मत्स्यकृषि और मत्स्यपालन करते थे लेकिन मछली और मछली के बीज की उच्च मृत्यु दर के कारण भारी आर्थिक नुकसान होता था। इसलिए उन्होंने इको-हैचरी में मछली प्रजनन की तकनीकी जानकारी जानने के लिए मत्स्यपालन विभाग (डी.ओ.एफ.), त्रिपुरा से संपर्क किया। उन्होंने पी.एम.एम.एस.वाई. के तहत कार्प हैचरी की स्थापना के लिए आवेदन किया और वित्त वर्ष 2021-22 में मत्स्यपालन विभाग, त्रिपुरा ने पी.एम.एम.एस.वाई. के तहत फिन फिश हैचरी को मंजूरी दी। कुल परियोजना लागत ₹ 25 लाख थी। उन्होंने इस योजना के तहत ₹ 10 लाख की वित्तीय सहायता प्राप्त की और स्वयं 15 लाख का निवेश किया। उन्होंने 9 मिलियन उत्पादन क्षमता वाले 4 प्रजनन टैंक, 12 हैचिंग टैंक और अंडा संग्रह कक्षों का सफलतापूर्वक निर्माण किया और 20 लाख भारतीय प्रमुख कार्प फिंगरलिंग का उत्पादन किया। उसे ₹ 5 लाख के व्यय की तुलना में ₹ 9.90 लाख का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ।

जब से उन्होंने अपनी हैचरी में स्पॉन का उत्पादन शुरू किया, तब से उन्होंने अपनी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार किया है। अब वह उदयपुर उपमंडल में दूसरों के लिए एक आदर्श हैं। उन्होंने क्षेत्र को बचाने और बड़ी माला में अंडों के भंडारण के लिए “मोटका टैंक” का निर्माण किया है ताकि आयताकार टैंक की शंक्वाकार संरचना से अंडे क्षतिग्रस्त न हों। मत्स्य क्षेत्र के विकास में उनके बहुमूल्य योगदान के कारण, उन्हें इस वित्त वर्ष 2019-20 में मत्स्यपालन विभाग, त्रिपुरा द्वारा आयोजित मत्स्य-उत्सव (राज्य स्तर) में सर्वश्रेष्ठ मत्स्य किसान पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

जब से उन्होंने अपनी हैचरी में स्पॉन का उत्पादन शुरू किया, तब से उन्होंने अपनी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार किया है। अब वह उदयपुर अनुमंडल में दूसरों के लिए एक आदर्श हैं। उन्होंने क्षेत्र को बचाने और बड़ी माला में अंडों के भंडारण के लिए “मोटका टैंक” का निर्माण किया है ताकि आयताकार टैंक की शंक्वाकार संरचना से अंडे क्षतिग्रस्त न हों। मत्स्य क्षेत्र के विकास में उनके बहुमूल्य योगदान के कारण, उन्हें इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वित्त वर्ष 2019-20 में डी.ओ.एफ., त्रिपुरा द्वारा आयोजित मछली महोत्सव (राज्य स्तर) में सर्वश्रेष्ठ मत्स्य किसान।

लाभार्थी	मधुसूदन भट्टाचार्य
जिला	गोमती त्रिपुरा
राज्य	त्रिपुरा
शैक्षिक योग्यता	8वीं कक्षा
व्यवसाय	मत्स्य किसान
मोबाइल सं.	7641005662
व्यावसायिक गतिविधि	मत्स्य बीज उत्पादन
स्थापना का वर्ष	2004
पद	मालिक
फर्म का नाम	एम/एस भट्टाचार्य मत्स्य हैचरी
वार्षिक मत्स्य बीज उत्पादन	संख्या में 20 लाख
वार्षिक कारोबार	₹ 22.5 लाख
रोजगार सृजित	8





जुनून से प्रगतिशील किसान बनना



नाम	राजकुमार डे
जिला और राज्य	दक्षिण त्रिपुरा, त्रिपुरा
शैक्षिक योग्यता	स्नातक की डिग्री
श्रेणी	ओबीसी
व्यवसाय	व्यवसाय
मोबाइल सं.	9436515998
फर्म का नाम	मेसर्स राजर्षि मत्स्य हैचरी
स्थापना का वर्ष	2019
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	आई.एम.सी. और कैटफिश का बीज उत्पादन
वार्षिक कारोबार	₹ 36.53 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	8.08 टन
रोजगार सृजित	6

श्री राजकुमार डे त्रिपुरा राज्य के दक्षिण त्रिपुरा जिले के रंगमुरा गांव के रहने वाले हैं। वह प्रेरित हुआ और मत्स्यपालन में शामिल हो गया क्योंकि उसने महसूस किया कि पाबड़ा, मगर, सिंघी और कोई जैसी उच्च मूल्य वाली मछलियों की त्रिपुरा में उनके अच्छे स्वाद के कारण अच्छी बाजार मांग है। वर्ष 2011-12 में, मत्स्यपालन विभाग, त्रिपुरा ने उन्हें राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आर.के.वी.वाई.) योजना के तहत पैडल व्हील एरियर और अन्य कृषि इनपुट प्रदान किए। उन्होंने अपने फार्म पर भारतीय मेजर कार्प का बीज उत्पादन और मत्स्यपालन शुरू किया। बाद में उन्होंने वित्त वर्ष 2019-2020 के दौरान कॉलेज ऑफ फिशरीज, अगरतला और नेशनल फिश सीड फार्म, दक्षिण त्रिपुरा में कैट फिश ब्रीडिंग का प्रशिक्षण लिया और कैटफिश का बीज उत्पादन शुरू किया।

मत्स्यपालन विभाग, त्रिपुरा के मार्गदर्शन और समर्थन के तहत, उन्होंने वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान आर.के.वी.वाई. योजना के तहत “एरेटर का उपयोग कर हार्ड-टेक फिश कल्चर” गतिविधि के लिए आवेदन किया और 20 लाख बीजों की उत्पादन क्षमता के साथ 12 हैचरी टैंकों का सफलतापूर्वक निर्माण किया। उन्होंने सरकार से ₹ 0.39 लाख की वित्तीय सहायता प्राप्त की, के.सी.सी. मत्स्यपालन के माध्यम से बैंक ऋण के रूप में ₹ 1.60 लाख प्राप्त किए, और स्वयं द्वारा ₹ 9.50 लाख का निवेश किया। उन्होंने 1 लाख पबड़ा, 50,000 मागुर, 1,50,000 सिंघी और 2 लाख कोई बीज पैदा किया। उसी वर्ष लगभग 80-90 किलोग्राम पबड़ा ब्रूड मछली का भी उत्पादन किया गया। वर्ष के दौरान उनका शुद्ध लाभ ₹ 16.96 लाख था।

कैटफिश के लिए प्रजनन और बीज-पालन तकनीक अपनाकर, उन्होंने अपनी खेती की गतिविधियों में विविधता लाई है और इसके परिणामस्वरूप, उन्हें अपने खेत से बेहतर आय प्राप्त होती है। अब उनके पास 1.48 हेक्टेयर भूमि है जिसमें 12 हैचरी टैंक, 8 पालन टैंक और 7 तालाब हैं जो पिछले दस वर्षों से चल रहे हैं। वह तालाब में जूफ्लंकटन का उत्पादन करने के लिए मछली खाने और जैविक उर्वरक के लिए पेलैटेड और खेत से बने फ्रीड का उपयोग करता है और मृत्यु दर को कम करने के लिए इसे मगुर लार्वा को खिलाता है।





आदिवासी किसान से सफल उद्यमी



श्री धर्मेन्द्र, एक युवा आदिवासी किसान, उत्तर प्रदेश के कटुंधी गाँव के हैं। वे छोटे पैमाने पर सब्जियां उगाते थे, मछली के बीज का उत्पादन करते थे और दो तालाबों (0.63 एकड़) में मछली पालते थे। हालाँकि, उन्हें अल्प आय प्राप्त हो रही थी। उन्हें अपने क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण मत्स्य बीज की अनुपलब्धता, दूर स्थानों से लाए गए मत्स्य बीज की उच्च मृत्यु दर, मत्स्य बीज की उच्च लागत आदि जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा।

इस परिदृश्य में आई.सी.ए.आर.-नेशनल ब्यूरो ऑफ फिश जेनेटिक रिसोर्सेज (आई.सी.ए.आर.-एन.बी.एफ.जी.आर.), लखनऊ उनके समर्थन में आया। उन्हें आई.सी.ए.आर.-एन.बी.एफ.जी.आर. (वित्त वर्ष 2016-17) की अनुसूचित जनजाति घटक (पूर्व में जनजातीय उप योजना) पहल के तहत चुना गया था और उन्हें प्रशिक्षित, समर्थित और पदोन्नत किया गया था। आई.सी.ए.आर.-एन.बी.एफ.जी.आर. से तकनीकी मार्गदर्शन और समस्या निवारण के निरंतर समर्थन के साथ और शुरुआत में आई.सी.ए.आर.-एन.बी.एफ.जी.आर. के जागरूकता कार्यक्रम से प्राप्त ज्ञान के माध्यम से, उन्होंने एक पोर्टेबल हैचरी इन्फ्रास्ट्रक्चर स्थापित किया और ऑनसाइट प्रदर्शन करना शुरू कर दिया।

इसने उन्हें मत्स्य बीज उत्पादन इकाई के सफल उद्यमशीलता चलाने और उनकी आय को दोगुना करने के लिए प्रेरित किया। गुणवत्तापूर्ण मत्स्य बीज की स्थानीय उपलब्धता के परिणामस्वरूप परिवहन और जनशक्ति लागत में कमी के माध्यम से इनपुट लागत कम हुई और बीज मृत्यु दर में कमी आई। उन्होंने अपने खेत को 0.63 एकड़ के दो तालाबों से 2.65 एकड़ जल क्षेत्र के नौ तालाबों तक बढ़ाया। अब वह सालाना आय के रूप में ₹ 6.34 लाख कमाते हैं। पिछले पांच वर्षों में उनकी आय में 400 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। 5 वर्षों के दौरान जब से उनके खेत में हस्तक्षेप किया गया, हर वर्ष बीज का उत्पादन और बिक्री बढ़ी है। वे क्षेत्र के अन्य आदिवासी किसानों को कृषि भ्रमण व्यवस्था और प्रशिक्षण के माध्यम से प्रोत्साहित और प्रेरित कर रहे हैं। तीन राज्यों (उत्तर प्रदेश, झारखंड और मध्य प्रदेश) के 38 गांवों के कुल 78 मत्स्य किसानों ने अब तक उनसे बीज खरीदा है और इससे लगभग 110 हेक्टेयर तालाब क्षेत्र को लाभ हुआ है।

तकनीकी हस्तक्षेप लाभार्थी	आई.सी.ए.आर.-एन.बी.एफ.जी.आर., लखनऊ धर्मेन्द्र
जिला	सोनभद्र
राज्य	उत्तर प्रदेश
शिक्षा	इंटरमीडिएट स्तर
व्यवसाय	मत्स्य किसान
मोबाइल सं.	8707584888
व्यावसायिक गतिविधि	बीज उत्पादन और विपणन
प्रजाति	आई.एम.सी.
स्थापना का वर्ष	2016
वार्षिक उत्पादन	6 करोड़ स्पॉन, 800 किलो फ्राई और फिंगरलिंग, 300 किलो ब्रूड फिश
वार्षिक आय	₹ 6.34 लाख
रोजगार सृजित	78





बीजों की उन्नत किस्म से बेहतर आय



नाम	गौतम चौधरी
जिला और राज्य	बागपत, उत्तर प्रदेश
शैक्षिक योग्यता	एम.बी.ए.
श्रेणी	ओ.बी.सी.
व्यवसाय	निजी नौकरी
मोबाइल सं.	9068680591
स्थापना का वर्ष	2019
फर्म का नाम	
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	ग्री-आउट और बीज पालन (जी.आई. आई.एम.सी.)
वार्षिक कारोबार	₹ 24 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	ग्री-आउट- 5 टन फिंगरलिंग- 6 लाख (संख्या)
रोजगार सृजित	12



श्री गौतम चौधरी उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के ग्राम राठौरा के रहने वाले हैं। मत्स्यपालन क्षेत्र में आने से पहले, वह एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में एक निजी कर्मचारी थे। उन्होंने जिले में मछली की खपत की बढ़ती मांग को देखा और मत्स्यपालन में अपने करियर के बारे में सोचना शुरू कर दिया। उनके पास भूमि और मीठे पानी के संसाधन हैं, इसलिए उन्होंने एक हेक्टेयर तालाब में 15000 सं. की कृषि में एक वर्ष में फिंगरलिंग का स्टॉक करके अपनी मत्स्यपालन की यात्रा प्रारम्भ की। उन्होंने मछली को पूरक फार्म-मेड फ्रीड के साथ खिलाया और 5000 किलो मछली हार्वेस्ट की। उसने फार्म गेट पर मछली को ₹ 100/किलोग्राम में बेच दिया और ₹ 5 लाख का सफलतापूर्वक कारोबार किया और 2 लाख रुपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया।

अगले वर्ष उन्होंने ₹ 3.8 लाख का शुद्ध लाभ कमाया, जो पहली फसल से प्राप्त राशि से लगभग दोगुना था। हालांकि, उन्होंने विकसित खेत के लिए गुणवत्तापूर्ण बीज प्राप्त करने के लिए संघर्ष किया, लेकिन फिर उन्हें आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.ए. के बारे में पता चला और 2020 में पर्ल कृषि प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रशिक्षण लेने के दौरान, उन्होंने अपने क्षेत्र के दौरे के हिस्से के रूप में एन.एफ.डी.बी.-एन.एफ.एफ.बी.बी. का दौरा किया। उन्नत किस्म के बारे में जानने के बाद, उन्होंने वित्तीय वर्ष 2019-20 के दौरान नीली क्रांति के तहत भारतीय मेजर कार्प्स की आनुवंशिक रूप से उन्नत किस्मों के ग्री-आउट और बीज पालन के लिए आवेदन किया और एक हेक्टेयर क्षेत्र में एक ग्री-आउट और प्रत्येक 0.25 हेक्टेयर क्षेत्र में चार नर्सरी तालाबों का निर्माण किया। प्रथम वर्ष के इनपुट के रूप में ₹ 6 लाख की वित्तीय सहायता के साथ कुल परियोजना लागत ₹ 15 लाख थी और 9 लाख रुपये स्वयं द्वारा निवेश किए गए थे। फिर, उन्होंने एन.एफ.डी.बी.-एन.एफ.एफ.बी.बी. के साथ एक नेटवर्क बीज उत्पादक के रूप में अपने खेत को पंजीकृत किया, जिसने उनकी खेती के तरीकों को बदल दिया और बीज को बेचने और बिना किसी बीमारी के पहले की तुलना में 30% अधिक लाभ कमाने में बहुत बड़ा बदलाव किया।

परिणामस्वरूप उन्हें मेरठ मंडल में उन्नत किस्म के उत्पादन के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रगतिशील किसान के रूप में सम्मानित किया गया। उन्होंने अपने ज्ञान को समृद्ध करने के लिए आर.ए.एस., बायोफ्लोक और पर्ल कृषि में प्रशिक्षण प्राप्त किया है और हाल ही में डिजाइनर पर्लों की खेती शुरू की है। साथ ही वह अन्य किसानों को परामर्श सेवाएं और मार्गदर्शन भी दे रहे हैं। उनकी योजना भारत सरकार की मदद से युवा पीढ़ी को प्रशिक्षण देकर अधिक रोजगार पैदा करने की है।



एक रियल्टर से आर.ए.एस. का उपयोग करके अच्छी आय



मो. आसिफ सिद्दीकी गंगवाड़ा, बाराबंकी जिले, उत्तर प्रदेश (यू.पी.) के मूल निवासी हैं। वह रियल एस्टेट क्षेत्र में काम कर रहे थे और उनके परिवार का मुख्य व्यवसाय कृषि था। लगातार 2 वर्ष से परिवार को भारी नुकसान हुआ है। यह तब हुआ जब वह अपने एक करीबी दोस्त श्री परवेश के संपर्क में आया, जो आर.ए.एस. तकनीक का उपयोग करके मत्स्यपालन कर रहा था और अच्छी आय प्राप्त कर रहा था। अपने दोस्त के लाभदायक मछली व्यवसाय को देखते हुए, श्री सिद्दीकी ने 2015 में मत्स्यपालन में कदम रखा। अपने ज्ञान को बेहतर बनाने के लिए, उन्होंने मत्स्यपालन विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया, जैसे 2016 में नेशनल ब्यूरो ऑफ फिश जेनेटिक रिसोर्सेज (एन.बी.एफ.जी.आर.), लखनऊ से 'कृषि उद्यमिता में स्टार्ट-अप और नवाचार' पर एक प्रमाणन पाठ्यक्रम है। एन.बी.एफ.जी.आर. द्वारा आयोजित रीसर्च्युलेटिंग एक्वाकल्चर सिस्टम (आर.ए.एस.) पर एन.एफ.डी.बी. प्रायोजित प्रशिक्षण।

इसने उन्हें एक एकड़ क्षेत्र में ₹ 1.50 लाख प्रति एकड़ के स्टॉकिंग घनत्व के साथ 15 मिट्टी के तालाबों का निर्माण करके व्यवसाय शुरू करने का विश्वास दिलाया। 6-7 महीनों में, उन्होंने 62 टन मछलियों की हार्वेस्ट की, जिससे उन्हें अपनी कृषि भूमि को तालाबों में बदलने और अपने खेत को 6 एकड़ तक विस्तारित करने का विश्वास मिला।

वह पश्चिम बंगाल से ₹3 प्रति बीज की दर से बीज खरीदता है, फिर उसे नर्सरी में 20-25 दिनों के लिए पालता है, और ₹120 प्रति किलोग्राम की कीमत पर बेचता है। वह स्थानीय रूप से प्राप्त पेलेटेड फीड का उपयोग करता है। वह आस-पास के कृषि क्षेत्रों की सिंचाई के लिए मछलियों के तालाबों के पानी का पुनः उपयोग करके अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाओं का पालन करता है, इस प्रकार पानी की खपत को 30% तक कम कर देता है। वर्ष 2018 में, उन्हें मत्स्यपालन विभाग, उत्तर प्रदेश से 30 किलोवाट सौर संयंत्र स्थापित करने, जलवाहकों के निर्धारण, और 5 एचपी सौर पंप को तालाबों में स्थापित करने के लिए ₹ 6 लाख की सब्सिडी प्राप्त हुई, जिससे उत्पादन की लागत कम हो गई।

उनके द्वारा अपनाई गई सर्वोत्तम प्रथाओं को समझने के लिए कई कॉलेज और विश्वविद्यालय भी उनके खेत में एक्सपोजर विजिट का आयोजन कर रहे हैं। वह स्थानीय किसानों के साथ मछली कृषि के अपने ज्ञान को साझा करते हैं और उत्साही किसानों को अपनी आजीविका गतिविधियों के हिस्से के रूप में मत्स्यपालन करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

नाम	मो. आसिफ सिद्दीकी
जिला और राज्य	लखनऊ, उत्तर प्रदेश
शैक्षिक योग्यता	स्नातक की डिग्री
श्रेणी	सामान्य
व्यवसाय	कृषि और रियल एस्टेट एजेंसी
मोबाइल सं.	9839470411
फर्म का नाम	ए.क्यू. मत्स्यपालन
स्थापना का वर्ष	2015
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	उच्च घनत्व जलकृषि
वार्षिक कारोबार	₹ 8.40 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	210 टन
रोजगार सृजित	50





निरंतर आजीविका की ओर अग्रणी



नाम	Z
जिला और राज्य	फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश
शैक्षणिक योग्यता	एम. कॉम.
व्यवसाय	अध्यापन
श्रेणी	ओबीसी
मोबाइल सं.	9193366099
स्थापना का वर्ष	2020
फर्म का नाम	खैरगढ़ फार्म
स्थिति	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	गो-आउट और बीज पालन (जी.आई. आई.एम.सी.)
वार्षिक कारोबार	₹ 38 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	30 टन
रोजगार सृजित	5

श्रीमती पीयूषिका यादव उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद जिले के नगला हिम्मत गांव की रहने वाली हैं। मत्स्यपालन क्षेत्र में आने से पहले, वह एक शिक्षिका थी और उसे ₹ 35,000 की मासिक आय मिल रही थी। चूंकि उसकी आय उसके परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं थी, वह एक ऐसे व्यवसाय की तलाश में थी जो उसे लंबे समय तक बनाए रखे और जल्द ही उसे एक समाधान मिल गया, मछली खाद्य व्यवसाय। इसके अलावा, उन्होंने महसूस किया कि उपभोक्ताओं के लिए पूरे वर्ष ताजा मछली की आपूर्ति की आवश्यकता है। 2020 में, उन्होंने 1.7 हेक्टेयर क्षेत्र में दो तालाबों और बीज पालन के लिए 0.3 हेक्टेयर क्षेत्र में तीन तालाबों का निर्माण किया। उसने शुरू में इसे व्यक्तिगत खेती के लिए बनाया था, लेकिन स्थानीय किसानों की निरंतर मांग के साथ, दिन-प्रतिदिन उन्हें देखने और उनके दौरो ने, मछली कृषि में अधिक जानने के लिए उनकी भागीदारी ने उन्हें स्थानीय किसानों के लिए बीज पालन का व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित किया।

परियोजना के प्रारंभिक चरण में, सबसे बड़ी बाधा उत्पादन के लिए गुणवत्तापूर्ण बीज प्राप्त करना था। इसके लिए उन्होंने एन.एफ.डी.बी.-एन.एफ.एफ.बी.बी., भुवनेश्वर से संपर्क किया और जयंती रोडू, अमूर कॉमन कार्प और बेहतर कटला जैसी उन्नत नस्लों के उच्च गुणवत्ता वाले बीज खरीदे। नतीजतन, उसने पहले बैच से 2.5 लाख अर्ली फ्राई का उत्पादन किया। उन्हें अप्रशिक्षित मजदूरों, उच्च बिजली शुल्क और बीजों के परिवहन के लिए बुनियादी ढांचे की कमी से संबंधित चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा। बाद में, उन्होंने न केवल अपने कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया, बल्कि उनकी आजीविका कमाने में भी मदद की और मत्स्य बीज के परिवहन के लिए वाहन खरीदे।

वे पानी की गुणवत्ता के मानकों के उचित रखरखाव, उचित फीड के साथ मछली को खिलाने, और नियमित अंतराल पर मछली स्टॉक नमूनाकरण के माध्यम से कृषि तालाबों का प्रबंधन करती हैं, जिससे सामान्य 20% के मुकाबले 30% से 40% तक जीवित रहने में मदद मिलती है। चूंकि उसके स्थान का तापमान सामान्य रूप से अधिक होता है, इसलिए उसने तालाब के जल स्तर को 3.5 मीटर तक बनाए रखा, जिससे उसे कम या बिना मृत्यु दर वाली मछलियों के स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद मिल रही है। वे किसानों को जीवित मत्स्य बीज की डिलीवरी सुनिश्चित करती हैं। वह लोगों को मछली की हार्वेस्ट, नमूना लेने और परिवहन में लगाए रखती हैं, इस प्रकार कई लोगों को रोजगार प्रदान करती हैं। वह निकट भविष्य में 10 हेक्टेयर क्षेत्र में सिंधी, देसी मगर और मुरल की गो-आउट कृषि शुरू करना चाहती हैं।





एकीकृत कृषि से जीवन में सुधार



श्री राजनीश कुमार पटला गांव, गाजियाबाद जिला, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश (यू.पी.) से हैं। 2004 में बी.टेक पूरा करने के बाद, उन्होंने 14 वर्ष तक विभिन्न कॉर्पोरेट कंपनियों में काम किया। काम करते समय उनकी खुद का व्यवसाय शुरू करने की इच्छा थी और मत्स्यपालन क्षेत्र का पता लगाने में उनकी रुचि थी। व्यापक शोध करने के बाद, उन्होंने जलकृषि उद्योग में प्रवेश किया। उन्होंने कुछ महीनों के लिए विभिन्न स्थानों का दौरा किया और विभिन्न तकनीकों और प्रथाओं (आर.ए.एस. / बायोप्लोक / इन-पॉन्ड रेसवे सिस्टम (आई.पी.आर.एस.) / और केज कल्चर) का अध्ययन करने के लिए कई खेतों का दौरा किया, और घरेलू और विश्व स्तर पर मांग और आपूर्ति के अंतर को पहचाना। व्यवसाय की विस्तार योग्य केंद्रित प्रकृति ने उसे उसी में उद्यम करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने 2017 में अपनी नौकरी छोड़ दी और मत्स्यपालन की दिशा में अपने करियर की योजना बनाई। 2018 में, उन्होंने अपने मूल स्थान पर 12 एकड़ भूमि पर मत्स्यपालन परियोजना शुरू की। उनका उद्यमशीलता का सफर आसान नहीं था, फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी।

वित्त वर्ष 2018-19 में, उन्होंने प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (पी.एम.एम.एस.वाई.) के तहत 150 टन उत्पादन क्षमता वाले 2 तालाबों का निर्माण किया और धीरे-धीरे इंडियन मेजर कार्प (आईएमसी) और पंगेशियस की खेती के लिए अपने खेत को 50 एकड़ तक बढ़ा दिया। बाद में, उन्होंने 2019 में 2 मिलियन उत्पादन क्षमता के साथ एक बीज बैंक शुरू करके अपनी फर्म का विस्तार किया। 2020 में, उनकी फर्म को एन.एफ.डी.बी. के साथ सूचीबद्ध किया गया था। उन्होंने कैटफिश के लिए बीज पालन के माध्यम से संकोची एकीकरण किया। नर्सरी के माध्यम से, उन्होंने वर्ष 2021 में वार्षिक उत्पादन किया और एक जीवित मछली बाजार विकसित किया। उन्होंने महसूस किया कि मत्स्यपालन के बारे में शिक्षा की कमी थी। इसलिए उन्होंने 12 महीने की अवधि के भीतर मत्स्यपालन में व्यक्तियों, उद्यमियों और किसानों सहित 400 से अधिक उम्मीदवारों को प्रशिक्षित करने की पहल की। वह मत्स्यपालन के बारे में शिक्षित करने और जागरूकता पैदा करने के लिए “पीवीआर एक्का” नामक एक यूट्यूब चैनल का प्रबंधन करते हैं। पिछले 4 वर्षों में, श्री कुमार ने मत्स्यपालन के बारे में जानकारी प्रसारित करके अपने क्षेत्र में मत्स्यपालन में एक क्रांति लाई है।

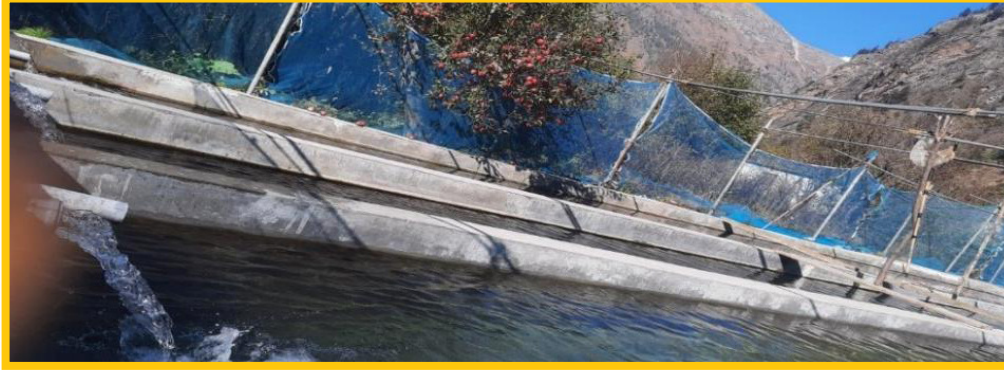
उनका लक्ष्य अपने खेत को 365 एकड़ तक विस्तारित करना है ताकि वह प्रतिदिन एक एकड़ मछली की हार्वेस्ट कर सकें और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के हर कोने में मछली की बिक्री की सुविधा स्थापित करने के इच्छुक युवाओं को रोजगार प्रदान कर सकें। भविष्य में, वह लागत को अनुकूलित करने और यू.पी. एक्का क्षेत्र को विकसित करने के लिए एक फ्रीड उत्पादन इकाई शुरू करने के इच्छुक हैं।

नाम	राजनीश कुमार
जिला और राज्य	गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
शैक्षिक योग्यता	बी.टेक
श्रेणी	सामान्य
व्यवसाय	स्व-नियोजित
मोबाइल सं.	9910515234
फर्म का नाम	पीवीआर एक्का
स्थापना का वर्ष	2018
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	एकीकृत एक्का कल्चर बीज बैंक एक्का पार्क और फिश ऑन व्हील
वार्षिक कारोबार	₹ 2.35 करोड़
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	375 टन
रोजगार सृजित	66





ट्राउट कृषि से गांव विकास की ओर



नाम	जयपाल सिंह नेगी
जिला और राज्य	उत्तरकाशी, उत्तराखंड
शैक्षिक योग्यता	8वीं कक्षा
श्रेणी	अनुसूचित जनजाति (एस.टी.)
व्यवसाय	कृषि किसान
मोबाइल सं.	9456145390
फर्म का नाम	हिमालयन ट्राउट फिश फार्म
स्थापना का वर्ष	2020
पद	मालिक
व्यावसायिक गतिविधि	रेसवे में ट्राउट की कृषि
वार्षिक कारोबार	₹ 8 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	1-1.2 टन
रोजगार सृजित	परिवार के सदस्य

श्री जयपाल सिंह नेगी उत्तरकाशी जिले, उत्तराखंड के भटवारी गाँव के निवासी हैं और हर्षिल मत्स्य जीवी उत्पादन सहकारी समिति के सदस्य हैं। वे बीस वर्ष से सेब की खेती कर रहे थे, लेकिन उनके लिए गुजारा करना काफी नहीं था। इसलिए, उन्होंने सरकारी नौकरी पाने की कोशिश करने के बारे में सोचा। इस दौरान उन्होंने राज्य मत्स्यपालन विभाग का दौरा किया और ट्राउट कृषि के बारे में जाना। उन्होंने सुझाव दिया कि श्री नेगी सेब की खेती के साथ-साथ ट्राउट की कृषि शुरू करें, ताकि उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार हो और अभिनव कार्य किया जा सके।

उन्होंने राज्य मत्स्यपालन विभाग के अधिकारियों के मार्गदर्शन और समर्थन के अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2019-20 के दौरान नीली क्रांति योजना के अंतर्गत “ट्राउट कृषि” परियोजना के लिए आवेदन किया। इस योजना के अंतर्गत, उन्होंने 50 क्यूबिक मीटर की क्षमता वाली 3 यूनिट ट्राउट रेसवे का निर्माण किया, जिसकी कुल पूंजी लागत 9.0 लाख थी। 3 इकाइयों की परिचालन लागत ₹ 7.5 लाख थी। सरकार ने 40% सब्सिडी प्रदान की, अन्य ₹ 2.0 लाख मनरेगा के माध्यम से प्राप्त किए गए, और शेष का निवेश श्री नेगी ने स्वयं किया।

वह एक समय में एक इकाई की हार्वेस्ट का अभ्यास करता है और हार्वेस्ट के ठीक बाद उसी इकाई को मत्स्य बीज के साथ स्टॉक करता है। इस तरह, वह पूरे वर्ष उत्पादन को बनाए रखने में सक्षम है। ट्राउट की कृषि करके वह जिले के उपलब्ध जल संसाधनों और बंजर भूमि का उपयोग कर सकता था। चूंकि उनके पास अन्य इकाइयों के निर्माण के लिए अधिक भूमि और जल संसाधन उपलब्ध हैं, इसलिए उनके लिए बड़े पैमाने पर ट्राउट कृषि विकसित करने की उच्च संभावना है। वर्तमान में, वह उत्पादन पर ₹ 250 प्रति कि.ग्रा. खर्च कर रहा है और ₹ 500 प्रति कि.ग्रा. के लाभ मार्जिन के साथ इसे ₹ 850 प्रति कि.ग्रा. के हिसाब से बेच रहा है। वे अपनी फसल को प्रभावी ढंग से “उत्तरा मछली बाजार”, देहरादून में अच्छे दामों पर बेच रहे हैं। इस परियोजना का अन्य ग्रामीणों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है क्योंकि वे अपनी आजीविका में सुधार के लिए श्री नेगी के नक्शेकदम पर चलने के लिए प्रेरित होते हैं। साथ ही, ट्राउट कृषि की प्रथाओं के साथ, इलाके का पर्यटक आकर्षण दिन-ब-दिन बढ़ रहा है।





मछलियों के लिए अनमोल फीड



अनमोल फीड्स लिमिटेड एक आईएसओ 9001:2015 कंपनी है, जिसे श्री अमित सरावगी ने वर्ष 2000 में मुजफ्फरपुर, बिहार में पशु फीड उद्योग में प्रवेश के साथ शुरू किया था। तब से, इसने बिहार, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में विनिर्माण इकाइयों के साथ कोलकाता में अपना कॉर्पोरेट कार्यालय स्थापित करने के व्यवसाय में दो दशकों का सफर तय किया है। पिछले 20 वर्षों में, संगठन ने 20 से अधिक राज्यों को कवर करते हुए देश के पूर्वी, उत्तरी और उत्तर-पूर्वी और दक्षिणी भागों में पोल्ट्री फीड का निर्माण और बिक्री की है। हाल ही में इसने बांग्लादेश, नेपाल और भूटान के अंतरराष्ट्रीय बाजारों में खानपान की शुरुआत की। उन्होंने 2017 में फिश फीड मैनुफैक्चरिंग सेगमेंट में कदम रखा। वे “मत्स्य बंधु” के ब्रांड नाम के तहत फिश फीड की एक विस्तृत श्रृंखला की आपूर्ति करते हैं, जिसमें फ्लोटिंग फिश फीड और सिंकिंग फिश फीड शामिल है, जो पूरे देश में 10,000 मत्स्य किसानों की आवश्यकता को पूरा करता है। वर्तमान में, उनकी पांच राज्यों यानी बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश और जम्मू-कश्मीर में 7 अत्याधुनिक फीड मिलें हैं। गुणवत्ता वाले झींगा फीड की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उन्होंने 2019 में झींगा फीड व्यवसाय में प्रवेश किया। कंपनी अब झींगा के जीवन चक्र के आकार और अवस्था के अनुसार विभिन्न पेलेट आकारों के “लैटिस गोल्ड श्रिम्प फीड” की आपूर्ति करती है।

कंपनी उत्पादन और वितरण के सभी स्तरों पर कड़े गुणवत्ता मानकों को बनाए रखती है। तैयार उत्पाद को वितरकों के माध्यम से किसानों को भेजने से पहले निर्धारित मापदंडों के लिए विश्लेषण किया जाता है। वे किसानों को वैज्ञानिक रूप से तैयार किए गए फीड के साथ अपनी मछली को खिलाने में मदद कर रहे हैं जो मछली को अच्छी तरह से पोषित रखता है और पानी की गुणवत्ता को बनाए रखता है, जिससे बीमारी के प्रकोप के जोखिम आदि को कम करता है, कंपनी ने 9 जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए हैं, किसानों के लिए 22 एक्सपोजर दौरे आयोजित किए हैं, और पिछले तीन वर्षों के दौरान विभिन्न सेमिनारों और कार्यशालाओं में भाग लिया।

कंपनी को विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कई पुरस्कार मिले हैं। वे पोषक तत्वों से भरपूर और पैसा वसूलने के लिए मूल्य वाले उत्पादों को वितरित करके मिश्रित फीड के अपने बाजार हिस्से को बढ़ाने का इरादा रखते हैं, जिसके परिणामस्वरूप इसके सभी हितधारकों के लिए उच्च लाभ होगा।

नाम	अमित सरावगी
जिला और राज्य	उत्तर 24 परगना, पश्चिम बंगाल
शैक्षिक योग्यता	बी.ई.
श्रेणी	सामान्य
व्यवसाय	उद्यमी
मोबाइल सं.	7978624153 / 7504292573
स्थापना का वर्ष	2000
फर्म का नाम	अनमोल फीड्स प्राइवेट लिमिटेड
पद	सह-स्थापक और प्रबंध निदेशक
व्यावसायिक गतिविधि	पशुधन फीड निर्माण
वार्षिक कारोबार	₹487.79 करोड़
वार्षिक मछली फीड उत्पादन	36,000 टन
रोजगार सृजित	300 प्रत्यक्ष और 300 अप्रत्यक्ष





छोटी छलांग से महत्वपूर्ण लाभ



नाम	रमेन कपाट
जिला और राज्य	पश्चिम मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल
शैक्षिक योग्यता	9वीं कक्षा
वर्ग	अनुसूचित जाति
व्यवसाय	किसान
मोबाइल सं.	9382649905
स्थापना का वर्ष	1990
फर्म का नाम:	
पद	सदस्य
व्यावसायिक गतिविधि	पारंपरिक रूप से भारतीय प्रमुख और विदेशी कार्प की खेती
वार्षिक कारोबार	₹ 1.5 लाख
वार्षिक मत्स्य उत्पादन	1 टन
रोजगार सृजित	30

श्री रमेन कपाट पश्चिम बंगाल के पश्चिम मेदिनीपुर जिले के सोरा गांव के रहने वाले हैं। वे 1990 में स्थापित एक हेक्टेयर से अधिक के पैतृक तालाब के साथ एक निम्न-मध्यम वर्ग के कृषि किसान थे। शुरू में, वे कृषि खेती कर रहे थे, लेकिन बाजार की कीमतों में उतार-चढ़ाव और अप्रत्याशित मौसम के कारण, उन्हें कोई स्थिर आय नहीं मिल सकी। इसलिए उन्होंने मत्स्यपालन की ओर रुख किया। उन्होंने बहुत अधिक ज्ञान के बिना मत्स्यपालन शुरू किया जिसके परिणामस्वरूप अनुचित भोजन, वातन की कमी और पानी की गुणवत्ता के मानकों का खराब रखरखाव हुआ।

चूंकि उनके पास मत्स्यपालन को जारी रखने के लिए धन नहीं है, इसलिए उन्होंने अपने एक मित्र के साथ भागीदारी की, और वर्ष 2017 में, उन्होंने पारंपरिक तरीके से ही अपने पैतृक तालाब में मछली पालन, मुख्य रूप से भारतीय प्रमुख कार्प और कुछ विदेशी कार्प को फिर से शुरू किया।

जनवरी 2021 में, उन्होंने ग्रामीण पारिस्थितिकी-विकास केंद्र-आरईडीसी (आर.ई.डी.सी.-ए.ओ.सी.) द्वारा आयोजित अनुसूचित जाति के मछुआरों/किसानों/युवाओं/महिलाओं के लिए प्रशिक्षण, जागरूकता और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों में भाग लिया, जो मैनेज और एन.एफ.डी.बी. द्वारा समर्थित 5 दिनों का कार्यक्रम है। यह पश्चिम बंगाल में जंगल महल क्षेत्र के युवाओं को उन्नत मछली कृषि और जलवायु अनुकूल मछली पकड़ने की तकनीक का प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु प्रशिक्षित करने के लिए आयोजित किया गया था ताकि सतत विकास और आजीविका के उत्पादन के लिए इष्टतम पानी का उपयोग किया जा सके।

उसके बाद, वे प्रेरित हुए और उसने मीठे पानी के झींगे के साथ-साथ आई.एम.सी. की अर्ध-गहन खेती को अपनाने की योजना बनाई। उन्होंने प्रशिक्षण से विभिन्न सर्वोत्तम जलकृषि प्रथाओं का ज्ञान प्राप्त किया, जिससे उन्हें सस्ती कीमत पर अच्छी गुणवत्ता वाली मछली का उत्पादन करने में मदद मिली। अब उसे मुनाफे का एक महत्वपूर्ण प्रतिशत मिल रहा है।





टिशू कल्चर तकनीक के माध्यम से एल्वारेज़ी सी मॉस का मास सीडलिंग उत्पादन



समुद्री शैवाल कप्पाफाइकस अल्वारेज़ी (एल्वारेज़ी सी मॉस) का उच्च व्यावसायिक मूल्य है, क्योंकि इसके जेलिंग, पायसीकरण और कम करने और स्थिर करने वाले प्रभाव की उत्कृष्ट गुणवत्ता है, जो कि भोजन, दवा, बायोमेडिकल और कॉस्मेटिक उद्योगों के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है। इस समुद्री शैवाल से उत्पादित प्रमुख मूल्य वर्धित उत्पाद कैरेजेनन है। इसे भारत में फिलीपींस से 1996-97 में लाया गया था और के. अल्वारेज़ी की व्यावसायिक खेती पिछले दो दशकों से सफलतापूर्वक की जा रही है। खेती जारी रखने के लिए बीज सामग्री की भारी मांग है। सीएसआईआर-सेंट्रल सॉल्ट एंड मरीन केमिकल्स रिसर्च इंस्टीट्यूट (सी.एस.आई.आर.-सी.एस.एम.सी.आर.आई.) बड़े पैमाने पर पौध उत्पादन के लिए टिशू कल्चर तकनीक विकसित करके इस अंतर को भरने के लिए आया था और एन.एफ.डी.बी. ने टिशू कल्चर तकनीक और टिशू की आपूर्ति के माध्यम से “कप्पाफाइकस अल्वारेज़ी के बड़े पैमाने पर पौध उत्पादन” के लिए तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले के किसानों के लिए पौध रोपण” हेतु उनकी परियोजना को वित्त पोषित किया।

परियोजना के तहत, भारत में पहली बार टिशू कल्चर तकनीक के माध्यम से कप्पाफाइकस अल्वारेज़ी के बीज उत्पादन का विकास किया गया और सी.एस.आई.आर.-सी.एस.एम.सी.आर.आई. के मंडपम केंद्र में एक टिशू कल्चर लैब स्थापित की गई। प्रोजेक्ट टीम द्वारा कप्पाफाइकस अल्वारेज़ी एलीट सीडलिंग उत्पादन तकनीक का एस.ओ.पी. तैयार किया गया था। उत्पादित टिशू कल्चर के पौधे रामनाथपुरम जिले के समुद्री खरपतवार किसानों को वितरित किए जाते हैं। तमिलनाडु के 3 जिलों (रामनाथपुरम, पुदुकोट्टई और तूतीकोरिन जिलों) में 230 किसानों को उत्पादित पौध की आपूर्ति की गई। किसानों ने 2 चक्रों में 30 टन कप्पाफाइकस अल्वारेज़ी का उत्पादन किया।

ऊतक संवर्धित रोपण मजबूत थे और परंपरागत समुद्री शैवाल की तुलना में चिराई नहीं की गई थी। उन्होंने 20-30% अधिक विकास दर दिखाई। टिशू कल्चर वाले पौधों से उत्पादित कैरगनीन ने उच्च उपज और उच्च गुणवत्ता प्रदर्शित की। यह परियोजना जनवरी, 2022 में सफलतापूर्वक पूरी हो गई है। विकसित पौध उत्पादन तकनीक हितधारकों द्वारा वाणिज्यिक पैमाने पर उत्पादन के लिए अत्यधिक उपयोगी होगी।

तकनीकी हस्तक्षेप	सी.एस.आई.आर. - सी.एस.एम.सी.आर.आई.
फंडिंग	एन.एफ.डी.बी.
गतिविधि	समुद्री शैवाल बीज उत्पादन और ऊतक संवर्धन प्रयोगशाला
कुल परियोजना लागत	₹ 96.40 लाख
जिला	रामनाथपुरम





मत्स्य सेतु: एक्काफार्मर्स के लिए डिजिटल इको-सिस्टम



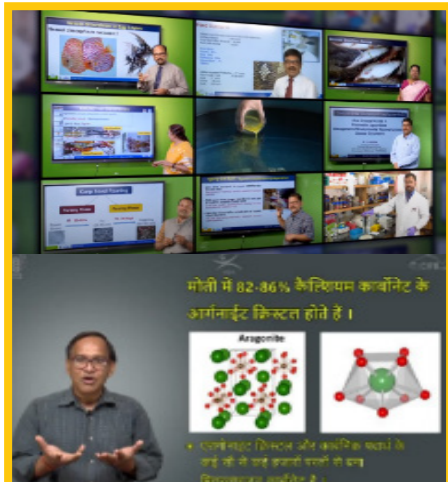
तकनीकी हस्तक्षेप	आईसीएआर-सी आई एफ ए
वित्तीय हस्तक्षेप	एन.एफ.डी.बी.
गतिविधि	डिजिटल प्लेटफॉर्म नेटवर्क की जननी
लॉन्चिंग का साल	2021

भारत में क्षमता निर्माण प्रौद्योगिकी के नेतृत्व वाली जलकृषि विकास के महत्वपूर्ण भागों में से एक है। हालांकि, कोविड-19 महामारी काल के दौरान, हमारे मत्स्य किसान अपने ज्ञान और कौशल को अद्यतन करने के लिए अनुसंधान संस्थानों में प्रत्यक्ष प्रशिक्षण में भाग नहीं ले सके। इस विशिष्ट समस्या को दूर करने के लिए, एन.एफ.डी.बी. के वित्त पोषण समर्थन के साथ, आई.सी.ए.आर.-सी.आई.एफ.ए. के वैज्ञानिकों ने मत्स्य सेतु डिजिटल प्लेटफॉर्म विकसित किया। ऐप को 06.07.21 को माननीय पूर्व केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री श्री गिरिराज सिंह द्वारा लॉन्च किया गया था।

मत्स्य सेतु ऐप में वर्चुअल लर्निंग कोर्स, एक्का बाजार नामक एक मार्केट प्लेटफॉर्म, मीनू नामक चैटबॉट और किसानों की मदद के लिए एन.एफ.डी.बी. की फिश मार्केट प्राइस इंफॉर्मेशन सिस्टम (एफ.एम.पी.आई.एस.) का एक गुलदस्ता है। ऐप में वीडियो के रूप में प्रजाति-वार / विषय-वार स्व-शिक्षण ऑनलाइन पाठ्यक्रम मॉड्यूल हैं, जहां प्रसिद्ध जलकृषि विशेषज्ञ व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण मछलियों के प्रजनन, बीज उत्पादन और विकसित होने वाली संस्कृति, बेहतर प्रबंधन प्रथाओं पर बुनियादी अवधारणाओं और व्यावहारिक प्रदर्शनों की व्याख्या करते हैं। मिट्टी और पानी की गुणवत्ता, जलकृषि में चारा और स्वास्थ्य प्रबंधन आदि को बनाए रखने के लिए अपनाये जाने वाली स्व-मूल्यांकन के लिए प्रश्नोत्तरी / परीक्षण विकल्प प्रदान किए गए हैं। प्रत्येक मॉड्यूल के सफल समापन पर, एक ई-प्रमाण पत्र स्वतः उत्पन्न किया जा सकता है। किसान ऐप के माध्यम से अपने प्रश्न पूछ सकते हैं और विशेषज्ञों से विशिष्ट सलाह प्राप्त कर सकते हैं। वीडियो मॉड्यूल अब अंग्रेजी और हिंदी में उपलब्ध हैं। क्षेत्रीय भाषा संस्करण तैयार किए जा रहे हैं।

ऐप में एक और शक्तिशाली विशेषता “एक्का बाजार” के माध्यम से, कोई भी पंजीकृत विक्रेता अपनी वस्तुओं को “मछली के बीज, इनपुट सामग्री, सेवाओं, नौकरियों और टेबल फिश” श्रेणियों के तहत सूचीबद्ध कर सकता है। यह सुविधा मत्स्य किसानों को उपज की उपलब्धता की तारीख और कीमत की पेशकश का संकेत देती है। सूचीबद्ध वस्तुओं को ऐप उपयोगकर्ता की भौगोलिक निकटता के अनुसार बाजार में प्रदर्शित किया जाएगा। जरूरतमंद हितधारक विक्रेताओं से संपर्क कर सकते हैं और अपनी खरीद को पूरा कर सकते हैं। ऐप में “मीनू” नाम का आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पावर्ड चैटबॉट भी है। चैटबॉट पूर्वनिर्धारित सूचना प्रवाह का उपयोग करके उपयोगकर्ताओं के प्रश्नों का उत्तर देता है, उपयोगकर्ता चैट सत्रों से सीखता है और भविष्य में इसके उत्तरों में सुधार करता है। मत्स्य सेतु ऐप की एक अन्य विशेषता, “एफ.एम.पी.आई.एस.” में पूर्व-निर्धारित समय पर बाजारों में अधिकांश समुद्री और मीठे पानी की मछलियों का थोक और खुदरा मूल्य है, जिसे किसानों और हितधारकों द्वारा स्वयं अपडेट किया जा सकता है।

ऐप निश्चित रूप से किसानों / मछली विक्रेताओं को मछली खरीदने वाले खरीदारों / खरीदार एजेंटों से अधिक व्यावसायिक पूछताछ प्राप्त करने में मदद करेगा, बाजार की स्थिति के बारे में जागरूकता बढ़ाने और किसानों की उपज की बेहतर कीमत वसूली का मार्ग प्रशस्त करेगा।





समुद्री केज कल्चर द्वारा मैरीकल्चर क्रांति



राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड (एन.एफ.डी.बी.), हैदराबाद ने तटीय मछुआरों की आर्थिक भलाई को बढ़ाने के लिए एक वैकल्पिक आजीविका कार्यक्रम के रूप में तटीय राज्यों के क्षेत्रीय जल के साथ खुले पानी के केज कल्चर 'मैरीकल्चर' को लागू करने का प्रस्ताव किया: इसका परिकल्पित उद्देश्य सहभागिता मोड के माध्यम से 100(6 मीटर व्यास) एच.डी.पी.ई. केजों में समुद्री केजों की कृषि तकनीक का प्रदर्शन करना था। 100 केज स्थापित करने के लिए परियोजना का कुल बजट परिव्यय ₹.515 लाख था। परियोजना को समुद्री केज की कृषि का प्रदर्शन करने के लिए आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई. की मदद से लागू किया गया था।

इस प्रदर्शन कार्यक्रम के तहत लाभार्थियों को एच.डी.पी.ई. केज प्राप्त हुए, जिसमें न्यूनतम 10 वर्ष का जीवनचक्र होगा, जिसके परिणामस्वरूप रखरखाव लागत कम होगी। लाभार्थियों को कोबिया, एशियन सी बास और स्पैनी लोबस्टर की उन्नत फिंगरलिंग के साथ कुल 60 केज (6 x 4 x 4 मीटर³) की आपूर्ति की गई थी। समुद्री केज की खेती का प्रदर्शन तीन वर्ष की अवधि में ये चरणों में पूरा किया गया था।

2 वर्षों की अवधि में कुल फसल की मात्रा 124.31 टन थी। कृषि की गई इन मछलियों की बिक्री से ₹ 400.73 लाख की आमदनी हुई। समुद्री केज कल्चर पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम ने पाक खाड़ी और मन्नार क्षेत्र की खाड़ी में लगभग 520 मछुआरों (यानी प्रत्यक्ष रूप से 60 परिवारों और अप्रत्यक्ष रूप से 200 परिवारों) की आजीविका में सुधार किया।

तकनीकी क्षेत्र	आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई.
वित्तीय हस्तक्षेप	एन.एफ.डी.बी.
राज्य	केरल, तमिलनाडु
मत्स्य पालन गतिविधि	समुद्री केज कृषि
प्रजातियां	एशियाई सी बास, और कोबिया
अवधि	2018-21





एन.एफ.डी.बी. ने समुद्री फिन फिश ब्रूड बैंकों की स्थापना के लिए आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई. के साथ हाथ मिलाया



तकनीकी हस्तक्षेप	आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई.
वित्तीय हस्तक्षेप	एन.एफ.डी.बी.
राज्य	केरल, तमिलनाडु
मत्स्य पालन गतिविधि	ब्रूड बैंक स्थापना
प्रजातियां	सिल्वर पोम्पानो और कोबिया
अवधि	2017-21

राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड (एन.एफ.डी.बी.) विज्ञान और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए कई प्रौद्योगिकी उन्नयन परियोजनाओं को वित्तीय रूप से सहायता प्रदान कर रहा है, जो कृषक समुदाय को गुणात्मक और मालात्मक समुद्री मत्स्य बीज उपलब्ध कराने के लिए मत्स्य पालन क्षेत्र में कमी का कारक है। ऐसी ही एक अभिनव पहल समुद्री ब्रूड बैंकों की स्थापना है। एन.एफ.डी.बी. ने सिल्वर पोम्पानो और कोबिया के उत्पादन को बढ़ाने के लिए ब्रूड बैंकों की स्थापना के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई. के साथ हाथ मिलाया है। आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई. के क्षेत्रीय केंद्र विज्ञानमयकेरल और आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई., मंडपम, तमिलनाडु के क्षेत्रीय केंद्र में क्रमशः ₹.5.64 करोड़ और ₹.3.24 करोड़ की परियोजना लागत वाली परियोजनाएं प्रस्तावित की गईं।

आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई., विज्ञान के क्षेत्रीय केंद्र और आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई., मंडपम के क्षेत्रीय केंद्र दोनों में ब्रूड रखने के लिए रीसर्कुलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम (आर.ए.एस.) की स्थापना की गई थी। वर्तमान में, आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई., विज्ञान के क्षेत्रीय केंद्र में आर.ए.एस. में 100 जोड़ी सिल्वर पोम्पानो (ट्रेकिनोटस ब्लोची) ब्रूड स्टॉक और 40 जोड़ी भारतीय पोम्पानो (ट्रेकिनोटस मूकाली) ब्रूड स्टॉक है। केंद्र ने प्रति वर्ष 0.7 से 1 मिलियन की बीज उत्पादन क्षमता के साथ प्रति वर्ष 50 मिलियन जर्डी-थैली लार्वा की उत्पादन क्षमता हासिल की है। यहां 80 मिलियन से अधिक जर्डी-थैली लार्वा का उत्पादन किया गया है, जिसका उपयोग बीज उत्पादन के लिए किया जाता है और किसानों, हैचरी और अनुसंधान संस्थानों को वितरित किया जाता है। इसके अलावा, दैनिक अंडे का उत्पादन 1 मिलियन से अधिक है। आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई. ने अंडे/जर्डी-थैली और उन्नत लार्वा आपूर्ति के लिए चार हैचरी इकाइयों के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। बीज की आपूर्ति 6 समुद्री राज्यों और केंद्र शासित प्रदेश लक्षद्वीप को की गई थी। अब तक इस केंद्र ने विभिन्न विभागों और संगठनों के अधिकारियों सहित 500 से अधिक लाभार्थियों को प्रशिक्षण दिया है। आई.सी.ए.आर.-सी.एम.एफ.आर.आई., मंडपम के क्षेत्रीय केंद्र में सुविधा ने लगभग 30.86 मिलियन जर्डी-थैली लार्वा और कोबिया और चांदी के पोम्पानो के 1 मिलियन उन्नत फिंगरलिंग का उत्पादन किया है। इन्हें केज और तालाबों में खेती के लिए देश भर में सप्लाई किया जाता था।





अंतःप्रजनन को रोकने के लिए मछली के शुक्राणु क्रायोप्रिजर्वेशन तकनीक



भारतीय कार्प एक्वाकल्चर में, मछली के इनब्रीडिंग के कारण होने वाला नुकसान बहुत बड़ा है और इसे बीमारियों से भी बढ़ा माना जाता है। इनब्रीडिंग बीज की गुणवत्ता को नुकसान पहुंचा रहा है क्योंकि ज्ञान और संसाधनों की कमी के कारण ब्रूडर के आनुवंशिक नियंत्रण का अभ्यास शायद ही कभी किया जाता है। यह कई पीढ़ियों से बीज उत्पादन के लिए एक ही स्टॉक के लगातार उपयोग के कारण है, जिसके परिणामस्वरूप समरूपता और कम आनुवंशिक फिटनेस होती है। किसी भी संवर्धन पद्धति के लिए उच्च गुणवत्ता वाला बीज एक बुनियादी आवश्यकता है। इस प्रकार, मछली के बीज की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए उचित ब्रूड पालन तकनीकों को लागू करना और नियमित अंतराल पर ब्रूड स्टॉक को फिर से भरना महत्वपूर्ण है। हालांकि, ब्रूडर्स को फिर से भरना एक कठिन प्रक्रिया है क्योंकि इसमें जानवरों को लंबी दूरी से ले जाने की आवश्यकता होती है, जिसके परिणामस्वरूप पर्याप्त मृत्यु और अधिक व्यय हो सकता है। एक अन्य विकल्प यह होगा कि क्रायोबैंक बनाने और गुणवत्ता बीज उत्पादन के लिए हैचरी में एक्सचेंजों को बढ़ावा देने के लिए असंबंधित स्वस्थ स्टॉक से क्रायोप्रिजर्व्ड स्पर्म को नियोजित किया जाए। इसे महसूस करने और ध्यान देने योग्य प्रभाव बनाने के लिए, आई.सी.ए.आर.-एन.बी.एफ.जी.आर. ने एन.एफ.डी.बी. के साथ सहयोग किया है ताकि शुक्राणु क्रायोप्रिजर्वेशन के क्षेत्र सत्यापन के लिए एक व्यावहारिक विधि विकसित करने हेतु फिश मिल्ट क्रायोप्रिजर्वेशन तकनीक विकसित की जा सके।

आई.सी.ए.आर.-एन.बी.एफ.जी.आर. द्वारा प्रशिक्षण और प्रदर्शन के माध्यम से, भारत के 20 राज्यों के 370 हैचरी पेशेवरों और किसानों को इस तकनीक से अवगत कराया गया। भारतीय मुख्य कार्प के जमे हुए शुक्राणुओं को 11 भारतीय राज्यों में 38 चुनी हुई राज्य सरकार की हैचरी, वाणिज्यिक हैचरी और उद्यमियों को वितरित किया गया था, और आउटब्रीडिंग सिद्ध हुई थी। इन प्रदर्शनों के दौरान करीब 1.26 करोड़ स्पॉन का उत्पादन हुआ। भविष्य की पीढ़ियों के लिए ब्रूड स्टॉक बनाने के लिए हैचरी व्यक्तिगत रूप से बीज का पालन कर रहे हैं। ये आउटब्रेड बीज हैचरी के इनब्रेड बीज से बेहतर प्रदर्शन करते हैं, जिसमें किसान 20-30% अतिरिक्त वृद्धि की रिपोर्ट करते हैं। 11 भारतीय राज्यों के 38 पार्टनर हैचरी की सहायता से फिश स्पर्म क्रायोप्रिजर्वेशन का फील्ड सत्यापन पूरा किया गया। ये हैचरी अब ब्रूड स्टॉक विकास और उत्कृष्ट गुणवत्ता वाले बीज उत्पादन के लिए अपने अनुप्रयोग का उपयोग करती हैं। उनमें से कई ने ब्रूडर बनाए हैं और जल्द ही किसानों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले बीज पैदा करना शुरू कर देंगे। यह क्षेत्र-मान्य दृष्टिकोण अब स्थिति के आधार पर राज्य मत्स्यपालन एजेंसियों, हैचरी के समूहों, या एक व्यक्तिगत हैचरी द्वारा अपनाने के लिए सुलभ है।

आई.सी.ए.आर.-एन.बी.एफ.जी.आर. ने इस संबंध में एक किसान-हितैषी किट विकसित की है ताकि कम तकनीकी समझ रखने वाला किसान भी इस रणनीति का अपने लाभ के लिए उपयोग कर सके। इन आनुवंशिक रूप से विविध ब्रूडरों से किसानों को लाभ होगा, जिन्हें बेहतर बीज उत्पादन के लिए नियोजित किया जाएगा। क्रायो-मिल्ट के साथ जल्दी और देर से प्रजनन भी अन्य संभावनाएं हैं। क्रायो-बैंक अंततः जंगली-प्रकार और उन्नत किस्मों के प्रसार का एक तंत्र बन जाएगा।

तकनीकी हस्तक्षेप	आई.सी.ए.आर.-एन.बी.एफ.जी.आर.
वित्तीय हस्तक्षेप	एन.एफ.डी.बी.
मात्स्यिकी गतिविधि	फिश मिल्ट का क्रायोप्रिजर्वेशन
प्रजाति	आई.एम.सी.

